UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180778

UNIVERSAL
LIBRARY

खिलौने की खोज

(नाटक)

वृन्दावनलाल वर्मा
(लेखक—झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कचनार, मुसाहिबजू,
प्रेम की भेंट, विराटा की पद्मिनी, अचल मेरा कोई,
लगन, गढ़ कुंडार, मृगनयनी आदि)

सर्वोदय साहित्य मन्दिर
हुसैनीअलम रोड, हैदराबाद (दक्षिण).

प्रथम संस्करण

मयूर-प्रकाशन
झांसी

मूल्य १)

प्रकाशकः—
सत्यदेव वर्मा बी. ए., एल-एल बी.,
यू०-प्रकाशन, झांसी।

प्रथमावृत्ति १९५८

अनुवाद इत्यादि के सम्पूर्ण अधिकार प्रकाशक के अधीन हैं।
चित्रपट-निर्माण के अधिकार लेखक के अधीन।

मूल्य १।) रुपया

मुद्रकः—
द्वारिकाप्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश'
स्वाधीन प्रेस, झांसी।

परिचय

'खिलौने की खोज' का वैज्ञानिक आधार कहां है, इस बात को पढ़ने और खेलने वाले पहिचान लेंगे। नाटक में उसका ब्योरा दिया गया है। नाटक का डाक्टर सलिल जानता था। मरने के लिये उसका उपयोग उसने किया और फिर जीने के लिये भी।

नाटक की घटनायें जीवन से ली गई हैं और गाने के लिये अधिकांश संख्या में प्रचलित लोकगीत रक्खे गये हैं।

डाक्टर सलिल और डाक्टर भवन के वास्तविक रूप अभी जीवित हैं। सलिल वाले रूप की तो यक्ष्माग्रस्त पसलियां तक काटे जाने की नौबत आ गई थी, परन्तु वह अपने मनोबल के कारण बच गया। यक्ष्मा चला गया, अब वह स्वस्थ और सशक्त है।

और भवन के वास्तविक आधार का गठिया नाम मात्र को भी नहीं है।

परन्तु ये उपचार प्रत्येक व्यक्ति के लिये लाभदायक होंगे यह नहीं कहा जा सकता।

फिर भी, जीवन में, मनोबल को जो स्थान मिलना चाहिये, क्या उतना मिल रहा है?

मेरी धारणा है कि मनोबल को सबल बनाने से हमारी अनेक वैयक्तिक और सामाजिक व्याधियां दूर हो सकती हैं। रहे गन्दगी को हटाने के लिये झाड़ू हाथ में कसकर सन्नद्ध।

देखें वह दिन कब आता है जब हमारे बालक और तरुण अपनी और अपने समाज की सेवा के लिये झाड़ू हाथ में लेकर कूड़ा-कर्कट हटाने पर पिल पड़ेंगे?

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

पुरुष—

डॉक्टर सलिल
डॉक्टर भवन
सेंतूचंद
केवल
पुत्तूलाल महते
चिमटानंद
रामटहल
सैनेटरी इन्सपेक्टर; गाँव के लोग इत्यादि

स्त्रियाँ—

सरूपा
नीरा
नंदिनी
देवकी
गाँव की कुछ स्त्रियाँ

खिलौने की खोज

पहला अंक

पहला दृश्य

[स्थान—तालगाँव। गाँव के एक ओर पहाड़ियाँ हैं, कुछ ऊँची कुछ नीची। पहाड़ो से तीन दिशाओ मे घिरी वितृस्त झील। एक पहाड़ी पर पुराना टूटा फूटा क़िला। गाँव एक पहाड़ी के छोर से लेकर झील के सिरे तक लम्बाई में बसा हुआ है। गाँव मझोला है। गलियाँ चौड़ी-सकरी बे तरतीब। मकान थोड़े से बड़े बड़े और अधिकतर छोटे छोटे और बे डौल। गाँव से थोड़ी दूर हटकर घना जङ्गल। गाँव से इस जङ्गल मे होकर दूरवर्ती बड़े नगरों को पक्का मार्ग गया है जिसके दोनों ओर बड़े बड़े पेड़ हैं। ऋतु गर्मी की है। समय हो जाने पर भी पानी नहीं बरसा है। अकाल की आशंका से किसान घबराकर देवी देवताओं की पूजा में अनुरक्त हैं। समय—

पुत्तूलाल—हुँ ! कितनी बरसें लग जायँगी इस सब में ? तब तक यह तालगांव तो क्या सारा देश उजाड़ हो जायगा—

देवकी—और जो माई को गुस्सा आगया और कोई बीमारी फैल उठी तो ? तो टहलुआ, तेरे सिर पर पहले बारह बज जायँगे ।

(स्त्रियां हँस पड़ती है । पुरुषों के चेहरों पर फीकी मुस्कराहट छा जाती है)

पुत्तूलाल—ठहरो । डाक्टर साहब से कह देना गाँव के सिरे पर ही थोड़ी देर ठहर कर गाया-बजाया जाता है । हम माई के मन्दिर में उनके निरोग होने का भी उपाय करेंगे ।

देवकी—किरानी रहन-सहन से रोग अच्छा नहीं हो सकता, टहलू ।

पुत्तूलाल—ठहरो । (*रामटहल से*) हम लोग जाते हैं । डाक्टर साहब से कह देना कि माई की महिमा देखनी हो तो एक घड़ी के लिये मन्दिर तक आजायँ ।

रामटहल—अरे राम ! महते, वो कमरे के बाहर तक डग नहीं मारते, तुम मन्दिर पर जाने की कह रहे हो !! कहते थे बाहर की हवा से बड़ा नुकसान हो जायगा । भगवान जानें क्या क्या सोचते और कहते रहते हैं ।

देवकी—वहीं कमरे के भीतर करवालो न एक दिन माई की बैठक ।

पुत्तूलाल—ठहरो भी, तुम्हारा मुँह ही बन्द नहीं होता !

(देवकी सहमती नहीं है । चेहरा बनाती है)

रामटहल—माई के मामले में कौन पड़े । उनको सिवाय सिगरिट के और किसी चीज़ का कोई चाव ही नहीं है । हैं बड़े अच्छे । तो मैं जाता हूं ।

पुत्तूलाल—हाँ, हम लोग भी गाते-बजाते हुये माई के मन्दिर को जाते हैं। तुम नहीं आओगे पूजा में ?

रामटहल—आऊँगा, काम निबटाकर आऊँगा। पूजा तो देर तक चलेगी ?

पुत्तूलाल—हाँ, आधीरात तक तो चलेगी ही। बैठक होगी।

देवकी—देवता आयँगे। (*स्त्रियों के पीछे हो जाती है। गायन और नृत्य करते हुये वे सब जाते हैं। रामटहल बनावटी भरी हुई दृष्टि से उनको देखता रहता है और फिर चला जाता है*)

दूसरा दृश्य

[स्थान—तालगांव के एक बड़े मकान का कमरा। वायु और प्रकाश की कमी के कारण कमरे में कुहासा छाया हुआ है। एक ओर मेज़ पर एक बड़ा आईना रखा हुआ है। मेज़ के पास दो कुर्सियां। मेज़ पीछे है, कुर्सियां आगे। मेज़ पर पीने का पानी, ग्लास, स्टाथस कोप, थर्मामीटर और सिगरटों का एक बड़ा डिब्बा रखा हुआ है। उसी के पास एक ओर चांदी का एक सुन्दर खिलौना। मेज़ को पीठ दिये हुये नन्दिनी बैठी हुई है। वह एक सुन्दर युवती है। पास ही पलंग पर तकियों के सहारे डॉक्टर सलिल पड़ा हुआ है। सलिल की आयु पैंतीस चालीस के लगभग है, परन्तु वह दुर्बल है। चेहरे पर पीलापन, आँखों में डरावनी सी चमक और गालों पर गड्ढरी रेखायें। उसके पलंग पर सिगरिट की कई डिब्बियां रखी हुई हैं। उनके बीच में दियासलाई की एक डिब्बी। वह सिगरिट पी रहा है जिसके धुयें से कमरा छाया हुआ सा है। समय—दिन]

सलिल—पानी दो नन्दिनी। (*खिलौने की ओर देखता है*)

(*नन्दिनी सिर की ऊँचाई के लगभग छाये हुये धुयें की टस से बचने के लिये साँस साधकर उठती है और ग्लास में पानी भरकर*

सलिल को देती है। सलिल का सिगरिट लगभग जल चुका है। वह उसको नीचे रखी हुई राख की रकाबी में डाल देता है और पानी पीकर फिर सिगरिट जलाता है। जल्दी जल्दी सिगरिट पीकर कमरे में धुयें को बढ़ाता है। नन्दिनी बैठ जाती है)

नन्दिनी—आपने अभी तक कुछ खाया नहीं है। थोड़े से फल ही ले लीजिये।

सलिल—*(धुयें के गुब्बारे छोड़ता हुआ)* फल खाने की इच्छा नहीं है।

नन्दिनी—थोड़े से बिस्कुट ही खा लीजिये, आप खायँगे नहीं तो क्या होगा?

सलिल—*(बिस्तरों में बैठ कर तिनके हुये स्वर में)* बिस्कुट! बिस्कुट!! क्यों खाऊँ बिस्कुट?

नन्दिनी—फलों का रस ही ले लीजिये।

सलिल—जिसमें मेरी ज़िन्दगी लम्बी हो जाय! तुम्हारी नौकरी की मियाद बढ़े और मेरी तकलीफ़!! थर्मामीटर लाओ, बुखार बढ़ गया है।

(नन्दिनी आत्मनियन्त्रण करके थर्मामीटर देती है। वह थर्मामीटर लगा लेता है)

नन्दिनी—यह सब बहुत विचित्र सा है। आपने दवा पीना बिलकुल छोड़ दिया है! स्वर्ण के इन्जेक्शन बन्द कर दिये हैं!! खाना-पीना नहीं के बराबर हो गया है!!!

सलिल—*(क्षीण मुस्कराहट के साथ)* सिगरिट का पीना तो बढ़ा दिया है। यह फेफड़े के कीड़ों को मार देगा। *(फीकी हँसी हँसकर)* या मुझको जल्दी खतम कर देगा जैसा कि मैं चाहता हूं। मैंने रोग के विरुद्ध भूख-हड़ताल कर दी है। समझी?

नन्दिनी—(*कुढ़कर*) रोग के विरुद्ध नहीं, अपने जीवन के विरुद्ध की है।

सलिल—(*क्षीण मुस्कराहट के साथ*) आज से मैंने तुम्हारा वेतन ड्योढ़ा कर दिया। लेकिन दवा का नाम न लेना मेरे सामने। समझ गईं देवी जी ?

नन्दिनी—(*अनमने पन के साथ*) धन्यवाद डाक्टर साहब। (*ज़रा तीव्र स्वर में*) परन्तु सोचिये तो, क्या कहेंगे लोग ? मेरी कितनी बदनामी न होगी…?

सलिल—(*थर्मामीटर निकालकर देखते हुये*) कि तुमने डाक्टर सलिल को मार डाला ! एक डिग्री बढ़ गया है। हुँ। आध घण्टे पहले कम था। लो। (*नन्दिनी थर्मामीटर लेकर मेज़पर रख देती है*) बुख़ार एकदम बढ़ जाय तो थोड़ा सा सोलूँ। (*सिगरिट फेंक कर, दूसरा जलाता है। सिगरिट फूंकते हुये*) मैं मरने के पहले तुमको सनद दे जाऊँगा जिसमें तुम्हारी दाईगीरी की बहुत प्रशंसा होगी (*सिगरिट को धुआँधार पीते हुये*) और उसमें यह भी लिखा होगा कि तुमने डाक्टर सलिल की हत्या नहीं की। (*खिलौने की ओर देखता है*)

नन्दिनी—डाक्टर साहब ! मैं हूं काहे के लिये यहाँ ?

सलिल—दाई ! नन्दिनी देवी !! मुझको क्षीण होते देखते रहने के लिये !!!

नन्दिनी—आप कम से कम चुप ही रहें थोड़ी देर।

सलिल—चुप रहने से रोग कष्ट देने लगता है। जितनी ज़्यादा मेरी बातें सुनने की योग्यता बढ़ाओगी उतना ही तुम्हारा वेतन बढ़ता चला जायगा, यानी जब तक मैं मरा नहीं हूं।

नन्दिनी—(*आत्मनियन्त्रण करते हुये भी*) उफ़ !

सलिल—स्टाथसकोप दो। फेंफड़े की और हृदय की जाँच करनी है।

(नन्दिनी स्टाथसकोप लाकर देती है। सलिल जांच करता है, परन्तु जांच करने के प्रयत्न मे सिगरिट नहीं पी पाता है)

नन्दिनी—मैं जाँच करदूँ ?

सलिल—नहीं, तब तक सिगरिट हाथ में लेलो।

नन्दिनी—*(मेज़ पर रखे हुये सिगरिट के बड़े डिब्बे को देखती हुई)* सिगरेट ! *(बहुत अनिच्छा से सलिल की ओर बढ़ती है। उसका चेहरा गिरा हुआ सा है)*

सलिल—अच्छा तुम्हीं देख दो, मैं तब तक सिगरेट पीता हूं।

नन्दिनी—और सिगरेट पीते रहेंगे तो जाँच में बाधा पड़ेगी।

सलिल—ज़रा ठहरो, इस सिगरेट को समाप्त कर लूँ। *(जल्दी जल्दी सिगरिट पीकर राख की रकाबी में डाल देता है)* अरे ! अब तो मैं स्वयं जाँच कर लूँगा !!

(हँसता है। नन्दिनी भयभीत होती है, फिर भय का दमन करके मुस्कराने का प्रयत्न करती है। सलिल स्टाथसकोप लेकर अपनी जांच करता है और जांच करते हुये नन्दिनी की ओर देखता रहता है। एकाध बार खिलौने को भी। उसकी मुस्कराहट चली जाती है। सलिल तिरछी आँखों उसकी मुस्कराहट का अर्थ समझने की कोशिश करता है. फिर पलंग पर फैली हुई सिगरिट की डिब्बियों की ओर देखने लगता है। नन्दिनी सिर नीचा कर लेती है)

सलिल—अभी सिगरेट ने फेफड़ों के कुछ ही अड्डों को साफ़ कर पाया है। स्टाथसकोप को ले लो और थर्मामीटर दो।

(नन्दिनी स्टाथसकोप को लेकर मेज़पर रख देती है। थर्मामीटर उठाती है। इस बीच में सलिल बिस्तरों पर फैली हुई डिबियों को

देखता है। वे सब ख़ाली होगईं हैं। वह उनको इकट्ठी करके फेंकना चाहता है, परन्तु फिर रख लेता है; थर्मामीटर लेकर लगाता है)

सलिल—डिब्बे में से एक डिब्बी सिगरेट की दो।

(नन्दिनी एक डिब्बी उसके पलंग पर रख देती है। वह एक सिगरिट निकाल कर जलाता है और उस डिब्बी को ख़ाली डिब्बियों में मिलाकर रख देता है)

नन्दिनी—मुझको डर लगता है कि सिगरेट पीते रहने के कारण कहीं आपको खून न आ जाय। इस गाँव में कोई डाक्टर भी नहीं है।

सलिल—मैं जान बूझकर ऐसे गाँव में आया हूं जहाँ मेरे सिवाय और कोई डाक्टर न हो। और लोग भी जो वायु परिवर्तन के लिये यहाँ आते सुने गये हैं *(सिगरिट के कई कश लेकर)* वे यहाँ डाक्टरों की तलाश में नहीं आते हैं। *(थर्मामीटर निकाल कर नन्दिनी को देता है)* तुम देखो, तब तक मैं सिगरेट की गति को बढ़ाता हूं। *(सिगरिट और भी तेज़ी के साथ पीता है)*

नन्दिनी—*(थर्मामीटर को देखते हुये और माप को कम बतलाते हुये)* पहले से कम है। *(थर्मामीटर को झटका देकर उतार देती है)*

सलिल—झूठ बोलती हो। मुझको भुलावे में डालकर मौत के दिन बढ़ाना चाहती हो !! मूर्ख हो !!!

नन्दिनी—आप इतने बड़े डाक्टर होकर न मालूम क्या क्या कहते और करते रहते हैं !

सलिल—*(उसी प्रकार धुआं उड़ाते हुये)* तुम्हारे दिमाग में वही बदनामी वाला डर चिपका हुआ है ! बस डाक्टर !! जैसे मैं तुमको एक सनद दूंगा वैसे ही तुम मुझको देना कि—डाक्टर सलिल दूसरों को मारने से डरता था, पर अपने को मारने से नहीं डरा, इसलिये जो डाक्टर उसको बुरा कहे वही वास्तव में बुरा। लाओ, मुझको थर्मामीटर दो, मैं खुद देखूंगा।

(नन्दिनी उसको थर्मामीटर देकर दूसरी ओर मुँह करके बैठ जाती है। सलिल थर्मामीटर लगाकर सिगरिट फूकता रहता है। नन्दिनी के आंसू आ जाते हैं। वह उनको पोंछ डालती है। सलिल देखता है, परन्तु उपेक्षा करता है। फिर थर्मामीटर को देखता है) हुँ—कहती थी कुछ कम होगया है ! झूठ बोलीं !! साधारण दाइयों की तरह बर्ताव किया !!!

(उसको खांसी आती है, पर सिगरिट पीता रहता है। नन्दिनी चौंक कर खड़ी हो जाती है। इधर उधर देखती है। धुआँ और भी बढ़ गया है। उसके पास आती है और थर्मामीटर को लेकर देखती है)

नन्दिनी—*(निश्वास के डूबे हुये स्वर में)* मुझसे गलती हो गई थी पढ़ने में।

सलिल—ओफ़ ! तुम किसी तरह मुझको मार दो !! कोई भी मार दे !!!

नन्दिनी—*(थर्मामीटर को मेज़ के पास ले जाते हुये)* कोई क्यों मार दे ? मैं हत्यारी नहीं हूं। *(मेज़ के पास पहुंचने के पहले सलिल की ओर उन्मुख होकर)* मेरी समझ में नहीं आता क्या करूँ ? आज तो आपका और दिनों की अपेक्षा कुछ विचित्र हाल है। हे भगवन् ! *(थर्मामीटर उसके हाथ से छूट पड़ता है और टूट जाता है। उसके मुँह से निकल पड़ता है—'हाय राम ! यह क्या हुआ !! एक क्षण के लिये सलिल की आँखें घूम जाती हैं, फिर वह खिलखिला कर हँस पड़ता है)*

सलिल—ओफ़ ! ओफ़ !! उदास मत होओ। मैं भले ही विचित्र होऊँ, परन्तु तुम कम विलक्षण नहीं हो। *(थर्मामीटर के टुकड़ों की ओर देखकर)* अभी अभी तुक की तरह सीधा था, अब हलवे की तरह बिखर गया ! *(हँसता है, नन्दिनी के चेहरे को देखकर खूब*

हँसकर) और तुम्हारी शकल का यह क्या हाल है—भाई वाह !!! (*उसको खाँसी आती है, नन्दिनी कुछ चिन्तित हो जाती है, खांसी बन्द होने पर सलिल गंभीर हो जाता है*) यह सब स्वाभाविक है। मैं जानता हूं। (*ज़रा रुककर*) दूसरा थर्मामीटर निकाल लाओ। (*नन्दिनी नीचा सिर किये हुये चिन्तामग्न है*) दुखी मत हो ओ नन्दिनी। लाओ, मैं फल खाऊँगा, बिस्कुट खाऊँगा। मान लिया मैंने तुम्हारा कहना, तुम मेरा मानो।

(*नन्दिनी की उदासी चली जाती है*)

नन्दिनी—न जाने यह ग़लती मुझ से कैसे हो गई।

(*सलिल मुँह वाले सिगरिट को राख की रकाबी में फेंक कर दूसरा जलाता है*)

सलिल—(*सिगरिट फूँकते हुये*) ग़लती की परवाह न करो। जाओ, खाना ले आओ।

(*नन्दिनी चली जाती है। सलिल बिस्तरों में से उठकर थोड़ा सा टहलता है। और सिगरिट पीता रहता है।, नन्दिनी एक थाली में फल और बिसकुट लाती है। सलिल सिगरिट को फेंक कर पलंग पर बैठ जाता है और सिगरिट की बिखरी हुई डिब्बियों के पास थाली को रखवा लेता है। वह सिगरिट की डिब्बियों को इकट्ठा कर लेता है। उनमें वह डिब्बी भी है जिसमें अभी कई सिगरिट भरे हुये हैं*)

नन्दिनी—हाथ धोइयेगा ?

सलिल—(*थाली की ओर हाथ बढ़ा कर नन्दिनी की ओर देखते हुये*) नहीं तो। सिगरेट के धुयें और तम्बाकू के सम्पर्क से उँगलियाँ पवित्र हो गई हैं। (*डिब्बियों की ओर एक दृष्टि डालकर फिर नन्दिनी की ओर देखते हुये*) तुम कहती थीं बहुत सिगरेट पी डाले। अभी तो थोड़ी सी ही डिबियाँ खाली हुई हैं !! (*मोहैं सिकोड़*

कर) खाली डिबियों को यहां से हटा दूँ। (*उसका हाथ डिब्बियों पर न जाकर थाली में रखे हुये भोजन पर जाता है जिसके अधिकांश को वह हाथ के एक झटके से नीचे बिखेर देता है। इस क्रिया को देखकर नन्दिनी भौंचक्की रह जाती है। सलिल थाली और डिबियों की ओर देखने लगता है*)

नन्दिनी—ऐं ! अरे !!

सलिल—ऐं ! अरे !!

(*सलिल की आंखें विचार में एक क्षण के लिये घूम जाती हैं और फिर वह हँस पड़ता है। नन्दिनी भयभीत हो जाती है*)

सलिल—(*डिबियों से उसको चुनकर जिसमें सिगरिट हैं*) इस डिबिया ने कहा, हमको मत फेंको, इसलिये बिचारी बिस्कुटें पलंग के नीचे चल दीं। कोई चिन्ता मत करो। असल में अभी मुझको भूख भी नहीं है (*नन्दिनी चुप रहती है। सलिल फिर सिगरिट जलाता है*)

नन्दिनी—फिर सिगरिट ! मैं दूसरी थाली लिये आती हूं।

सलिल—नहीं, अभी नहीं। और यह रामटहल क्या कर रहा है ?

नन्दिनी—सो रहा है, रात भर का जागा हुआ था। माई के भजनों में गया था।

सलिल—जब तक वह इन अजनों भजनों में रहेगा उसकी तनख्वाह नहीं बढ़ाई जावेगी और तुमको—(*कुछ ठहर ठहर कर सिगरिट फूंकते हुये*) तुमको मैं अपनी सारी सम्पत्ति की वसीयत कर जाऊँगा। संसार में मेरा और कोई है नहीं।

(*रामटहल हाथ में एक चिट्ठी लिये हुये आता है नन्दिनी प्रसन्न है*)

सलिल—नींद में से यह कौन सा कागज़ पकड़ लाये हो ?

रामटहल—(*प्रसन्न वदन नन्दिनी की ओर एक दृष्टि डालकर*) यह चिट्ठी डाकिया दे गया है।

(सलिल चिट्ठी को खोलकर पढ़ता है। सिगरिट पीता रहता है)

सलिल—नन्दिनी, यहाँ एक डाक्टर और आ रहा है। बरसों से नहीं मिला। मेरा पुराना मित्र है।

नन्दिनी—*(प्रसन्न होकर)* अब आपको कुछ चैन मिलेगा। उनके साथ बातचीत में मन बहलेगा। कहाँ से आ रहे हैं? क्या नाम है उनका?

सलिल—कहाँ से आरहे हैं सो इस चिट्ठी में पढ़लो। क्यों आरहे हैं यह भी इसी चिट्ठी में मिल जायगा। नाम डाक्टर भवन है। गठिये के बीमार हैं। यह सुनकर कि तालगांव का जलवायु रूखा है, स्वस्थ होने के लिये आरहे हैं। स्वस्थ! हूं!! अवश्य!!! तालगांव में डाक्टर मरने के लिये आते हैं न कि स्वस्थ होने को। साथ में उनकी लड़की भी आरही है। मकान तलाश करने के लिये मुझको लिखा है जैसे मैं इस कमरे के बाहर कभी क़दम भी रखता होऊं।

(चिट्ठी को नन्दिनी के हाथ में दे देता है। वह उसको पढ़ती है)

रामटहल—*(बिस्कुटों और फूलों को नीचे बिखरा हुआ देखकर)* मैं सो नहीं रहा था, डाक्टर साहब। मेरे लिये कुछ काम?

सलिल—माई के भजनों में गये थे?

रामटहल—सभी गये थे, मैं भी गया था। सेठजी गये थे, उनके घर से गई थीं, उनका लड़का केवल भी गया था।

सलिल—अजी मैं सारा सूचीपत्र नहीं सुनना चाहता हूं। सबका सब गांव कुछ दूर जाकर हल्ला-गुल्ला करते करते अधमरा होजाया करे तो बहुत ही अच्छा हो। किसी के सिर कोई देवता भी आया था? क्या कहता था?

रामटहल—सयाने के सिर आया था, डाक्टर साहब। कहता था कि पानी नहीं बरसेगा और कोई न कोई बीमारी आयगी।

सलिल—(*सिगरिट पीना भूलकर*) सच ? तो वह ज़रूर चतुर है। पानी नहीं बरसेगा, गरमी भभक उठेगी। लोग डर उठेंगे। बीमारी तो बढ़ेगी ही। एक डाक्टर और आ रहे हैं। कोई मकान खाली है ?

रामटहल—गाँव में तो कोई ऐसा मकान नहीं है। सेठजी के दूसरे मकानों में भी लोग रहते हैं। उनसे पुछवा लीजिये।

सलिल—मेरे पास भेज दो। (*रामटहल जाने लगता है फिर बिखरे हुये भोजन को देखकर ठिठकता है*)

सलिल—यह सब उठा ले जाओ और इन खाली डिबियों को मेज़ पर रखदो। शाम को गिनूँगा कि आज कितनी डिबियों के सिगरिटों को बैकुण्ठ धाम भेजा।

(*रामटहल दबकर मुस्कराता हुआ फल इत्यादि बीन लेता है और खाली डिबियों को पलंग पर से उठाकर मेज़ पर इस ढङ्ग से रख देता है कि चांदी का खिलौना उन डिबियों के पीछे छिप जाता है। रामटहल चला जाता है*)

नन्दिनी—डाक्टर सब तो बहुत बीमार मालूम होते हैं।

सलिल—वह तालगांव के रूखे जलवायु के लिये नहीं आरहे हैं; वह मेरा इलाज पाने के उद्देश्य से आरहे होंगे। मैं सेना में नौकर होने के पहले गठिया अच्छा करने में नाम कमा चुका था। वही नाम अब मुझे आराम के साथ मरने में बाधा डालेगा। पर वह जानते नहीं हैं कि जो सिगरिट के धुयें से अपना इलाज करने में डटा हुआ है वह दूसरों का इलाज कर पाने का अवकाश ही नहीं रखता।

(*रामटहल का स्वर नेपथ्य से 'सेठ जी आ रहे हैं।' नन्दिनी थोड़ा सा जाकर सेंतूचन्द को लिवा लाती है। वह, और सलिल परस्पर अभिवादन करते हैं। सेंतूचन्द लगभग चालीस साल की*

आयु का साधारण देह वाला मनुष्य है। आंखों में संकोच मिश्रित काइयाँपन है। चहरे की रेखाओं से प्रकट है कि उसका जीवन, बहुत सम्पत्ति गांठ में होते हुये भी, सुख के साथ नहीं बीत रहा है। उसके पीछे पीछे केवल-उसका पुत्र—आता है केवल लगभग सत्रह वर्ष का युवक है। शरीर छरेरा, आंखें चंचल, आकृति साधारण, देह सुडौल। यह आते ही इधर उधर प्रश्न चालता है। उसकी आंख बारबार मेज़ पर रखे हुये सामान पर जाती है। सेंतूचन्द को दूसरी कुर्सी पर बिठला लिया जाता है। केवल सामान को एक तरफ़ ज़रा सा हटा कर मेज़ पर बैठ जाता है उसकी दृष्टि चांदी के खिलौने पर जाती है नन्दिनी कुर्सी पर बैठ जाती है)

सलिल—(*सिगरिट पीते हुये*) सेठजी, मेरे एक मित्र डाक्टर भवन, यहाँ रहने के लिये आरहे हैं। कोई मकान खाली है?

सेंतूचन्द—मकान तो डाक्टर साहब, इस समय कोई खाली नहीं है, परन्तु जब वह भी डाक्टर हैं और आपके मित्र हैं तो खाली कराना ही पड़ेगा। एक मकान तो ऐसा है जिसको मेरे किरायेदार मेरी मर्ज़ी पर खाली कर देंगे, दूसरा ऐसा है जिसको किरायेदार मेरे कहने सुनने से, आपस में सलाह करके, छोड़ देंगे। पर, किराये की दर बहुत बढ़ गई है।

सलिल—एक मकान आपकी मर्ज़ी से खाली होगा और दूसरा आपके कहने सुनने से किरायेदार आपस में खींचातानी करके खाली कर देंगे! ठीक जैसा राजनीतिक क्षेत्र में होता रहता है!! किराया जितना आप उचित समझेंगे दिया जायगा। मेरे मित्र यहाँ जल्दी ही आरहे है।

(*केवल खिलौने को टटोलता है*)

सेंतूचन्द—(*राजनीति वाले संदर्भ पर प्रसन्न न होते हुये भी मुस्कराकर*) किराया उचित ही रहेगा। यह लड़का (*केवल चौकन्ना*

होकर उन लोगों की ओर देखता है) आजकल यहा पर है, क्योंकि छुट्टियों के कारण अभी इसका स्कूल नहीं खुल रहा है। उनके पास जाकर कुछ पढ़ लिया करेगा।

सलिल—एक पन्थ दो काज—बिलकुल ठीक है, सेठजी! मेरे पास न तो समय है और न पढ़ाने की इच्छा। मेरे मित्र के पास शायद दोनों हों।

(नेपथ्य में बाज़ों की भड़ भड़ और गाने का शोर होता है। सलिल भड़भड़ा सा पड़ता है। केवल खिलौने को हाथ में लेकर देखता है। उसको अच्छा लगता है। वह उसको मेज़ पर ही रख देता है, फिर सिगरिट की ख़ाली डिबियो को उठाने-धरने लगता है)

सेंतूचन्द—*(उसकी क्रिया को देखकर)* इससे सीधे बैठा ही नहीं जाता। *(लड़का हाथ खींच लेता है)*

सलिल—मैं उन डिबियों को गिनलूँ फिर ले जाना। *(आंख से गिन लेता है। शोर और भी बढ़ता है)* सेठजी, कैसी बुरी जगह आपने मकान बनाये हैं! संसार भर का हल्ला-गुल्ला मानो इसी ठौर पर आकर पूरी कसरत करता है। रामटहल!

(नेपथ्य से—'जी' कहकर रामटहल आता है)

सलिल—इस शोर को बन्द करो। कान फूटे जारहे हैं।

सेंतूचन्द—*(आश्चर्य के साथ निषेधात्मक स्वर में)* अजी डाक्टर साहब, आप यह क्या करते हैं? बीमारी के डर के मारे लोग काली माई की पूजा के लिये जा रहे हैं। यहीं होकर तो उनका मार्ग है।

सलिल—*(सिगरिट को फेककर और दूसरा न जलाकर)* कल अकाल के डर के मारे पूजा का हल्ला गुल्ला किया था! आज बीमारी के डर के मारे!! *(कुछ सुलायम पड़कर)* सयाने से क्यों नहीं पूछते कि ये वोट माँगने वाले राजनीतिक महत्वाकांक्षी किस बिल में समा गये हैं? क्यों नहीं कुछ करते?

सेंतूचन्द—वोट ले लेने के बाद फिर सिवाय बीमार राजनीतिकों के यहाँ और कोई नहीं आता।

सलिल—यहाँ आकर इनमें से कोई मरता भी है या नहीं? जैसे मैं यहाँ मरने के लिये आया हूँ। (*धीमे स्वर में*) परन्तु मैं राजनीतिक जो नहीं हूँ।

(केवल सिगरिट की डिबियों को इकट्ठा करता है। इकट्ठा करते करते सलिल इत्यादि की ओर देखता रहता है। डिबियों के साथ खिलौने को भी उसका हाथ उठा लेता है)

सेंतूचन्द—मैं जाकर इस भीड़ को रुकावट के साथ टाले लिये जाता हूँ। (*उठते उठते*) डाक्टर साहब, केवल की मां का इलाज कराना है। उसको सुस्ती, ज्वरांश, बेहद चिड़चिड़ापन और लगातार सिर में दर्द रहता है। कभी कभी कुछ पागल सी भी हो जाती है।

सलिल—डाक्टर भवन को दिखलाना। मेरे बस का कोई इलाज नहीं।

(सेंतूचन्द चला जाता है। साथ में उसका लड़का भी जो डिबियों को खिलौने समेत ले जाता है नेपथ्य का शोर बन्द हो जाता है)

सलिल—(*मेज़ की ओर दृष्टि डालकर*) अरे! मैंने डिबियों को ठीक तौर पर नहीं गिन पाया! देखो, देखो, कितनी हैं? (*मेज़ पर खिलौने को न देखकर*) नन्दिनी देखना, वहां खिलौना है या नहीं?

(नन्दिनी को एक क्षण में ही मालूम हो जाता है कि खिलौना मेज़ पर नहीं है। वह उसको मेज़ के आस पास सिगरिटों के बड़े डिब्बे में और इधर उधर भी देखती है, परन्तु वहां खिलौना नहीं है। मेज़ के नीचे रखे हुये चमड़े के बक्स को भी थथोल लेती है)

नन्दिनी—खिलौना तो यहां नहीं है। (*सेठ के घराने के प्रति उदारता की प्रेरणा से*) मालूम नहीं कौन कब उठा ले गया उसको

सलिल—हूं ! कौन कब उठा ले गया ! केवल उठा ले गया और अभी अभी उठा ले गया !! छीनलो उससे !!! सिगरिट की डिबियां भी झपटलो उससे !!!!

(नन्दिनी टमटमा जाती है। फिर जाने को होती है)

नन्दिनी—मैं देखती हूं।

सलिल—नन्दिनी, यह खिलौना भी तुमको वसीयत में मिलना था। (*सोचकर*) शायद न भी देता क्योंकि किसी सड़ी पुरानी स्मृति का चिन्ह था। मरने के पहले शायद कहीं फेंक देता। खैर, सोच लेना जैसे कहीं डिबियों को फेंक देता वैसे ही खिलौने को भी फेंक दिया। (*फिर सोचकर*) मैंने बड़ी देर से सिगरिट नहीं पिया। थर्मामीटर लाओ। अब उस लड़के के पीछे मत पड़ो।

(नन्दिनी मेज़ के नीचे रखे हुये चमड़े के बन्द बक्स में से थर्मामीटर निकाल कर सलिल को देती है। वह उसको लगा लेता है। सिगरिट नहीं पीता)

सलिल—भीतर भीतर जान पड़ता है जैसे ज्वर कुछ कम होगया हो। थोड़ी भूख भी लग रही है।

नन्दिनी—मैं अभी लाती हूं। फलों का रस लाऊँ ?

सलिल—ज़रा ठहरो। मैं सोच रहा हूं वह छोकरा केवल, लखपती का लड़का होने पर भी, स्कूल में शिक्षा पाते हुये भी, उस खिलौने को क्यों उठा ले गया ? सिगरिट की डिबियाँ नहीं गिन पाई। खैर, गिनती यों भी हो जायगी। (*नेपथ्य की ओर*) रामटहल !

(नेपथ्य से—'आया'। रामटहल आजाता है)

रामटहल—क्या आज्ञा है डाक्टर साहब ?

सलिल—वह भीड़ माई के मन्दिर की ओर चली गई ?

रामटहल—जी हाँ।

सलिल—आज भी देवता की बैठक होगी ?

रामटहल—कह नहीं सकता, शायद हो।

सलिल—तुम आज भी जाना। (*रामटहल सिकुड़ता है*) मेरे कहने से जाओ। (*रामटहल दबे हुये हर्ष से हां का सिर हिलाता है*) वहाँ देवता से पूछना, डाक्टर सलिल कब तक मर जायगा ? (*नन्दिनी और रामटहल के चेहरे गिर जाते हैं*) अजी अभी से मातम मत मनाओ ! देवता से पूछना इस मेज़ पर से मेरा चांदी का खिलौना कौन उठा ले गया और क्यों ? (*रामटहल चकित होता है*)

(*सलिल थर्मामीटर को देखता है। उसका ज्वर कम होगया है। उसको थोड़ा सा आश्चर्य होता है। नन्दिनी उस आश्चर्य को लक्ष्य कर लेती है*)

नन्दिनी—कुछ कम है न डाक्टर साहब ?

सलिल—कम तो अवश्य है। कुछ खाऊँगा, सिगरिट उसके बाद पिऊँगा। (*कुछ सोचकर*) परन्तु यह सिगरिट न पीने का प्रभाव नहीं है। बातों का होगा। हूँ। है कुछ नहीं। ले आओ खाना। तब तक स्टाथस्कोप लगाकर जाँच करूँ।

(*नन्दिनी उसको स्टाथस्कोप देती है। वह उसको लगाकर जांच करने लगता है। नन्दिनी चली जाती है*)

रामटहल—हाथ धो लीजिये। बार बार अपनी जाँच मत कीजिये।

सलिल—(*अनसुनी करके*) बैठक में देवता से कुछ और भी पूछना। पूछना राजनीतिक नेताओं की स्मरण शक्ति और उदारता बढ़ाने का कोई उपाय है या नहीं ? यदि है तो क्या है ? और भी जो कुछ मन में आवे पूछना। (*रामटहल मुस्कराकर हां का सिर हिलाता है। सलिल अपनी जांच करते करते*) यह सेठ सेंतूचन्द यहां के बहुत पुराने रहने वाले होंगे ?

रामटहल—नहीं डाक्टर साहब, अभी बीस बाईस साल से यहां आये हैं। लैन देन किया। गरीबों के मकान मोल लिये और यह इतनी बड़ी जायदाद खड़ी करली।

सलिल—बड़ी जायदादें ऐसे ही बनती हैं रामटहल। अच्छा रामटहल वह जो डाक्टर यहां आ रहे हैं तुम उनकी भी नौकरी करना। दोनों स्थानों पर काम कर सकते हो।

(रामटहल प्रसन्न है)

तीसरा दृश्य

[स्थान—तालगाँव से बाहर झील के किनारे, एक सिरे पर देवी का मन्दिर। गाँव के स्त्री पुरुष गाते बजाते और 'दण्ड' भरते हुये देवी के मन्दिर पर आते हैं। मन्दिर पर आकर गाना बजाना बन्द कर देते हैं। कोई बैठ जाते हैं, कोई खड़े रहते हैं। इन लोगों में सेंतूचन्द उसका लड़का केवल, सेंतूचन्द की पत्नी सरूपा और देवकी भी हैं। सरूपा किसी समय रूपवती थी। इस समय उसकी आयु पैंतीस छत्तीस के लगभग है। चेहरे पर सौन्दर्य का कोई अवशेष नहीं है। इन सबके आजाने पर रामटहल भी आजाता है। समय—सन्ध्या के पूर्व]

देवकी—पास पड़ोस के गाँवों में बीमारी आ गई है, अब न जाने हमारे गाँव में क्या होने वाला है।

पुत्तूलाल—बलिदान करो। माई का रथ निकाल कर अपने गाँव की हद के बाहर किसी दूसरे गाँव की हद में छोड़ दो, माई कल्याण करेंगी।

एक दूसरे गांव वाला—*(जो अकस्मात तालगांव में आया हुआ है)* हमारे गाँव की हद में न छोड़ना नहीं तो लाठी चल जायगी।

पुत्तूलाल—तुम कौन हो जी?

देवकी—मेरा नातेदार है। आज सवेरे ही आया है। इसके गाँव की हद में माई का रथ न छोड़ना। किसी दूसरे गाँव की हद में सही।

(पुत्तूलाल आँखें तरेर कर रह जाता है)

केवल—अपने गाँव की हद में न छोड़ दो, माई तो है रक्षा करने के लिये।

पुत्तूलाल—सेठ जी, लड़के को रोक लो। यह पूजा करने आये हैं या ठठोली करने ?

(केवल सहम जाता है)

केवल—मैंने ठठोली के लिये नहीं कहा।

सेंतूचन्द—ठठोली के लिये नहीं कहा महते।

देवकी—हमारी ज़िमीन ले ली, अब हमारा धर्म लेना चाहते हैं सेठ !

सेंतूचन्द—अरी चाची ! (*चाची के सम्बोधन पर देवकी की आकृति प्रचण्ड हो जाती है*) ज़िमीन सेंत नहीं ली, मैंने खरे रुपये दिये हैं।

देवकी—मुझसे चाची न कहा करो, मैं तुम से अधिक उमर की नहीं हूं।

सेंतूचन्द का एक पिट्ठू—(*देवकी से*) तुम बड़ी भोली हो कहीं की। तुमने नहीं दाब ली बलुआ की जगह ! कुयें में गिरकर आत्म घात का उसको डर दिखलाया और छाती पर सवार हो गईं !!

देवकी—मैंने उसकी पीठ या पेट तो नहीं मारा ?

वही—आत्मघात की धमकी दूसरों को मार डालने से किस बात में कम होती है ?

पुत्तूलाल—जाने भी दो। पूजा का आरम्भ करो।

एक गांव वाला—माई के मन्दिर पर हो सब लोग; सच सच बोलो।

दूसरा गांव वाला—कोई भी सच बोलता है ? माई क्या जानती नहीं ? सेठ ने मुफ्त में नहीं ली किसी की ज़िमीन। खरे रुपये दिये। *(सेंतूचन्द सन्तोष का सिर हिलता है)* और, चोखे ब्याज समेत असल में ज़िमीन ले ली। *(सेंतूचन्द दूसरी ओर मुँह फेर लेता है)*

देवकी—यह आया बड़ा वकील सेठ का ! है नहीं रे कोई जो देवे इसके मुँह पर चटाचट ?

वही—आओ, कौन आता है ? खोपड़ा खोल दूँगा, लाशें बिछा दूँगा।

सेंतूचन्द—जाने भी दो, भाइयो। लड़ो मत। मैं माई का बड़ा और पक्का मन्दिर बनवा ऊँगा। भजन पूजन होने दो।

एक गांव वाला—आज मुझको भी माई से कुछ विनती करनी है। हुल्ला ने मेरे छोटे भाई को मारा था। माई करें—पहले महामारी उसको खा जाय।

एक दूसरा गांव वाला—है कैसा रे ! यहाँ झगड़ा करने आया है ?

सेंतूचन्द—इसीलिये तो पानी नहीं बरसता है।

केवल—पर महामारी तो पानी के अकाल के कारण नहीं पड़ती।

सरूपा—*(आधा घूंघट डाले स्त्रियों में से आगे आकर, केवल को ज़ोर का झटका देती हुई)* चल इधर ! कोढ़ी कहीं का !!

केवल—*(सरूपा के साथ घिसटता हुआ)* मैं कोढ़ी नहीं हूं। जो मुझको कोढ़ी कहे वह—वह—कोढ़ी !

(सरूपा उसको पीछे घसीट ले जाती है)

प्रारम्भिक पाठशाला का एक शिक्षक—ये लड़के नगरों के स्कूलों में यही सब बेहूदापन तो सीखते हैं।

केवल—(*भीड़ के पीछे से, मां की लपेट में जकड़ा हुआ*) तुम क्या सिखाते हो ? स्वयं भी कुछ सीखे हो ?

शिक्षक—(*दबे हुये स्वर में*) सीखना हमारा काम नहीं है। हमारा काम सिखलाना है।

पुत्तूलाल—अब पूजा होने दो।

एक गांव वाला—हां हां, होने दो। ये रगड़े-झगड़े तो हरएक गांव में लगे हैं।

(*पुत्तूलाल पूजा का आरम्भ करता है। बाजे बजते रहते हैं। पुत्तूलाल के सिर देवता आता है। बाजे बन्द हो जाते हैं। गाँव वाले भयभीत हो जाते हैं। पुत्तूलाल हुंकारें भरता है और हिलता है*)

एक गांव वाला—महाराज, मेरी विनती लग जाय।

पुत्तूलाल—(*हुंकार भरते हुये और हिलते हुये*) पू···छो।

वही गांव वाला—कलुआ से मेरी भैंस की बाबत झगड़ा हुआ। कहता था उसकी ईख चर आई थी। मैं पूछता हूं उसने ईख की खेती की ही क्यों जब गांव में कोई और नहीं करता ? अच्छा तो—उस लड़ाई के बाद ही मेरी भैंस मर गई। किसने मारी ?

एक और गांव वाला—मेरी बकरी का भी यही हाल हुआ। मेरी बकरी को किसने मारा ? मुझको बतलाया जाय, नहीं तो जिसपर मुझको सन्देह है उसकी बकरी को मैं मार डालूँगा।

पुत्तूलाल—(*उसी प्रकार*) एक···एक···करके। तुम दोनों अलग अलग बैठक बुलाओ तब उत्तर मिलेगा।

(*उन दोनों ग्रामीणों के मन में घृणा उत्पन्न होती है, परन्तु वे उसको दबा लेते हैं। उनके चेहरों पर क्षोभ उमड़ आता है।*)

दोनों एक साथ—देखा जायगा !!!

देवकी—(*मिमियाते हुये विनीत स्वर में*) महाराज, हमारे गांव में महामारी तो नहीं आयगी ?

पुत्तूलाल—(*उसी प्रकार*) आयगी भी और नहीं भी आयगी। गांव में डाक्टर के आजाने से महामारी का आना हो सकता है। एक और डाक्टर गांव में आगया है इसलिये माई को बहुत कोप हो आया है। (*पुत्तूलाल जानता है कि वे दोनों डाक्टर काफ़ी बीमार हैं*)

रामटहल—(*डरता हुआ आगे आकर*) वे दोनों बिचारे कब तक अच्छे हो जायँगे ?

पुत्तूलाल— (*उसी प्रकार*) वे जीवित रहे तो महामारी आयगी, मर गये तो नहीं आयगी। (*रामटहल ज़रा पीछे हट जाता है जैसे धक्का खागया हो*)

देवकी—उस डाक्टर ने माई का जलूस और गाना-बजाना रुकवाया था।

सरूपा—(*भीड़ के पीछे से*) मर जायँ तो जायँ, गाँव में बीमारी तो न आवे।

सेंतूचन्द—(*किराया बन्द हो जाने की आशङ्का से, सहसा*) मेरा किराया चाहे न मिले, पर वे बिचारे बचे रहें और गाँव में महामारी भी न आवे।

पुत्तूलाल—इधर आओ सेठानी तुम। भभूत ले जाओ।

(*सरूपा केवल को पीछे ही छोड़ कर पुत्तूलाल के निकट आती है और भभूत के लिये हाथ पसारती है*)

पुत्तूलाल—(*सरूपा को भस्म देता हुआ*) सन्तान बढ़े तुम्हारी।

(*सरूपा का हाथ स्वतः पीछे हट जाता है ! पुत्तूलाल के हाथ की भस्म नीचे गिर जाती है। सरूपा उठकर पीछे चली जाती है*)

सेंतूचन्द—महाराज, इनका दिमाग कुछ खराब है। कैसे ठीक होगा ?

पुत्तूलाल—(*उसी प्रकार*) डाक्टरों के मर जाने पर और पूजा चढ़ाने से। बैठक कराओ।

केवल—(*भीड़ के पीछे से*) और पुत्तूलाल का पेट भरते रहो।

(*सरूपा जकड़ कर उसका मुँह बन्द कर लेती है। वह बोलने का प्रयत्न करता है, पर नहीं बोल पाता है। सरूपा कहती रहती है—कोढ़ी कहीं का ! कोढ़ी कहीं का !!*)

रामटहल—महाराज, एक विनती और है। डाक्टर साहब का एक चाँदी का खिलौना चोरी चला गया है। उसका पता लग सकता है ? किसने चुराया होगा ?

सरूपा—(*केवल के मुँह की जकड़ को शिथिल करती हुई यकायक*) खिलौना ! चाँदी का खिलौना !!

रामटहल—(*केवल की ओर देखते हुये*) हां, चाँदी का खिलौना, किसी देवी की मूर्ति।

सरूपा—(*अचेत सी होती हुई*) चाँदी का खिलौना ! देवी की मूर्ति !! हे राम !!! (*वह अचेत हो जाती है*)

रामटहल—(*आत्म-विश्वास के साथ*) डाक्टर साहब का एक व्यक्ति के ऊपर सन्देह है। पर उन्होंने नाम लेने से मना कर दिया है।

पुत्तूलाल—क्या उन्होंने पुछवाया है ?

रामटहल—हां। और भी कई सवाल पूछने को कहा था—जैसे नेता लोग वोट लेने के समय क्यों इतना हल्ला करते हैं और वोट मिल जाने पर फिर क्यों चुप्पी साध जाते हैं ? वगैरह, वगैरह। (*केवल कुछ सोचने लगता है*)

देवकी—अपने घर पर बैठक करावें डाक्टर साहब। यहां तो गांव वालों की बैठक हो रही है।

पुत्तूलाल—किसी बड़े आदमी ने की है यह चोरी।

(सेंतूचन्द अनिच्छावश सा सरूपा के पास जाकर उसकी देख भाल करने लगता है)

केवल—घर ले चलिये इनको। शीघ्र चलिये, मुझको बुखार सा चढ़ रहा है।

देवकी—पहले ही कहा था कि यह माई का मन्दिर है। माई हम लोगों की रखवाली करें।

एक **गांव वाला**—यह बुखार ऐसे ही तो यकायक आता है।

केवल—*(बैठे हुये भयकंपित स्वर में)* क्यों बकते हो? मेरी तबियत तो कई दिन से खराब है।

देवकी—गांव वालों को माई बचावें।

(जिन दो गाँव वालों ने भैंस और बकरी के मामले में क्षोभ और अश्रद्धा के साथ 'देखा जायगा' कहा था, वे थर्रा उठते हैं)

पुत्तूलाल—*(उनको देखकर)* देवता के घर निरादर का बर्ताव करने का बुरा फल होता है! हुँ, हुँ, हुँ, हूँ—

वे दोनों—क्षमा करो, बचाओ महाराज हमको! *(वे दोनों बहुत अधीर हो जाते हैं)*

उनमें से एक—मुझको ठण्ड लग रही है!

उनमें से दूसरा—मुझको भी मुझको जर मालूम पड़ता है!!!

(सेंतूचन्द सरूपा को अपने रूमाल से हवा करता है। उसको चेत आजाता है। वह पुत्तूलाल को प्रणाम करती है। सेंतूचन्द मन्दिर की ओर सिर नवाता हुआ सरूपा को लेकर केवल के साथ

जाता है। केवल को वह घसीटता हुआ सा ले जाता है, क्यों कि केवल पुत्तूलाल से कुछ कहना चाहता है, कह नहीं पाता और नमस्कार न करके रोष में भरा चला जाता है)

पुत्तूलाल—(*उसी प्रकार*) और किसी को कुछ पूछना है? देवता की सवारी अब चली जाना चाहती है। हुँ, हुँ, हुँ, हूं—

रामटहल—(*पुत्तूलाल के निकट जाकर धीरे से*) कम से कम एक डाक्टर तो बच जायगा, महाराज? वह जिसका चाँदी का खिलौना खो गया है?

पुत्तूलाल—(*प्रखर स्वर में*) तेरे ऊपर पहले आफ़त आयगी। कोई नहीं बचेगा।

(*रामटहल कुछ घबरा जाता है, परन्तु थर्राता नहीं है। वह नमस्कार करके चला जाता है*)

पुत्तूलाल—अब बाजे बजने दो। देवता जाना चाहता है।

(*बाजे बजने लगते हैं। पुत्तूलाल तीव्र हुंकारों से आरम्भ करके क्रमशः धीमा पड़ता जाता है और अन्त में बिलकुल शान्त हो जाता है। उसके उपरान्त खड़ा हो जाता है। फिर सब लोग गाते बजाते हुये चले जाते हैं*)

चौथा दृश्य

[*स्थान—तालगांव के एक बड़े मकान का कमरा। कमरे में एक पलंग पर तकियों के सहारे डाक्टर भवन पड़ा हुआ है। वह गठिया का रोगी है। बिलकुल निर्जीव सा है उसके पास ही एक कुर्सी पर नीरा बैठी हुई है। नीरा पन्द्रह-सोलह वर्ष की सुन्दर लड़की है। उसकी आंखों में सजगता और आत्मविश्वास है। समय—दिन*]

भवन—नीरा, रामटहल अभी तक नहीं लौटा ? दो गृहस्थों के बीच में एक नौकर का होना एक मुसीबत ही है।

नीरा—हाँ, बड़ी देर का गया है। शायद डाक्टर सलिल के घर पर किसी काम में अटक गया हो।

भवन—अच्छा, तबतक मुझको करवट लिवा दो। (*नीरा उसको करवट लिवाती है*)

भवन—(*कराहते हुये*) मुझको फिर चित लिटा दो।

(*नीरा उसको चित लिटा देती है*)

नीरा—डाक्टर सलिल से कोई दूसरा नुस्खा बनवाइये।

भवन—वह उस दिन के सिवाय फिर आया ही नहीं। निराले स्वभाव का जीव है। बतला दिया था कि इस नुस्खे को मैं उपयोग में ला चुका हूँ, परन्तु हठ करता रहा।

नीरा—कोई और डाक्टर यहां है नहीं—

भवन—डाक्टर तो गठिये के इलाज का जानने वाला सलिल से बड़ा शायद ही कहीं कोई दूसरा हो, पर वह सनकी है। बहुत अच्छी डाक्टरी चलती थी, फिर सब छोड़छाड़ कर सेना में भर्ती हो गया ! अब मरने की ठानकर यहां आगया है !! वह अच्छा हो सकता है, नीरा।

नीरा—आपकी दवा करें तो ज़रूर अच्छे हो सकते हैं। यह इतना सिगरिट क्यों पीते हैं ?

भवन—कहते थे अपने को मार देना चाहता हूँ और तुमको बचाना चाहता हूं ! अजीब है !! नीरा, असल में रोगों से बचने का उपाय दवा बहुत कम है। रोगों को भूलते रहना चाहिये। वे लड़कियां आजायँ तो उनका गाना सुनूँ। फिर कोई और भुलावा ढूँढ़ लूँगा। यहाँ के रूखे जलवायु में क्रमशः अच्छा होकर घर लौट चलूँगा।

(रामटहल कुछ छोटी लड़कियों को लेकर आता है। उनके साथ बाजे भी हैं)

नीरा—आओ मेरी बहिनो। तुम अच्छा गाया करो, भला। तुमको पिताजी इनाम देंगे।

(वे लड़कियां संकोच के साथ मुस्कराती हैं)

भवन—हाँ बेटियो, गाओ नाचो। मैं चङ्गा होने पर तुमको पढ़ाया भी करूँगा। *(रामटहल की ओर देखता है)*

(लड़कियां गाती और नाचती हैं। रामटहल पहले ही चला जाता है)

❀ गीत ❀

पंछी बोल गया रे, पंछी बोल गया।
झिलमिल झिलमिल किरनें फूटीं,
अन्धकार की कसनें टूटीं;
बालभानु की अलकें छूटीं,
धारें पुलकित हुई अनूठीं;
गजरा डोल गया रे,
सौरभ घोल गया रे।
पंछी बोल गया रे; गाकर बोल नया,
पंछी बोल गया।

(भवन सो जाता है। नीरा ध्यान के साथ देखती है)

नीरा—*(लड़कियों से धीरे से)* अब तुम लोग जाओ। पिताजी सोगये हैं। कल पाठशाला के समय के बाद आना। मैं तुमको सीना-पिरोना सिखलाऊँगी।

(लड़कियां चली जाती हैं। रामटहल आता है)

रामटहल—बाई जी, सेठ सेंतूचन्द आये हैं।

(भवन की नींद उचट जाती है)

भवन—*(कराह कर)* आने दो।

(रामटहल जाता है)

नीरा—आप थोड़ा सा सो पाये थे कि यह आगये!

(सेंतूचन्द और केवल आते हैं। वे लोग परस्पर अभिवादन करते हैं। नीरा केवल को देखकर भौंहें सिकोड़ लेती है फिर शिष्ट होने का प्रयत्न करती है। वे सब बैठ जाते हैं। रामटहल एक ओर खड़ा रहता है)

सेंतूचन्द—*(बहुत शिष्टाचार के साथ मीठे स्वर में)* आपकी तबियत अब कैसी है डाक्टर साहब? काम की उलझनों के मारे कई दिन से सेवा में आ ही नहीं पाया। *(हाथ की उंगलियाँ मसलते और चटकाते हुये)* आप यहाँ शीघ्र स्वस्थ हो जायेंगे। आपने बच्चों के पढ़ाने का काम हाथ में ले लिया है, मन लगा रहेगा, आपको आनन्द मिलेगा।

भवन—मुझको बच्चों का बोल, खेलकूद अच्छा लगता है। स्वस्थ हो जाऊँगा तो पढ़ाऊँगा भी उनको। यहाँ कोई जड़ीबूटी जानने वाला वैद्य भी है?

(नीरा कुछ चिन्तित हो जाती है और रामटहल सतर्क)

सेंतूचन्द—जी हाँ डाक्टर साहब, हमारे यहां पुत्तूलाल महते बड़ा जानकार है। जड़ी बूटियों का, और सयाना भी है। आप लोग माने या न माने, पर है वह बड़ा जानकार। एक बाबा चिमटानन्द भी हैं जो कुछ अचूक जड़ियों को जानते हैं।

भवन—*(क्षीण मुस्कराहट के साथ)* चिमटानन्द! क्या उनका यही नाम है?

सेंतूचन्द—नाम तो सुनता हूं उनका कुछ और था, पर वे चिमटे पर भजन गाते रहते हैं इसलिये सब लोग उनको इसी नाम से पुकारते हैं। किसी दिन बुलवाऊँ इन लोगों को ? गांव के नेता हैं वह।

भवन—देखा जायगा, अभी तो ज़रूरत नहीं है।

सेंतूचन्द—राजनीतिक नेता होने के अतिरिक्त चिमटानन्द तो डाक्टर साहब, कुछ पहुँचे हुये साधू भी हैं। लोगों की उन पर बड़ी श्रद्धा है, परन्तु आप लोग बहुत पढ़े लिखे हैं, आपकी बात ही और है, मानें चाहे न मानें।

भवन—नहीं, यह बात नहीं। असल में मैं बीमारी के ख्याल से लोगों की भीड़ पसन्द नहीं करता। सुनता हूं गाँव में चूहे मरने लगे हैं ? कुछ लोग यकायक बीमार पड़ गये हैं।

(केवल कमरे में इधर उधर आंख को दौड़ाता है। नीरा देख लेती है। उसके मनमें और भी ग्लानि बढ़ जाती है। रामटहल सहमा हुआ सा है)

सेंतूचन्द—बीमारी तो ऐसी कोई नहीं है, दो आदमी तड़ाक-फड़ाक मर गये हैं, परन्तु उनको प्लेग नहीं हुआ था। उन्होंने देवी के मन्दिर के सामने अण्डबण्ड बात की थी, देवता बिगड़ गया, उनके हृदय पर आतंक छा गया और वे बिचारे मर गये—गाँव वाले चाहे जो कुछ कहें।

रामटहल—गाँव वाले भाग उठे है।

(केवल कुछ कहना चाहता है, कह नहीं पाता—मुस्कराकर रह जाता है। सेंतूचन्द देख लेता है)

भवन—(*कराहते हुये*) गरमियों में प्लेग तो नहीं पड़नी चाहिये, परन्तु यदि शुरू हो गई और कहीं बरसात पा गई तो फिर इन्हीं गर्मियों तक उसकी प्रचण्डता का डर रहेगा।

सेंतूचन्द—लक्षण अच्छे नहीं हैं। उधर प्लेग के मारे इस लड़के का स्कूल बन्द है। और जब तक बीमारी समाप्त नहीं होती, इसका स्कूल न खुलेगा। बड़ी कृपा होगी यदि आप इसको कुछ पढ़ा दिया करें। यह आपको दिक़ नहीं करेगा, पाठ लेकर चला जाया करेगा और याद करके सुना जाया करेगा।

रामटहल—दिमाग़ इनका तेज़ है।

(केवल रामटहल की ओर विश्वास और अविश्वास की दृष्टि से देखता है। नीरा के मन की ग्लानि चेहरे पर आ जाती है)

भवन—रामटहल के साथ यह मेरे पास कई बार आ चुके हैं। कभी कभी कुछ बतला दिया करूँगा।

केवल—मैं पेशगी किराया माँगने आया था, पढ़ने के लिये नहीं आया था।

सेंतूचन्द—*(कुढ़कर)* यही सब मूर्खता तो भरी हुई है इसमें।

केवल—आप ही ने तो भेजा था।

भवन—कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। आया करो कभी कभी।

(सेंतूचन्द केवल पर आँखें तरेरता है। वह उपेक्षा के साथ दूसरी ओर मुँह कर लेता है)

सेंतूचन्द—*(मिठास के साथ)* तो अब मैं जाऊँ डाक्टर साहब। *(केवल की ओर संकेत करते हुये)* इस गधे ने यदि आप से थोड़ी सी भी बुद्धि पा ली तो मैं अपना जन्म सफल समझूँगा। किराया तो आ ही जायगा, आप चिन्ता मत करना।

(केवल चिढ़कर मुँह फेर लेता है। नीरा हँसी को कठिनाई के साथ रोक पाती है। रामटहल होंठ सटाकर मुँह नीचा कर लेता है)

भवन—*(क्षीण मुस्कराहट के साथ)* हमारे आप के वर्ग के लड़के जन्म भर मूर्ख नहीं बने रहते।

मेंहूचन्द—(प्रतिवाद न करने का प्रयत्न करते हुये भी) मूर्ख तो जन्म भर किसी भी वर्ग का कोई नहीं रहता। (मीठे पड़कर) पर आर सरीखे विद्वानों की संगति पाकर गधे तक जल्दी मनुष्य बन जाते हैं।

(सैंतूचन्द, केवल और रामटहल जाते है)

नीरा—(हँसी को रोकते रोकते भी हँस हँस कर) पिता जी, कैसा बढ़िया सेठ है यह! लड़के को बुद्धि मिलने से बाप का जन्म सफल होगा। ह! ह!! ह!!! (एकायक गंभीर होकर) सुनती हूं यह केवल चोर है। डॉक्टर सलिल का कोई चांदी का खिलौना खिसका ले गया। मैंने नहीं देख पाया वह खिलौना कैसा था। डाक्टर साहब उस खिलौने का क्या करते होगे? (अपने कमरे के चित्रों को देखते हुये) ये तो ऊँचाई पर लगे हैं। इनको वह लड़का नहीं चुरा ले जा सकेगा। मैं सावधान रहूंगी।

भवन—डाक्टर सलिल बिलकुल सनकी है, पर झूठा नहीं है। शायद चुराया हो इस लड़के ने खिलौने को। परन्तु वह लखपती का लड़का है मुझको विश्वास नहीं होता।

(रामटहल आता है)

रामटहल—डाक्टर साहब आये हैं।

(भवन झटका सा खाकर तकियों से उठ पड़ता है और फिर अपनी निस्सहायता की कल्पना करके तकियों पर गिर जाता है। नीरा उसके पास दौड़कर आती है)

भवन—कुछ नहीं (कराहकर) कुछ नहीं। उनको बुला लो। (रामटहल जाता है) अनचीते ही आ गये वह!

(सलिल आता है। अभिवादन के बाद उसके लिये भवन के पास नीरा कुर्सी रख देती है। भवन थोड़ा सा उठकर फिर लेट जाता है)

सलिल—वहां नहीं। कुर्सी दूर रखदे नीरा। मैं यक्ष्मा का रोगी हूं।

(नीरा भयभीत होकर कुर्सी दूर रख देती है। उस पर सलिल बैठ जाता है)

भवन—डाक्टर, आपने बड़ा अनुग्रह किया। इस अवस्था में भी चले आये।

(सलिल सिगरिट जलाकर पीने लगता है)

सलिल—*(कसकर सिगरिट पीते हुये)* अब बात करूँगा। मैं जान बूझकर इतने दिनों नहीं आया, और न अब बहुत दिनों आऊँगा मेरे मरने के लिये मेरा कमरा ही अच्छा।

भवन—*(कराहता हुआ)* क्या कहते हो डाक्टर! तुम न रहोगे तो गठिया का इलाज भारत से उठ जावेगा।

सलिल—गठिया तो नहीं उठ जावेगा। *(नीरा मुस्कराकर सिर नीचा कर लेती है)* और न यक्ष्मा।

भवन—आपने सब इलाज छोड़ दिया! बहुत सनकी हो गये हैं आप!!

सलिल—मूर्ख हो न! मेरे इलाज की बात मत करो। कुछ महीनों की ही कहानी और है। मैं चाहता हूं मरने से पहले तुमको अच्छा कर जाऊँ।

(नीरा चिन्तित दृष्टि से पहले सलिल को और फिर भवन को देखती है)

भवन—*(कराहते हुये)* मेरा सारा अङ्ग सुन्न सा पड़ गया है। हरएक जोड़ में पीड़ा है। केवल दाहिने हाथ की कुहनी और कलाही कुछ काम करती है। उस नुस्खे से कोई लाभ नहीं हुआ। कुछ दवाइयां साथ में लाया हूं, परन्तु आपकी सलाह के बिना नहीं लूँगा।

सलिल—सब दवाइयों को फेक दो।

भवन—ऐं ! }
नीरा—ऐं ! } (*एक साथ*)

सलिल—हां, बिलकुल। मैंने सब फेक दी हैं। उस दिन तुमको देखने आया तब से अपने आप मनमें कुछ अच्छा लग रहा है।

भवन—(*सोचकर*) हूं। अच्छा। उस कमरे के बाहर अधिक निकलने लगो तो एक दिन बिलकुल स्वस्थ हो जाओगे।

सलिल—(*कुर्सी से बिदककर*) क्या कहते हो ! जानते हो जर्मन दार्शनिक ने क्या कहा है ? नेशे ने—नेशे ने कहा है कि आशा सबसे बड़ा अभिशाप है, क्योंकि वह मनुष्य जाति की पीड़ा को बढ़ाती रहती है।

भवन—(*कराहते हुये*) इसका मैं अपने लिये क्या अर्थ लगाऊँ ?

सलिल—जर्मन दार्शनिक नेशे ने तुम सरीखों के लिये जन्म नहीं लिया था जिनके एक लड़की भी है। (*नीरा बहुत उदास हो जाती है*) नेशे का सिद्धान्त मेरे सरीखों के लिये है जिनके कोई नहीं। खैर, (*सिगारिट कसकर पीते हुये*) खैर, जाने दो। मैंने प्रण किया है तुमको अच्छा करके मरूँगा, तुमको सड़कों पर बन्दर की तरह नचाकर !

(*भवन हँस पड़ता है, फिर गंभीर होकर कराहने लगता है*)

भवन—आपको देखने से ही पीड़ा कुछ कम जान पड़ी—पर—पर, आप तो दवाइयों को फेक देने के लिये कहते हैं !

सलिल—(*पैर पटककर*) बिलकुल। क़तई। (*कुछ सोचकर, अब वह सिगारिट नहीं पी रहा है; कुर्सी के डंडे पर सिगारिट वाला हाथ टिक जाता है, सिगारिट जलता रहता है*) तुम जब अभी हँसे थे

तो क्या तुमको उस क्षण कोई दर्द था ? तुम मेरे आने पर थोड़ा सा उठे थे, कैसे उठ गये थे ?

नीरा—आपके नाम के सुनते ही पिताजी बिस्तरों में यकायक उठ गये थे, फिर गिर गये।

सलिल—ओह ! हाँ—(*कुछ सोचता है और सिगरिट का पीना बिलकुल भूल जाता है। भवन उसकी ओर ध्यानपूर्वक देख रहा है*) अच्छा ! बतला सकते हो कैसे उठ गये थे उस क्षण ? क्यों ? फिर तो उठने की चेष्टा करो।

भवन—(*प्रयास में अपने को बिलकुल असफल पाकर*) असम्भव है। (*कराहकर*) रोम रोम में पीड़ा हो उठी है।

सलिल—अभी क्या हुआ है—गर्दन में दर्द हुआ कि तुमने उसका उपयोग छोड़ दिया, घुटनों में दर्द हुआ कि उनको विश्राम देते देते उनका उपयोग भूल गये ! एक हाथ को पुचकारते पुचकारते उसको सुला दिया !! अब दूसरे हाथ की बारी है। कुहनी का उपयोग छोड़ दो, फिर उससे भी शीघ्र हाथ धो बैठोगे, उसके बाद कलाई जायगी और फिर उँगलियाँ और फिर—उसके बाद—

(*नीरा चिन्ता में डूबकर श्वास पर श्वास छोड़ती है*)

भवन—(*कराहकर*) हुआ तो यही है, पर करूँ क्या ? मेरे बस का रहा ही नहीं कुछ।

(*सलिल की उंगलियाँ सिगरिट से जलने लगती हैं। वह उसको अनजाने ही कमरे से बाहर फेंक देता है। भवन देखता रहता है*)

सलिल—आज से, अभी से, शरीर के उस अङ्ग का अधिक से अधिक उपयोग करने की कोशिश करो जिसको तुमने नष्ट नहीं कर पाया है; साथ ही उन अङ्गों को भी थोड़ा थोड़ा व्यायाम देने की हिम्मत करो जिनको तुमने बेकार कर दिया है !

भवन—मैंने बेकार कर दिया है।

सलिल—(*उंगलियों को थथोल कर और सिगरिट को न पाकर*) सिगरिट कहाँ गया ?

नीरा—आपने कमरे के बाहर फेंक दिया। (*वह मुस्कराती है*)

सलिल—हूं—(*जेब में से सिगरिट की डिबिया निकालता है और फिर जहाँ की तहां रख लेता है*) तुमको कोई भी दवा वाला नुस्खा लाभ नहीं पहुंचावेगा। मैंने जो उपचार अभी बतलाया है उसी से बन्दर की तरह कूदने लगोगे।

(*नीरा हर्ष मग्न होती है*)

नीरा—डॉक्टर साहब, वह खिलौना कैसा था ? चाँदी का था वह ?

सलिल—(*रीती आंखों से*) हाँ था एक खिलौना। (*भवन से*) तुम जानते हो डॉक्टर, शायद याद हो—तुमने उस खिलौने को देखा होगा ? मैंने उसको अपने भीतर की आग जलाये रखने के लिये रख छोड़ा था। पर वह बुझती गई। उहँ, जाने दो। मैं उसका स्मरण नहीं करना चाहता। (*कन्धे पर हाथ धर कर*) दर्द होने लगा है। अब जाऊँगा और कभी नहीं आऊँगा। (*जेब में से डिबिया निकाल कर फिर जेब में वापिस करता है। भवन ध्यानपूर्वक देखता रहता है*) तुम याद करो डाक्टर—तुमको गठिया शुरू कैसे हुआ था।

भवन—एक दिन बरसात में बाहर पड़ा रहा, बस गठिया शुरू हो गया।

सलिल—गलत, बिलकुल गलत। यह गौण कारण है। सोचो, स्मरण करो, मन को उसके पहले कोई धक्का लगा ? कब लगा ? कैसे लगा ?

भवन—(*थोड़ा सा सोचने के उपरान्त*) अभी तो याद नहीं आता, परन्तु सोचूँगा। (*फिर सोचकर*) कुछ था शायद। सोचूँगा। फिर उससे क्या?

सलिल—दमन की हुई स्मृति जहाँ तुम्हारी चेतना में आई कि अच्छे होने की घड़ी तुरन्त सामने आ खड़ी हुई।

नीरा—क्या वह खिलौना आपको बहुत प्यारा था डाक्टर साहब? मुझको भी बहुत प्रिय थे खिलौने।

(*सलिल एक क्षण के लिये रीती आँखों नीरा की ओर देखता है। नीरा सहमर्ता नहीं है। उसकी आँखों में जिज्ञासा है*)

सलिल—हाँ था कभी—फिर—न जाने क्या हो गया था। अच्छा—(*भवन से*) देखो डॉक्टर, बीमार मनुष्य, खास तौर से डाक्टर अपना निदान नहीं कर सकता—(*अपने अभ्यास का स्मरण करके झिझक जाता है, फिर दृढ़ हो जाता है*) मैं अपनी जाँच करता रहता हूं, परन्तु स्वस्थ होने के लिये नहीं—अन्तिम घड़ी के आने की प्रतीक्षा में करता रहता हूं जाँच पड़ताल।

भवन—छाती का दर्द कैसा है अब?

सलिल—(*टटोलकर*) अब तो बिलकुल नहीं है। (*कई बार सांस लेकर*) सांस लेने से भी पीड़ा नहीं हुई। उस खिलौने ने पीड़ा उत्पन्न की थी शायद। वह गया। ओह! हुं!! अब जाऊँगा।

भवन—ठहरिये ज़रा सा। यदि मेरी बीमारी का सम्बन्ध किसी मानसिक ठोकर, या किसी स्मृति दमन से है तो क्या आपके रोग का सम्बन्ध नहीं हो सकता किसी ऐसी ही ठोकर या स्मृति के दमन से?

(*सलिल कुर्सी के पीछे सिर लटका लेता है। पैर ज़ोर के साथ हिलाता है। कुछ क्षण उपरान्त एकाएक तनकर बैठ जाता है*)

सलिल—सोचूँगा—सोचूँगा—देखूँगा। परन्तु जर्मन दार्शनिक ग़लत नहीं हो सकता; वह कहता है—आशा ही मनुष्यों के सारे दुखों की जड़ में है।

भवन—भारतीय दर्शनों को भी देखिये।

सलिल—ओह! (*हँसकर*) दर्शनशास्त्र में भी राष्ट्रीयता!! (*गंभीर होकर*) कोई भी शास्त्र किसी भौगोलिक सीमा का कैदी नहीं है।

भवन—(*उसको प्रसन्न देखकर*) डॉक्टर वह खिलौना किसी—कैसी—(*नीरा को देखकर रुक जाता है*) किसी से सम्बन्ध रखता था। कुछ कुछ याद आ रहा है।

नीरा—जिसे कोई नीच दुष्ट चुरा ले गया! शायद वह—

सलिल—चुप चुप (*वेग के साथ*) तुम अपनी स्मृति को टटोलो अपने रोग के मूल इतिहास के लिये, मैं अपनी को टटोलूँगा। (*रुककर*) अर्थात—अर्थात मेरी इच्छा हुई तो। अब बहुत सा धुँधला भी हो गया है स्मृति में। जाता हूं। और—

(*खड़ा हो जाता है और जाने लगता है*)

भवन—याद रखियेगा अपने प्रण को—आपने कहा था, तुमको बचाकर ही दम लूँगा—(*मुस्कराकर*) या अपनी दम दूँगा।

नीरा—(*अनुनय के साथ*) हाँ डॉक्टर साहब।

सलिल—(*नीरा के कन्धे पर हाथ रखकर*) यह बचेंगे, कोई सन्देह नहीं। मैंने जो कुछ बतलाया है उसमें कसर न लगने पावे।

नीरा—(*मीठे स्वर में उसी अनुनय के साथ*) तो डाक्टर साहब, आप सिगरिट का पीना कम कर दीजिये।

(*सलिल नीरा की सुन्दर भोली चितवन में से कुछ पाता हुआ सा, आंख गड़ाकर देखते हुये*) हूं—क्या कहा?—अच्छा, अच्छा।

(*सिगरिट की डिबिया को जेब में पकड़े हुये चला जाता है*)

नीरा—आप ठीक कहते थे पिता जी, यह बहुत सनकी हैं।

भवन—नहीं बेटी, बहुत बड़े डाक्टर होने के सिवाय यह बहुत बड़े विद्वान भी हैं—

नीरा—फिर इनको क्या हो गया है? यह ज़रा सा खिलौना क्या था? इनकी सनक या बीमारी से उस खिलौने का क्या सम्बन्ध है? क्या बहुत अनमोल था?

भवन—इन्होंने ब्याह नहीं किया। इतना ही याद आता है कि जिसके साथ करना चाहते थे और नहीं हो पाया या तो वह खिलौना उसकी मूर्ति है या जो कुछ हो। कभी वह स्वयं बतलायेंगे।

नीरा—हूं—ऊँ। (*एक क्षण बाद*) वह जो अभ्यास आपके लिये बतला गये हैं उसे आपको अब लगातार करना पड़ेगा।

भवन—(*उमंग के साथ*) करूँगा। अच्छा मैं अब स्वयं करवट लेने का प्रयास करता हूं।

(*वह प्रयास करता है। नीरा आशा और चिन्ता के साथ देखती रहती है*)

यवनिका

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—तालगांव में सेंतूचन्द के घर का एक कमरा । कमरे में कोई सजावट नहीं है । एक कोने में मेज़ पर गड्डी किये हुये बिस्तर रखे हुये हैं । दूसरे कोने में दो पलंग टिके खड़े हैं । सरूपा आती है । मुँह खोले हुये है । उसकी आँखें विस्फीत नहीं हैं । पलक थोड़े से झुके हुये हैं । समय—दिन]

सरूपा—केवल ! ओरे केवल !! केवलवा रे !!!

(नेपथ्य से—क्यों हल्ला करती हो ? आता तो हूं ।)

(केवल आता है । पैंजामा कुर्ता पहिने है । नंगे सिर)

केवल—क्या है ? क्यों इतना चिल्ला रही हो ? कह दिया था कि पुस्तकों को ठिकाने रखकर आता हूं ।

सरूपा—मैं चिल्लाती हूं या तू चिल्लाता है ? कह दिया कि मेरे सामने अकड़ कर बात मत किया कर । पढ़ने कबसे नहीं गया डाक्टर भवन के पास ?

केवल—कबसे नहीं गया, कबसे नहीं गया ! तुमको कुछ याद तो रहता नहीं है। तुम्हीं ने कहा था कि प्लेग पड़ रही है, बाहर मत घूमा कर—मैं नहीं गया।

सरूपा—अरे अभागे, मैंने बस्ती में मटरगश्त लगाने से रोका था न कि पड़ोस के ही डाक्टर वाले मकान में जाने से।

केवल—यह चला, मुझे क्या ?

(जाने को होता है)

सरूपा—हे भगवान, ऐसी भी सन्तान क्या।

केवल—(रुककर) तो क्या करूँ अब ? लो नहीं जाता।

(बैठ जाता है)

सरूपा—(*माथा ठोककर*) मुझको प्लेग नहीं आती ! मुझको !!

केवल—(*उकड़ूं बैठते हुये*) तुमको क्यों आयगी, मुझको आवे तो सारा टंटा मिट जाय।

(सरूपा मारने के लिये हाथ उठाती है, केवल उचट कर ज़रा दूर खड़ा हो जाता है)

केवल—मारो, मारो। मुझको मारने-पीटने और गाली दिये बिना तुम्हारा पेट ही नहीं भरता।

(केवल की आँखों में चिनोती को देखकर सरूपा सहम जाती है, परन्तु उसका क्षोभ कम नहीं होता है)

सरूपा—कहाँ जारहा है ?

केवल—पढ़ने, एक डाक्टर नहीं दोनों के पास।

सरूपा—(*निश्वास छोड़कर*) अरे तू ! तू !! तुझको मैं जानती हूं। नमालूम कहां जायगा और किसकी चोरी करेगा !

केवल—(*भयङ्कर स्वर में*) चोरी ! चोरी !! मैं अब प्लेग को ढूँढ़ने जाऊँगा जिसमें समाप्त हो जाऊँ और तुम्हारा काँटा सदा के लिये निकल जाय।

सरूपा—(*उसके कुढंग से झिझककर*) अच्छा बता तूने उस डाक्टर का खिलौना क्यों चुराया ? और फिर कहाँ रख दिया ?

केवल—(*दृढ़ स्वर में*) सैकड़ों बार, हज़ारों बार कह दिया कि मैंने चुराया न था। वह सिगरिट की खाली डिबियों में बिंधा हुआ चला आया। न मालूम कहाँ रख दिया। बहुत ढूँढ़ने पर भी नहीं मिला।

सरूपा—यदि उस डाक्टर ने पुलिस में रपट लिखवा दी होती तो सारे घर की खोज बीन होती, हमारी इज्ज़त बरबाद होजाती और तुझको जेलखाना होता।

केवल—तुमको तो अच्छा लगता। सोचतीं कुछ दिनों के लिये ही सही, पाप तो कटा। और,—मुझको भी चैन मिलता।

सरूपा—(*चिल्लाकर*) अरे ओरे केवला ! चिल्लाकर मत बोलेजा। मैं कितना धीरे बोल रही हूँ ! तुझसे ठिकाने से बोला भी नहीं जाता !!

केवल—ओहो ! क्या कहना है !! बहुत धीरे बोल रही हो !!! आकाश फाड़े डाल रही हो !!!! इतने ज़ोर से चिल्ला रही हो कि यह गाँव तो क्या कलकत्ते तक आवाज़ पहुँचे !!!!!

सरूपा—(*केवल की चिनोती भरी हुई ढिटाई को देखकर*) देख केवला, मुझको गुस्सा मत दिला।

केवल—(*उसी प्रकार*) ओहो ! अभी तो मानो बिलकुल शक्कर में पगे हुये शब्द बिखेरती जारही हो !!

सरूपा—(*अपने को पराजित सा अनुभव करके*) अच्छा, आने दे उनको। आज तेरी हड्डी-पसली न तुड़वाई तो बात काहे की।

केवल-- (*उसी प्रकार*) लाठी उठा लाऊँ ? तुम्ही हड्डी–पसली तोड़ दो। फिर प्लेगदेवी की शरण में चला जाऊँगा।

सरूपा—(*देवी के मन्दिर का स्मरण करके और अपने को बिलकुल पराजित अनुभव करती हुई ढले हुये स्वर में*) देवी, हाँ देवी ही इस घर को बचाये हुये हैं, नहीं तो तेरे तो सारे लक्षण सत्यानाश के हैं, सत्यानाश के।

केवल—गर्भ में ही क्यों न मार दिया मुझको ? या पैदा होते ही फिकवा देतीं किसी घूरे पर ?

(*सरूपा माथा पकड़ लेती है। फिर धीरे धीरे उसकी ओर देखती है वह अपनी दृष्टि को नहीं हटाता। परन्तु सरूपा की ढली हुई आँखों को देखकर उसकी दृष्टि में ढिठाई कम हो जाती है*)

सरूपा—तू आपे से बाहर हो जाता है, तब मुझको भी क्रोध आ जाता है। (*कुछ स्मरण करके*) सभी कुछ किया था—न जाने क्यों किया था। देख तू मेरा अपमान मत किया कर, मैं प्यार कर उठूँगी।

केवल—तो अब क्या करूँ ? यहाँ से जाऊँ या खड़ा रहूँ ?

सरूपा—(*केवल के कन्धे पर हाथ रखकर*) सच बतला केवला, तूने चोरी की थी या नहीं ?

केवल—लाख बार कहा और अब अन्तिम बार कहता हूं कि नहीं की, नहीं की, नहीं की। चाहे मन्दिर में सौगन्ध लिवालो।

सरूपा—(*क्षीण मुस्कराहट के साथ*) जैसे तेरा मन्दिर और मूर्तियों में विश्वास ही हो। (*और भी ढले स्वर में*) अच्छा मान लिया चोरी नहीं की थी, फिर उसको लाकर कहाँ रख दिया ?

केवल— डिबियों में।

सरूपा—डिबियाँ [illegible] नहीं।

केवल—तुम तो बच्चा ही समझती हो। डिबियों को उनके भीतर की चमकदार पन्नी के लिये लाया था जिससे पुस्तकों के पूठों को सजाया।

सरूपा—फिर वह खिलौना कहां गया ?

केवल—भगवान जाने। मैंने उसको उठाकर पुस्तकों के पीछे वाले ताक में रख दिया। सोचा था डाक्टर को वापिस कर आऊँगा, परन्तु वह बहुत सुहावना था इसलिये अवकाश के समय अच्छी तरह देख लेने के बाद लौटाने की बात ते की। डर लगा कहीं तुम या पिताजी उसको रखे रहने के कारण चोर न समझ बैठो। इसलिये, थोड़ी देर खूब देखकर फिर न जानें कहां रख दिया। बहुत ढूँढ़ा, नहीं मिला। मैंने डाक्टर के नौकर रामटहल को या उनकी दाई नन्दिनी को बतला देने की सोची, पर हिम्मत नहीं पड़ी।

सरूपा—क्या था वह खिलौना ?

केवल—किसी स्त्री की मूर्ति—जैसी तुम छुटपन में रही होगी। उससे मिलती जुलती।

(सरूपा धक्का खाकर पीछे हट जाती है। फिर आगे बढ़ती है। सिर पकड़े हुये थोड़ा सा टहलती है। वह कष्ट में है। उसके कष्ट को देखकर केवल को अच्छा लगता है)

सरूपा—मैं ढूँढ़ती हूं उस खिलौने को। तू मेरी सहायता कर। मिल जायगा तो लौटा आवेगा डाक्टर को ?

केवल—अवश्य। अवश्य। पर जो तुमको पसन्द आ गया और तुम्हीं ने उसको रख लेने के लिये कहा तो ?

सरूपा—नहीं बेटा। *(कुछ मीठे स्वर में)* मैं अब तेरी मारपीट कभी नहीं करूँगी। पर खिलौने को ढूँढ़ ला।

केवल—मुझको घूमने फिरने दोगी ? क्योंकि मैं अब बच्चा नहीं हूं।

(वे दोनों जाने लगते हैं)

केवल—(*रुककर*) ओह ! मुझको याद आ गया । मैंने खिलौने को कपड़ों के सन्दूक़में बिलकुल नीचे रख दिया था । खूब याद आया। मैं अभी लिये आता हूं । आश्चर्य है मैंने सारे ठौर ठिकानों की छान-बीन की, परन्तु कपड़ो के सन्दूक़ को नहीं ढूँढ़ा । (*वह सरपट चला जाता है*)

(*सरूपा द्रुत गति से टहलने लगती है । छाती पर हाथ कसती है और सिर नीचा किये हुये कुछ सोचती है । फिर माथे को टटोलती है । अपने से संकेत में कुछ बातचीत सी करती है । फिर ऊपर विस्फीत आँखों कुछ देखती है जैसे कुछ ढूंढ़ रही हो । अन्त में नीचा सिर करके एक हाथ कमर पर रखे और एक को हिलाती हुई घूमने लगती है । केवल खिलौने को लेकर आता है । प्रसन्न है, मानो किसी न्यायालय से निर्दोष घोषित होने का फ़ैसला पा गया हो । अकुलाकर उसकी ओर बढ़ती है*)

केवल – लो मां, अब तो नहीं कहलाऊँगा चोर ?

(*सरूपा खिलौने को ले लेती है । निरीक्षण करती है । बीस वर्ष पहले की यह उसी की प्रतिमा है । उसकी आँखों को विश्वास नही होता है । वह खिलौने को बार बार देखती है । फिर आँखें मूँद लेती है । उसकी आँखों से आँसू झर पड़ते हैं । वह धम्म से बैठ जाती है । खिलौना उसके हाथ से छूट पड़ता है । वह आँखें खोल कर उसको फिर उठा लेती है*)

सरूपा—(*कंपित स्वर में*) ओह ! केवल !! बेटा केवल !!!

केवल—(*जीवन में शायद पहली बार इतना प्यार पाकर*) माँ ! माँ !! तुम रो क्यों रही हो ?

सरूपा—(*आँसू पोछती हुई खड़े होकर*) बेटा केवल, इधर आ तुझे गले लगा लूँ ।

(केवल अपने को विश्वास न करता हुआ धीरे धीरे उसके पास आता है। एक हाथ में खिलोना लिये हुये वह उसको चिपटा लेती है, केवल छूटने का प्रयत्न करता है। वह उसको छुटका देती है)

केवल—मां, तुमको क्या हो गया है ?

सरूपा—बेटा, मैं तुझको आगे कभी नहीं मारूँगी, कभी गाली नहीं दूँगी।

केवल—और मैं चाहे जहां जाऊँ ?

सरूपा—चाहे जहाँ जा, देवी माई तेरी रक्षा करेंगी, पर इधर-उधर मत जइय्यो बेटा।

केवल—उस दिन तो तुमने माई की भभूत लेने से इनकार कर दिया था !

सरूपा—आगे नहीं करूँगी। वह तेरी रक्षा करती रहेंगी।

केवल—लाओ, इस मूर्ति को डाक्टर को लौटा आऊँ।

सरूपा—(*कुछ सोचकर*) नहीं, मत लेजा, रखले अपने सन्दूक में फिर।

केवल—(*हँसकर*) कहा था न कि तुम्हारा मन बदल जायगा ! अब बतलाओ, चोर कौन है ? मैं या तुम ?

सरूपा—(*प्यार के साथ*) तुम नहीं बेटा, मैं। (*फिर भौंहें सिकोड़ लेती है*)

केवल—तो तुम्हीं इसको आपने पास रखो। मैं नहीं रखूँगा।

(*सरूपा एक क्षण कुछ सोचती है*)

सरूपा—डाक्टर का क्या नाम है ? अथवा जाने दो, कुछ भी होगा—

केवल—नाम उनका डाक्टर सलिल है। तुम्हारे सामने यह नाम आया भी है, परन्तु तुमको तो कुछ याद ही नहीं रहता सिवाय मुझको पीटने पाटने और गाली देने के, जैसे मैं कोई छोटा सा बच्चा होऊँ।

सरूपा—(*मुस्कराकर*) मेरे लिये बच्चा ही है और रहेगा। (*एक क्षण सोचती है, फिर भौंहें सिकोड़ती है; दृढ़ स्वर में*) अच्छा लेजाओ, लौटा दो। डाक्टर से मेरा यानी घर का कोई हाल मत कहना, भला।

केवल—मुझको क्या पड़ी। लाओ मैं अपनी मेज़ पर का सामान ठीक ठाक करके ले जाऊँगा।

(*खिलौने को लेकर जाता है। उसके उपरान्त सरूपा नीचा सिर किये हुये कुछ सोचती हुई धीरे धीरे जाती है*)

दूसरा दृश्य

[स्थान तालगांव का एक सकरा मार्ग जो डाक्टर सलिल के निवास की ओर गया है। दिन होने पर भी घरों के किवाड़ बन्द हैं। नेपथ्य में रोने पीटने और कराहने की आवाज़ आती है। चिमटानन्द चिमटा बजा बजाकर गाता हुआ आता है। चिमटानन्द की आयु का ठीक ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। चालीस और पचास के बीच में होगा। दाढ़ी छोटी, सिर के बाल ज़रा लम्बे और बिखरे हुए—तिल चांवरी रंग के। आंखें धसी हुईं परन्तु चमकती हुईं। पैरों मे स्फूर्ति और गले मे पैना बेसुरापन। खादी की लम्बी कोपीन पहिने है। रंग गेरुआ। उसी रंग का साफ़ा बांधे है। कत्थई रंग की किरमिच के जूते पहिने है।]

❀ गीत ❀

नैयाँ ठीक जिन्दगानी कौ,
बनो पिण्ड पानी कौ।
चोला और दूसरो नैयाँ,
मानुस की सानी कौ।
जोगी जती तपी संन्यासी,
का राजा रानी कौ।
जब चाहै लै लेय ईसुरी,
का बस है प्रानी कौ।

(चिमटानन्द गाता हुआ चला जाता है। तुरन्त ही केवल और टहलराम आते हैं। केवल के हाथ में कुछ पुस्तकें हैं। वह कुर्ता पैजामा और टोपी लगाये है, जूते पेशावरी। रामटहल कुर्ता, टोपी, धोती, और कत्थई रंग की किरमिच के जूते पहिने है)

रामटहल—चिमटानन्द बाबा भी क्या मौजी हैं। लोग मर रहे हैं, पर इनको कोई डर नहीं है। सन्त हैं।

केवल—और नेता भी। मेरा मन चाहता है कि कहीं अकेले में पाऊँ तो टँगड़ी लड़ाकर पटक दूँ। कहते हैं मैं शिव हूँ! स्वयं ईश्वर हूं!!

रामटहल—तुम तो बाबू हमेशा किसी न किसी ऊधम उपद्रव पर हाथ धरे रहते हो। उस खिलौने का क्या हुआ? डाक्टर साहब तो अब लगभग उसको भूल ही गये हैं।

केवल—आज साथ ले आया हूं। रामटहल, अजीब है यह खिलौना। मेरा पीछा ही नहीं छोड़ना चाहता था। उस दिन चला था देने के लिये, पर पहुँच गया वह फिर मेरे सन्दूक में! एक मज़ा और हुआ—ताला बन्द करके चाभी खोदी!! कई दिन चाभी नहीं मिली, फिर सन्दूक को आज किसी तरकीब से खोल पाया।

रामटहल—नन्दिनी देवी को खिलौने की ज़्यादा याद आई। मुझसे कई बार कहा—पता तो लगाओ केवल बाबू को मिल गया या नहीं या अब कोरा बहाना ही कर रहे हैं?

केवल—(*तिनककर*) वह उसको स्वयं चुरा लेना चाहती होगी।

(दूसरी ओर से चिमटानन्द का पूर्ववत गाते हुये प्रवेश। उसको केवल और रामटहल की कोई परवाह नहीं है)

रामटहल—(*धीरे से केवल से*) इन मौतों और कराहों में यह गाना तो अच्छा नहीं लग रहा है।

(सड़क पर कुछ बच्चे आ जाते हैं)

केवल—(*धीरे से*) लगाऊँ एक टँगड़ी ? पर यहाँ भीड़भाड़ लगनी शुरू हो गई है। फिर कभी देखा जायगा।

(चिमटानन्द का ध्यान इन लोगों की ओर आकृष्ट होता है)

रामटहल—स्वामी जी, जयहिन्द।

चिमटानन्द—(*जैसे चुंगी वाले आत्मगौरव के साथ टैक्स वसूल करने के उपरान्त उपेक्षा के साथ रसीद देते हैं*) जयहिन्द।

(केवल मुँह फेर लेता है। चिमटानन्द को बच्चों की ओर देखते हुये रामटहल को चल देने का संकेत करता है)

केवल—चलो न—आज बहुत पढ़ना है।

चिमटानन्द—(*केवल की ओर यकायक घूमकर*) पढ़ता-वढ़ता कुछ है नहीं ! सिवाय बदमाशी के और भी कुछ आता है तुझको ?

केवल—आता है—जैसे गाँव बालों को व्याख्यान देकर बहकाना फुसलाना, अपना उल्लू सीधा करना, और भगवान के साथ भगवान-गिरी का (होड़) कम्पीटीशन करते रहना !

(नेपथ्य में रोने चिल्लाने और कराहने का शब्द होता है। चिमटानन्द कुढ़ जाता है)

चिमटानन्द—(*क्षुब्ध स्वर में*) हमारे देश की यह है नई पीढ़ी ! (*क्षोभ का नियन्त्रण करके धीमें स्वर में*) हे शिव ! हे शिव !! (*आँख मूँदकर आकाश की ओर सिर उठाये हुये*) अब क्या होने वाला है ? (*आँखें खोलकर, मुस्कराने का प्रयत्न करते हुये*) पाप ही तो विनाश का कारण है। (*नेपथ्य मे फिर वही चीख़ कराह*) यह सब पापों का फल है। संसार जो कुछ भी पाप करता है उसी का फल ये सब बीमारियां हैं—हैज़ा, प्लेग इत्यादि इत्यादि। शिवोहं, शिवोहम्।

केवल—(*चिमटानन्द को कुढ़ाने के लिये*) आपका तप, पुण्य या व्याख्यान नहीं रोक पाता है इस विनाश को ?

(*चिमटानन्द के चेहरे पर से मुस्कराहट चली जाती है। क्रोध सिमट पड़ता है जिसके चिन्ह सारे चेहरे पर अंकित हो जाते हैं और हाथ पैर से भी प्रकट हो पड़ते हैं*)

चिमटानन्द—(दबे हुये स्वर में फुफकार के साथ) मूर्ख ! दुष्ट !! पूँजीवाद के प्रतीक !!! मन चाहता है कि एक लात में ढेर करदूँ तेरा !!!!

केवल—(*आत्मविश्वास के साथ, और भी चिढ़ाते हुये*) इतना बड़ा पुण्य आप इतनी आसानी के साथ कमा डालना चाहते हैं ! परन्तु मेरा शरीर भी इस प्रकार के पुण्य प्राप्त करने का अभ्यास जानता है।

रामटहल—(*आने वाली विपद की आशंका से*) चलो बाबू चलो। बाबाजी हमारे गाँव के अगुआ हैं। (*आतङ्क भरे हुये चिमटानन्द से*) स्वामी जी, क्षमा करो।

(*किवाड़े खोलकर कुछ स्त्री पुरुष निकल आते हैं और अपने बच्चों को पकड़कर भीतर ले जाने का प्रयत्न करते हैं*)

एक पुरुष—(केवल से) भले आदमी के लड़के होकर सड़क पर दुन्द करते हो ! (*फिर बिना किसी चेष्टा के चिमटानन्द की ओर देखते हुये*) गाँव पर काल मड़रा रहा है और यहाँ सड़क पर लड़ाई हो रही है !! हे भगवान !!!

चिमटानन्द—(*मानो सब दिशाओं से लड़ाई को खींच समेट कर इसी पुरुष पर उड़ेल देना चाहता हो*) अभी क्या हुआ है—पुराने पापों का बदला लेने के लिये ही भगवान ने इस बीमारी को यहाँ भेजा है।

रामटहल—(*धीरे से केवल से*) अब चलो बाबू यहाँ से (*रामटहल उसका हाथ पकड़ लेता है*)

चिमटानन्द—(*ऊपर की ओर देखते हुये*) हे भगवन्!

केवल—(*जाते जाते*) टटोलो, आकाश में टटोलो! दुष्टों और पाखण्डियों का भगवान आकाश ही में तो रहता है। पूँजीवादियों का ज़मीन पर और तुम्हारा आकाश में!

चिमटानन्द—(*वहीं खड़े हुये तीक्ष्ण दृष्टि और प्रखर स्वर के साथ*) ओ नीच!

केवल—(*लौटकर*) चन्दा इकट्ठा कर उठो स्वामी जी, तो रोग और पाप गाँव से चले जायंगे अथवा इनके पाप और तुम्हारे शाप के बीच में राज़ीनामा हो जायगा।

(*रामटहल उसको ले जाता है*)

चिमटानन्द—(*उन थोड़े से स्त्री पुरुषों से जो अपने बालकों को घर भीतर ले जाने में व्यस्त हैं*) देखा तुम लोगों ने? इसी प्रकार के पापाचार से एक दिन प्रलय आयगा।

(*स्त्री पुरुष कोई भी उत्तर दिये बिना बच्चों को लेकर घर-भीतर चले जाते हैं। चिमटानन्द चिमटा बग़ल में दाबकर छाती पर हाथ बांधे हुये सिर हिलाता हुआ, फुफकारें मार कर, जाता है*)

तीसरा दृश्य

[*स्थान—उसी गांव में डाक्टर सलिल के मकान का एक कमरा। कमरे में कोई सामान नहीं है। सलिल कुछ सोचता हुआ कमरे में टहल रहा है। वह सिगरिट नहीं पी रहा है। अब अस्वस्थता की उतनी रेखायें उसके चेहरे पर नहीं हैं। समय—दोपहर चढ़े दिन*]

(सलिल कमरे के दरवाज़े की ओर टहलते टहलते रुककर देखता है। नन्दिनी हाथ में स्टाथसकोप लेकर आती है। नन्दिनी के मुँह पर अब उतना पीलापन नहीं है)

सलिल—क्या हाल है डाक्टर भवन का ?

नन्दिनी—स्टाथसकोप ले आई हूं, अपने फेफड़ों की जाँच कहाँ होकर कीजियेगा ? कुर्सी ले आऊँ ?

सलिल—स्टाथसकोप का हाल नहीं पूछा मैंने देवी जी—मैं पूछ रहा हूं डाक्टर भवन का हाल।

नन्दिनी—आपने इसी को तो मँगवाया था—*(अपना नियन्त्रण करके)* डाक्टर साहब को भी देख आई हूं। वह बैसाखी के सहारे कमरे में टहल रहे हैं।

सलिल—कोई ऐसा नहीं है वहां जो उनकी बैसाखी को छीन कर कहीं फेक दे ? चलें, फिरें, पैर काम न दें तो हाथ और पेट के बल रेंगें।

नन्दिनी—*(सनक की वृत्ति को समझकर)* जी।

सलिल—तुम नहीं कर सकतीं। वह छोकरा—क्या नाम है उसका ? *(अपना माथा टटोलता है)* सेनन्दन, सरेनल—

नन्दिनी—*(टोककर)* केवल है जी नाम उसका।

सलिल—हां हां केवल। मैं भूल क्यों गया नाम उसका ? *(सोचता है)* हाँ। एक नाम जीभ पर आया, उसको भुलाने का प्रयास किया, इस लड़के का नाम याद करना चाहा तो जिसको भूल जाना चाहता था वह इस पर लद गया ! गड़बड़ होगई !! *(हँसता है)* विज्ञान है—तुम नहीं समझ सकतीं।

(नन्दिनी के होटों पर सलिल की सनक के कारण मुस्कराहट आ जाती है)

नन्दिनी—(*मुस्कराहट को दबाती हुई*) जी—स्टाथसकोप को—

सलिल—भाड़ में डालो स्टाथसकोप को! मैं इस डाक्टर भवन को बिलकुल चंगा करके ही दम लूँगा। कह दो डाक्टर से कि वह स्वयं मेरे पास आवे, कैसे भी आवे। जो काम कोई भी नहीं कर सकता उसको मैं करूँगा। यहीं आवे—उसको बिलकुल अच्छा करके रहूंगा।

नन्दिनी—तो जाऊँ? स्टाथसकोप को वापिस ले जाऊँ?

सलिल—(*उमंग के साथ*) हाँ ले जाओ—मैंने कभी कहीं पढ़ा था—सजग जीवन का एक पल, बिखरे, ढीले ढाले, सुस्त जीवन के सौ घण्टे से भी ज़्यादा लम्बा होता है। तुम क्या जानो।

नन्दिनी—थर्मामीटर ले आऊँ?

सलिल—ओ हो! परेशान कर दिया!! जितने थर्मामीटर घर में हों सब को फोड़कर फेंक दो; स्टाथसकोप को पत्थरों से कुचल दो! (*नन्दिनी को गमनोद्यत देखकर ठंडा पड़कर*) ठहरो, ऐसा मत करो। शायद कभी काम आवें; मेरे नहीं, दूसरों के। मैं थर्मामीटर और स्टाथसकोप की सहायता के बिना भी मर सकता हूं।

(*नेपथ्य में आहट पाकर नन्दिनी कमरे के दरवाज़े की ओर जाती है*)

नन्दिनी—केवल आ रहे हैं।

सलिल—उसी की प्रतीक्षा में हूं।

(*केवल आता है*)

केवल—चाचा जी, नमस्ते।

सलिल—(*तिनककर*) मुझ से चाचा जी मत कहो। मैं किसी का चाचा-वाचा नहीं हूं। (*केवल सहम जाता है*)

केवल—मैं डाक्टर भवन के पास जा रहा था। वह खिलौना मिल गया, सोचा आपको लौटा आऊँ।

(केवल नीचा सिर किये हुये जेब में हाथ डालता है। खिलौना जेब में अड़ जाता है। वह पुस्तकों को नीचे रखकर दोनों हाथों की सहायता से खिलौने को निकालता है। नन्दिनी उसकी ओर देखती रहती है। सलिल के चेहरे पर पहले कुछ हर्ष और तुरन्त ही विषाद आता है। फिर वह माथा टटोलने लगता है। सोचता है।' जब केवल खिलौना निकाल लेता है तब उसके चेहरे पर हर्ष या विषाद का कोई चिन्ह नहीं रहता। वह स्थिरता और शांति के साथ खिलौने को ले लेता है। उसको लेकर फिर कुछ सोचने लगता है। एक उठी हुई निश्वास को दबाता है। थोड़ा सा टहलता है। फिर यकायक केवल के सामने आ जाता है)

सलिल—तुम इसको उठा क्यों ले गये थे ?

(केवल नन्दिनी की ओर बिना किसी संकल्प के देखकर सलिल के प्रति दृढ़ दृष्टि करता है। नन्दिनी चली जाती है)

केवल—मैं उठाकर नहीं ले गया। नमालूम कैसे चला गया। आप शायद विश्वास नहीं करेंगे। मैं चोर नहीं हूं। यहाँ से लेजाकर ऐसी जगह रख दिया कि याद ही नहीं रही, यद्यपि मैंने इसको अपने घर पर सिगरिट की खाली डिबियों के बीच में पाकर उसी समय लौटाने की इच्छा की थी।

सलिल—जब तुमने इसको मेरी मेज़ पर पहली बार देखा तब बहुत पसन्द किया था ?

केवल—बहुत पसन्द किया था ? मैं ललचा गया था।

सलिल—इस उत्तर पर पुलिस तुमको जेलखाने भिजवा देती, पर मैं सोलह आना विश्वास के साथ कहता हूँ कि तुम चोर नहीं हो, बिलकुल निर्दोष हो। *(केवल हर्ष मग्न हो जाता है)* तुमको किसी ने इसके लौटाने के लिये कहा था ?

केवल—कहा था और रोका भी था, और फिर मेरी मां सहमत हो गईं कि लौटा आओ।

(सलिल उछल पड़ता है। फिर थोड़ा सा टहल कर स्थिर हो जाता है)

सलिल—तुम्हारी मां ने रोका था और वही फिर लौटाने के लिये सहमत हो गईं ? उन्होंने इसको देखा ? देखकर क्या कहा था ?

केवल—(*उसी हर्षमग्नता के साथ*) कुछ कष्ट में पड़ गईं, फिर प्रसन्न हो गईं। उसी घड़ी से मुझको बहुत प्यार करने लगीं। आपका नाम सुनकर किसी चिन्ता में पड़ गईं। यह खिलौना उनकी आकृति से कुछ मिलता है। शायद इसलिये। इसीलिये शायद वह इसको रख लेना चाहती थीं।

सलिल—(*आश्चर्य चकित स्वर में*)उनकी आकृति से मिलता है ?

केवल—जी हां, कुछ कुछ।

(सलिल का आश्चर्य कम हो जाता है। वह फिर स्थिरता लाभ करने का प्रयत्न करता है)

सलिल—तुम्हारी मां बीमार रहती हैं ? तुम्हारे पिताजी ने बतलाया था एक दिन। क्या बीमारी है ?

केवल—उनकी बीमारी को तो भगवान जानें या आप डॉक्टर लोग, पर मेरे पिताजी उनको बीमारियों का घर कहा करते हैं।

सलिल—(*उत्साह के साथ*) मैं उनको अच्छा करूँगा—मैं उनको चङ्गा कर सकता हूँ।

केवल—उस दिन तो आपने इलाज करने से इनकार कर दिया था !

सलिल—उस दिन मैं रोग-ग्रस्त था, यक्ष्मा का घर। अब वैसा नहीं हूं। शायद मर जाऊँ, परन्तु मरने के पहले डाक्टर भवन को और

तुम्हारी मां को स्वस्थ करके ही चैन लूँगा। (*सोचते हुये थोड़ा सा टहलकर*) ओह! इस गाँव का नाम तालगांव है !! (*केवल अकचकाता है*) तालगांव !!! मैं समझता था कालगांव !!!! युग बीत गये तब सुना था। फिर ? फिर ? ऐं ! (*हँसकर*) हां—हूँ—ठीक भी है, सब ठीक ही है। तुम्हारी मां बिलकुल अच्छी हो जायँगी।

केवल—धन्यवाद डाक्टर साहब, मैं अब डाक्टर भवन के पास पढ़ने जाऊँ ?

मलिल—ठहरो--देखो, तुम मेरे पास भी पढ़ने आ सकते हो। मैं तुमको पढ़ाऊँगा।

केवल—आप तो उस दिन कहते थे कि पढ़ाने-पढ़ाने की इल्लत नहीं पालता हूं।

मलिल—(*स्नेह के साथ*) तुमको पढ़ाऊँगा। तुम मुझसे चाचा जी कहा करो।

(*केवल मुस्कराता है। पुस्तकों को नीचे से उठाकर हाथ में ले लेता है*)

केवल—(*मुस्कराते हुये*) कहीं आप फिर नाराज़ न हो पड़ें। होम करते करते मेरा हाथ जल उठे।

मलिल—(*हँसकर*) तुम जैसे नटखट लड़कों को पढ़ाने में मुझको आनन्द आयगा। मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँगा। नटखट होते हुये भी तुम बहुत सच्चे हो, निर्भीक और दमदार।

केवल--मैं आपसे पढ़ूँगा और चाचाजी ही कहा करूँगा। आज से ही आरम्भ न करूँ ?

मलिल (*स्नेहपूर्वक*) हां हां, मेरे पास भी पढ़ो और भवन के पास भी। तुम्हारे दो मास्टर रहे। (*सावधानी के साथ*) तुमकया दो

है इस खिलौने को देखकर तुम्हारी मां की बिलकुल पहली दशा क्या हुई थी ?

केवल—रो पड़ी थीं—उनके आँसू झर पड़े थे। वह बराबर सोच रही होंगी कि मैं खिलौने को चुरा लाया।

(सलिल हिल उठता है। दूसरी ओर मुँह फेरकर देखने लगता है। उसकी सांस वेग के साथ चलती है। वह अपना नियन्त्रण करके केवल के सम्मुख हो जाता है)

सलिल—*(दृढ़ता की कोशिश करते हुये कम्पित स्वर में)* केवल, मैं तुम्हारी मां का इलाज करूंगा। मैं जितना बड़ा डाक्टर हूं तुम लोग नहीं जानते। *(अपने घमण्ड पर लज्जित होकर)* मुझको विश्वास है मैं उनको बिलकुल अच्छा कर दूँगा, अपने पिता जी से कह देना। *(सावधानी के साथ)* पर देखो खिलौने की बात उनसे मत कहना।

केवल—मैंने उनको बतलादी। वह भी मुझको चोर समझते थे।

सलिल—*(अपनी सावधानी को हँसी के भीतर छिपाकर)* वह बतला दिया सो तो तुमने अच्छा किया *(सावधानी से फिसल कर)* पर आज की मेरी अपनी कोई बात मत कहना।

केवल—*(बिना सोचे समझे)* नहीं कहूंगा। *(वह हर्ष मग्न है)* मां ने भी कहा था कि हमारी कोई बात मत कहना सो मैंने कहा ही क्या है ?

(नन्दिनी आती है)

नन्दिनी—*(पहले हर्षमग्न केवल को देखती है, फिर हँसते हुए सलिल पर आँख घुमाती हुई)* डाक्टर भवन कहते थे कि बैसाखी के भी सहारे सड़क पर चलने की समर्थता नहीं रखता हूं, इसलिये आपको ही कष्ट करने के लिये विनय की है।

सलिल—*(उत्साह के साथ)* मैं नहीं जाऊँगा, नहीं जाऊँगा, नहीं जाऊँगा। *(उसके स्वर में प्रखरता बिलकुल नहीं है)* केवल, *(केवल स्नेह के स्वर से मुग्ध हो जाता है)* तुम तो लाओ किसी तरह पुराने गुरू को अपने नये गुरू के पास।

केवल—*(बिना सोचे समझे)* अभी लीजिये चाचाजी। *(सलिल स्वीकृति का सिर हिलाता है। केवल कुछ सोचकर)* मैं उनको कोई धोखा नहीं देना चाहता। वैसे किसी मरते हुये रोगी को देखने का बहाना करके सड़क पर निकाल लाता, परन्तु *(सोचकर और अपने को दूसरी तरह समर्थ पाते हुये)* आपके हठ को बढ़ा बढ़ाकर कहूंगा तो वह आ जायँगे। मैं उनको सहारा देता आऊँगा।

सलिल—बिलकुल नहीं। *(हँसकर)* तुम बैसाखी को किसी बहाने से खींचकर उनको पटक देना। नटखट हो न।

केवल—ऐं !
नन्दिनी—ऐं ! } *(एक साथ)*

केवल—*(नन्दिनी की ओर संकेत करके)* मैं इनको भी साथ लिये जाता हूं।

सलिल—ले जाओ। पर बिना किसी सहारे के उनको ले आओ तब बात है। गिर पड़े तो बहुत अच्छा होगा। वह प्रयत्न करने से डरते हैं। गिरकर जब उठने का प्रयास करेंगे, उनका डर छूट जायगा और वह फिर अधिक प्रयत्न करने से नहीं चूकेंगे।

(वे दोनों कोई उत्तर नहीं देते। केवल हँसता हुआ जाता है और नन्दिनी मुस्कराती हुई। सलिल मुस्कराता हुआ टहलता रहता है। कुछ सोचता जाता है और कभी दाहिने हाथ की, कभी बाएं हाथ की तर्जनी द्वारा हवा में कुछ संकल्प विकल्प प्रकट करता है)

चौथा दृश्य

[स्थान—तालगांव का सकरा बेढंगा मार्ग जो भवन के मकान को सलिल के मकान से जोड़ता है। समय दिन का तीसरा पहर। दिन होते हुये भी स्त्रियाँ थालों में दिये जलाये हुये पुरुषों के साथ गाती हुई आती हैं। नृत्य भी होता आता है। सारंगी, मृदङ्ग और मजीरे साथ में। उस भीड़ का प्रमुख पुत्तूलाल है। चिमटानन्द भी साथ में है। वह प्रमुखता के प्रयास में भीड़ में से आगे आना चाहता है। स्त्रियों के जमघट के कारण नहीं आ पाता है, क्योंकि प्रबन्ध और संगठन की धुन में उनके पीछे रह गया है]

गीत

मालिनियाँ फुलवा, ल्याओ नदन वन के।
ऊँची नीची घटियाँ डगर पहार,
तहाँ वीरा लँगुरा लगाई फुलवार।
मालिनियाँ फुलवा········
छोटी सी मालिनियाँ, लम्बे उके केस,
फुलवा बीनें पुरुष के भेस।
मालिनियाँ फुलवा········
बीन बीन फुलवा लगाई बड़ी रास
उड़ गए फुलवा रह गई बास।
मालिनियाँ फुलवा········

(चिमटानन्द चिमटा लिये हुये आगे आता है)

चिमटानन्द—भाइयो, बहिनो, नियमपूर्वक काम करो। गड़बड़ मत करो।

स्त्रियों के बीच में से देवकी—अरे तो क्या यहाँ लिक्चर दोगे? आ गए हल्ला मचाने!

(पुत्तूलाल प्रसन्न होता है। चिमटानन्द, स्त्रियों पर आखें तरेरता है। 'हटो', 'हटो', 'निकल जाने दो', कहता हुआ आगे आगे केवल, पीछे बैसाखी पर भवन आता है। उसके पीछे नन्दिनी। उनको देखकर चिमटानन्द का पारा गरम हो जाता है)

चिमटानन्द—जनता को उसके मार्ग पर से हटाने का किसी को भी अधिकार नहीं है चाहे वह कोई डाक्टर हो चाहे किसी सेठ-वेट का लड़का।

भवन—*(बैसाखी के सहारे नन्दिनी की सहायता से आगे आकर)* बड़ी कृपा होगी आपकी और आपकी भीड़ की।

चिमटानन्द—इसको तुम भीड़ कहते हो! हमारी संगठित जनता को केवल भीड़ !!

भवन—स्वामी जी, मैं बीमार आदमी हूं। डाक्टर सलिल के पास जा रहा हूं।

देवकी—*(चिल्लाकर)* यह जो हमारे गाने बजाने से चिढ़ता है और बन्द करवा करवा देता है। जब से ये डाक्टर हमारे गाँव में आये हैं तभी से रोगों का उत्पात बढ़ गया और लोग मरने लगे!

केवल—रोग और मौत सब इन स्वामी जी के हाथ में हैं। *(कुछ स्त्रियाँ हँस पड़ती हैं। चिमटानन्द विक्षिप्त सा दिखलाई पड़ने लगता है)* कृपा करो, हम लोगों को निकल जाने दो।

चिमटानन्द—अभागे! अबकी बार तू बीमार पड़ेगा और तेरे और तेरे पुरखों के पापों को मौत बटोर कर ले जायगी।

(भीड़ इकट्ठी होती है और शोर होता है। सेनीटरी इन्सपैक्टर अपने कुछ साथियों के संग आता है। उन लोगों के हाथों में कुओं के स्वच्छ करने की दवाइयां और बाल्टियां हैं)

सेनीटरी इन्सपैक्टर—हटो, भीड़ मत करो। भीड़ करने से बीमारी बढ़ती है। हटो, हटो हमको कुएँ साफ़ करने के लिये जाना है।

केवल—अब इनको रोको तब जानें।

चिमटानन्द—तुम लोग आगये धर्म में विघ्न डालने! कुओं में दवाई नहीं गिर सकेगी इस समय।

पुत्तूलाल—कुओं में दवाई डालने से खांसी ज्वर की बीमारी फैलेगी।

सेनीटरी इन्सपैक्टर—तुमको किसने बतलाया यह? हटो, हमारे कर्तव्य में बाधा मत डालो। (*अंग्रेज़ी शब्द का प्रयोग करके आतङ्क बिठलाने की इच्छा से*) हमारी ड्यूटी में रोक-टोक मत करो वरना मुक़द्दमा चल जायगा। हटो।

चिमटानन्द—बड़ा आया ड्यूटी वाला! जनता का राज्य है, जानता है! धर्म के काम में बाधा डाली तो होश ठीक कर दिये जायँगे।

पुत्तूलाल—कुओं में दवाई तो नहीं डालने देंगे। जिस गाँव में दवाई गिरी उसी में खाँसी और ज्वर आया।

सेनीटरी इन्सपैक्टर—(*दबे हुए क्रोध के स्वर में*) कहां? कब?

पुत्तूलाल—दवाई डालने के ठीक तीन महीने पीछे, कहां कहां बतलावें? सब जगह।

चिमटानन्द—(*भीड़ की प्रमुखता को अपने ही हाथों रखने की प्रेरणा से*) कहो सब लोग यह सरकारी नौकर बड़ा या हम!

भीड़ के लोग—आप, आप।

केवल—(*सेनीटरी इन्सपेक्टर से धीरे से*) दब गये! डर गये!!

(*से० इन्सपेक्टर तमक उटता है। अपने साथियों की ओर देखता है*)

चिमटानन्द—कुओं में दवाई गिरे या न गिरे?

भीड़ के लोग—नहीं गिरेगी ! नहीं गिरेगी !!

चिमटानन्द—राज्य अपना या सरकारी नौकरों का ?

भीड़ के लोग—अपना ! अपना !!

सेनीटरी इन्सपैक्टर—(*अपने साथियों से ऊँचे स्वर में*) हटाओ, इन लोगों को एक तरफ़ और चलो अपना काम करने !

(वे लोग भीड़ को हटाने की कोशिश करते हैं। धक्कंधक्का हो पड़ता है। सेनीटरी इन्सपैक्टर गिरा दिया जाता है। नर-नारी भाग खड़े होते हैं। केवल मौज के साथ एक तरफ़ खड़ा देखता है। नन्दिनी भवन को बचाने का प्रयत्न करती है, परन्तु वह गिर पड़ता है। भीड़ भागती है। उनके पीछे झाड़ पोंछकर उठा हुआ सेनीटरी इन्सपैक्टर और उसके संगी जाते हैं। चिमटानन्द उनके पीछे पीछे 'नियमसंयम से काम लो ! 'अनुशासन से काम लो !!' कहता हुआ जाता है। लोग अपने मकानों से बाहर नहीं निकलते। वहां केवल भवन, नन्दिनी और केवल रह जाते हैं। केवल चिमटानन्द को बेतहाशा जाते हुये देखकर हँसता रहता है। नन्दिनी भवन को उठाने की कोशिश करती है। वह उसकी सहायता नहीं लेना चाहता।)

भवन—ठहरो बेठी, मैं इतना सड़ियल नहीं हूं।

(वह प्रयास करके खड़ा हो जाता है। केवल उसके प्रयास को देखकर उसके निकट आता है जैसे नींद से चौंक पड़ा हो। परन्तु उसके आने के पहले ही वह बैसाखी को उठा लेता है और तनकर खड़ा हो जाता है। उसी समय नीरा घबराहट के साथ आती है। उसको देखकर भवन बैसाखी को बगल में लगा लेता है।)

केवल—आपको लगी तो नहीं ?

नीरा—पिताजी !

भवन—घबराओ मत। (मुस्कराकर) कोई बात नहीं। तुम चली क्यों आईं ! मैं तो घर पर ही बने रहने के लिये कह आया था।

नीरा—हल्ला गुल्ला सुनकर दौड़ आई कि कहीं आप पर कोई संकट न आ गया हो। (*सांस साधने के प्रयत्न के साथ*) क्या आप गिर पड़े थे ? हे राम।

भवन—(*उसी प्रकार मुस्कराता हुआ*) गिरा तो अवश्य था, परन्तु खड़ा हो गया। अपने आप खड़ा हो गया ! मन में प्रतीति हो रही है कि किसी दिन बिना बैसाखी के ही चल फिर सकूंगा।

(*केवल सहारा देने के लिये और भी निकट आता है*)

भवन—नहीं, नहीं। मैं अब अपने प्रयत्न से ही चलूंगा। तुम घर जाओ नीरा। मैं डाक्टर सलिल से बात करके आता हूं।

नीरा—(*उसके कन्धे से लिपटकर*) मैं तो साथ चलूंगी। घर पर ताला डाल आई हूं।

भवन—अच्छा, चलो।

(*वे सब धीरे धीरे जाते हैं*)

पांचवां दृश्य

[*स्थान—उसी गांव में सलिल का कमरा। सलिल भवन, नन्दिनी, नीरा और केवल कुर्सियों पर बैठे हैं। सलिल बीच की कुर्सी पर है। उसके एक ओर केवल है, दूसरी ओर भवन और उसके बाद नीरा तथा नन्दिनी। वे सब इस भांति बैठे हैं कि बिना प्रयास के एक दूसरे का मुँह देख लें। समय—सन्ध्या के पहले*)

सलिल—प्रयत्न करने में आगये न डाक्टर आप ! हिम्मत हार जाते तो फिर बार बार हारते रहते, अब बार बार जीतते रहोगे।

नन्दिनी—डाक्टर साहब गिर पड़े थे।

सलिल—(*आश्चर्य के साथ*) सचमुच ! (*केवल की ओर देखते हुये मुस्कराकर*) तुमने मेरी आज्ञा का इतना लम्बा चौड़ा पालन कर डाला !!

(नन्दिनी और नीरा प्रश्नसूचक दृष्टि से केवल की ओर देखती हैं)

केवल—(*हँसकर*) मैंने कुछ नहीं किया, चाचाजी। डाक्टर साहब को शायद भीड़ भड़क्के ने गिरा दिया। मैं तो उस स्वामी चिमटानन्द की भालू गति को देख रहा था, बिलकुल भालू की तरह हाथ पैर फेंक रहा था वह।

(नन्दिनी कठिनाई के साथ हँसी को रोक पाती है। नीरा सहानुभूति की हँसी हँसना चाहती है, परन्तु उसकी आकृति में प्रश्न अब भी है)

भवन—आपकी आज्ञा कैसी डाक्टर ? पर आपके उत्तर के पहले मैं सुनाये देता हूं कि क्या हुआ था। सेनीटरी इन्सपेक्टर ने रुकावट के साथ काम नहीं किया। भीड़ बौखला गई। धक्का धक्की में मैं गिर पड़ा। उठ बैठा और आपके पास आ गया।

सलिल—मुझको हर्ष है आपको अपनी भीतरी शक्ति का कुछ पता तो लगा। मैंने केवल से कहा था कि अपने पुराने गुरूजी को किसी प्रकार लाओ। मार्ग में बैसाखी को किसी तरह भी छीन लेना और तुम्हें गिर जाने देना फिर बिना किसी सहायता के उठने देना। बस यह कहा था।

भवन—(*हंसकर*) खूब कहा था ! और क्या कहते ? पर केवल मुझको बेदर्दी के साथ कदापि न गिरने देता। भीड़ वालों ने तो कोई भी रियायत नहीं की।

(नीरा सलिल को कुछ कठोर दृष्टि के साथ देखती है)

सलिल—कुछ ही दिन में तुमको बिना बैसाखी के चलना पड़ेगा और उसके उपरान्त दौड़ना भी पड़ेगा। उसके पीछे फिर मेरा चाहे जो कुछ हो जाय।

(नीरा प्रसन्न होती है। नन्दिनी उदासी के साथ सलिल की ओर देखती है। केवल की वृत्ति प्रश्नसूचक है)

भवन—(*व्यङ्ग के स्वर में*) आपने डाक्टर, अपने चेहरे को आईने में देखा ? बिलकुल छीज गये हो ! दुबले भी बहुत हो गये हो !! तौला अपने को ? पर यहाँ तौलने की मशीन कहाँ रखी है।

(नन्दिनी का चेहरा विनोदमय होने लगता है)

सलिल—मुझको स्वयं आश्चर्य है, मैं अच्छा हो रहा हूं !!! *(शरीर पर हाथ फेरकर)* ज़रूर !!!!

भवन—मेरे इलाज की धुन में आप अपने रोग को, अपनी व्यथा को, भूल गये, बस इतनी तो बात ही है।

सलिल—*(सोचते हुये)* शायद ऐसा हुआ हो। *(तुरन्त सतर्क होकर)* नहीं यह बात नहीं है। आपने गाने नाचने में अपने को भुलाने का प्रयत्न किया, कितने सफल हुए ? इस व्यायाम से आपको जितना लाभ हुआ उससे अधिक रोग के पहले के मानसिक संघर्ष का सही इतिहास ढूँढ़ लेने पर आपको हुआ है।

नीरा—*(सहसा)* वह क्या पिताजी ? *(फिर सहम जाती है)*

(केवल और नन्दिनी उत्सुक है)

भवन—बीमार पड़ने के कई महीने पहले मैंने एक मरणप्राय रोगी को दमदिलासा दी और बहुत फ़ीस ली। वह मर गया। मुझको उसकी ठेस सी लगी। फिर *(सलिल के प्रति)* नीरा की माँ का देहान्त हो गया। यद्यपि वह बहुत पहले से बीमार थी, परन्तु मैंने उसके देहान्त को अपने पापों का परिणाम समझा। तभी से मन्दाग्नि का शिकार

हुआ और फिर गठिया का। *(इस व्याख्या से नन्दिनी को बहुत सन्तोष नहीं होता। नीरा तटस्थ सी रहती है। केवल की जिज्ञासा बढ़ती है)*

केवल—*(सलिल से)* और चाचाजी आप में परिवर्तन कैसे हुआ ?

सलिल—खिलौने की खोज से। *(केवल का चेहरा खिलौने से अपना सम्बन्ध अवगत करने के कारण तमक जाता है)*

केवल—वह तो मैंने आप को लौटा दिया। कारण भी विस्तार पूर्वक बतला दिया था। मेरी मां ने उसको—

सलिल—तुम कुछ मत बतलाओ, मैं इन सबको समझाये देता हूं। खिलौने को केवल अनजाने ले गया। *(सब लोग अविश्वास की दृष्टि से देखने लगते हैं)* बिना सचेत इच्छा के भी लोग कैसे काम कर डालते हैं यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं। पर यह नित्य होता रहता है ! अपने अपने जीवन की घटनाओं में लोग असली कारण को ढूँढ़ें तो समझ में आ जायगा। खिलौने के मिल जाने से नहीं, खिलौने की मानसिक खोज के कारण और *(भवन से)* तुमको स्वस्थ कर डालने की दृढ़ प्रेरणा से मैं अच्छा हो रहा हूँ। *(नन्दिनी से)* और नन्दिनी ने मेरा सिगरिट पीना छुटाया उससे। *(हँसकर सबकी ओर देखते हुये)* और जब इन्होंने थर्मामीटर तोड़ डाला, तब उसके वास्तविक कारण की तलाश से असल में मैं सजग हुआ।

भवन—आप इस शास्त्र के पारंगत हैं, फिर भी आप यक्ष्मा के रोग से कैसे दबा दिये गये ? आप कहते हैं कि यक्ष्मा मानसिक संघर्षों के कारण अधिकांश लोगों को हो जाता है। आपने अपने को क्यों नहीं बचाया ?

सलिल—क्योंकि मनोविज्ञानी भी बेवकूफ़ हो सकते हैं, क्योंकि मैंने मरने की ठान ली थी न कि अपने को बचाने की। इसीलिये सेना

में भर्ती हुआ था, परन्तु थोड़े दिन ही रहा। इसलिये यक्ष्मा ने दबा लिया, क्योंकि यक्ष्मा मेरे स्वभाव के बिलकुल अनुकूल बैठ गया।

(नन्दिनी चैन की सांस लेती है। केवल का कुतूहल और बढ़ जाता है। नीरा विचारमग्न है)

केवल—अब क्या करेंगे डाक्टर साहब आप ?

मलिल—(*हँसकर*) चाचाजी कहो, चाचाजी। अब पहले तुम्हारी मां को स्वस्थ करूँगा, फिर गाँव की बीमारियों से लड़ूँगा। तुम सब मेरी सहायता करना इस काम में। केवल को हम दोनों पढ़ाते भी रहेंगे, फिर इसको डाक्टरी पढ़ने के लिये तैयार करेंगे।

भवन—(*हँसकर*) काफी छोटा कार्यक्रम है !

केवल—मैं भी कोई ऐसी क्रिया सीखना चाहता हूं जिसकी सहायता से इस स्वामी चिमटानन्द का कुछ पक्का इलाज कर सकूँ—

मलिल—(*टोककर*) वह गाँव का नेता है। इन लोगों की नेतागिरी में दखल मत दो और चाहे जो कुछ करते रहो। बस।

भवन—(*मुस्कराकर*) डाक्टर, आप क्या मुझको सचमुच इसीप्रकार अनचीते ही किसी दिन दौड़ा भी देंगे ?

मलिल—अधीर मत होओ, कार्यक्रम को मत पूछो, आशा के साथ काम करो।

भवन—आशा ! आपके जर्मन दार्शनिक ने तो आशा के लिये कुछ और कहा है !

मलिल—(*व्यङ्ग की मुस्कराहट के साथ*) शास्त्रों के सम्बन्ध में फिर वही राष्ट्रीयता ! (*कुछ सोचकर*) परन्तु शायद नेशे गलत हो।

भवन—शायद ! बिलकुल ग़लत है ! मैं तो आन्तरिक शक्तियों की निरन्तर प्रतीति को आशा का नाम देता हूं !

मलिल—(*एक दम*) ऐं ! क्या ? हूं। मैं समझ गया। सोचूँगा, अच्छा ख्याल है।

भवन—अब मैं जाऊँ डाक्टर ?

सलिल—हां, परन्तु बिना किसी दूसरे के सहारे के। साथ में आपके ये सब रहेंगे अवश्य।

(वे सब जाते हैं। सलिल धीरे धीरे रटता हुआ सा कहता है—आन्तरिक शक्तियों की निरन्तर प्रतीति है आशा। हुं।

(यवनिका)

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—उसी गांव में सलिल के मकान का कमरा। कमरे में मेज़ के आसपास तरतीब के साथ पांच कुर्सियां रखी हुई हैं। मेज़ रंगीन झालरदार कपड़े से ढकी हुई है और उस पर गुलदस्ते रखे हुये हैं। समय—भोर के कुछ पीछे। नन्दिनी आती है और सजी हुई मेज़ को और भी अधिक सजीली बनाने में लग जाती है। कुर्सियों को भी और अधिक तरतीब देती है। उसी समय सलिल आता है। उसके चेहरे पर पिछली बीमारी की कुछ ही रेखाएं शेष रह गई हैं।]

सलिल—(घड़ी को देखकर) डॉक्टर भवन ने काफ़ी देर लगादी! सात बजे आने को कहा था न?

नन्दिनी—जी, धीरे धीरे पैर रखते हुये आ रहे होंगे।

सलिल—यहां से कुछ दूर तो रहते नहीं हैं। बैसाखी छोड़ दी, परन्तु अभी डर को नहीं छोड़ा है। कुछ आलसी भी हैं। (टहलने

लगता है। नन्दिनी को आहट मिलती है, सलिल को भी। वह रुक जाता है)

नन्दिनी—शायद आ रहे हैं।

सलिल—उनको आज इसी कमरे में दौड़ाऊँगा।

(नन्दिनी कमरे के दरवाज़े तक जाकर लौट पड़ती है)

नन्दिनी—सेठ सेंतूचन्द और केवल आ रहे हैं।

सलिल—हूं—अच्छा।

(सेंतूचन्द और केवल आते हैं। वे परस्पर अभिवादन करते हैं)

सेंतूचन्द—आज आप केवल की मां को देख लीजिये बड़ी कृपा होगी। वैसे प्रायः गुमसुम बनी रहती है, परन्तु जब पागलपन का दौरा होता है, तब बहुत बक झक उठती है।

सलिल—बैठिये। नन्दिनी, तुम डाक्टर भवन को ले आओ।

(नन्दिनी जाती है, वे सब बैठ जाते हैं)

सेंतूचन्द—एक से दो अच्छे। आपने अच्छा किया जो डाक्टर भवन को बुला लिया। अब तो वह खूब चलने फिरने लगे हैं।

सलिल—बिलकुल नहीं—मैंने उनको आपके यहां चलने के लिये नहीं बुलाया है। इस कमरे में दौड़ने के लिये बुलाया है।

(केवल मुस्कराने लगता है)

सेंतूचन्द—*(थोड़ी सी मुस्कराहट के साथ)* आपके उपचार की क्रियाएँ विलक्षण हैं। न जानें बिना दवादारू के कैसे अच्छा कर देते हैं मरीज़ को! *(इस चाटुकारी में केवल को भी मिला लेने के लिये उसकी ओर देखता है)*

केवल—चाचा जी गांव में फैली हुई बीमारी से भी लड़ने का आयोजन कर रहे हैं।

सेंतूचन्द—केवल की मां के लिये शायद कुछ दवा मंगानी पड़े, क्योंकि वह कसरत, व्यायाम, तो कर नहीं सकती। आप आज देखलें तो शहर से जो दवा कहेंगे मंगवाली जायगी—शहर यहां से दूर बहुत है और सवारी कोई है नहीं।

सलिल—(*खड़े होकर*) देखिये सेठ जी, मैं एक साथ दो मरीज़ों से ज़्यादा को हाथ में नहीं लेता—

सेंतूचन्द—(*उतावली के साथ टोककर*) ठीक तो है एक डाक्टर भवन और दूसरी केवल की मां—

सलिल—एक मैं खुद हूं और दूसरे डाक्टर भवन, (*कुछ सोचकर और झटका सा खाकर*) पर मैं अब अच्छा हो रहा हूं। (*बैठकर*) इसलिये केवल की मां को भी देखूंगा।

सेंतूचन्द—(*उत्साह के साथ*) यहां उनको ले आता, तो कोई बात न थी पर चूंकि आप मेरे घर पर चल कर देखेंगे, इसलिये आपको फ़ीस भी दूंगा।

(*केवल दूसरी ओर देखने लगता है*)

सलिल—ओफ़! फ़ीस !! फ़ीस !! फ़ीस !!! कितनी फ़ीस देंगे आप? (*केवल चौंक पड़ता है। सेंतूचन्द अनायास उँगलियों पर कुछ गिनने लगता है*) मुझको सोना चांदी में फ़ीस नहीं चाहिये! मैं चाहता हूं जो कुछ कहूं उस तरह से केवल की मां अपना कार्य-क्रम बनावें और आप जनसेवा के काम में मेरी सहायता करें। (*केवल प्रसन्न है*)

सेंतूचन्द—(*अनायास ही*) बिलकुल। मैं देवी जी का मन्दिर बनवा रहा हूं। (*केवल का मन गिर जाता है*)

सलिल—(*कुर्सी छोड़ कर टहलते हुये*) मन्दिर, मन्दिर! कितने मन्दिर और बनेंगे अब? (*सेंतूचन्द सहम जाता है। केवल प्रसन्न*

हो जाता है) गाँव के लोग यों ही काफ़ी मूर्ख हैं, उनके अन्ध विश्वासों से लाभ उठाने और उनको मुट्ठी में कसे रहने का अच्छा उपाय है यह !

सेंतूचन्द—(*अनुनयके साथ*) डाक्टर साहब, आप विद्वान हैं। हम लोगों से चाहे जो कुछ कहलें, परन्तु गाँव वालों के लिये कहते रहने के कारण वे क्षुब्ध होगये हैं—यों ही बिचारे इस बीमारी के कारण बहुत व्याकुल हैं।

सलिल—और आप इस बीमारी को मन्दिर बनाकर दूर करेंगे ! और, वह चमीटानन्द या समेटानन्द—क्या है जी—वह अपने व्याख्यानों से बीमारी को दूर करेगा !!

(*केवल हँस कर इकदम चुप होजाता है*) हुँ। कितना अन्ध विश्वास। कितनी मूढ़ता !!

(*नीरा और नन्दिनी के साथ भवन आता है। अब वह बैसाखी नहीं लगाये हैं, परन्तु एक घुटने की लंग के कारण लंगड़ाता हुआ चलता है। वे सब परस्पर अभिवादन करते हैं*)

भवन—क्षमा करना डाक्टर, मुझको देर होगई—

सलिल—(*बैठ कर*) कोई बात नहीं—जानता हूँ आप आलसी हैं और दीमक की तरह रेंग कर चलते हैं—

भवन—(*गंभीर होकर*) यह बात नहीं। गाँव के कुछ लोग आये थे। कहते थे कि कुओं में दवा मत डलवाओ, उससे दुर्गन्धि बढ़ती है और मक्खियों का संहार होता है और भी बहुत से कीड़े मकोड़े मर जाते हैं,—और कहते थे कि डाक्टर सलिल गाँव वालों को कोसते रहते हैं तथा धर्म को गालियां देते रहते हैं। वे लोग हमलोगों का बायकाट करने की सोच रहे हैं। उन्हीं लोगों से बात करने में, उलझ गया था। (*नीरा और नन्दिनी चिन्तित है। सेंतूचन्द का*

चेहरा गिर जाता है। केवल भौंहें तानता है और होठ से होठ पटाता है)

सलिल—ह ! ह !! ह !!! ह !!!! (*अट्टहास करने के उपरान्त*) यह सब उस स्वामी का काम होगा ! उसका चिमटा चल रहा होगा !! कैसी दिन उसको आँधे सपाटे भरने होंगे। ओफ़ ! ओफ़ !! पेट में बल पड़ गये।

भवन—ज़रा गम्भीरता के साथ सोचिये डाक्टर।

सलिल—(*गंभीर होकर*) बिलकुल। जिसको युद्ध और क्षय न मार सका उसको स्वामी जी महाराज का बायकाट नहीं मार सकता। अबतो हम लोग रोग, अन्धविश्वास और नासमझी का और भी ज़ोर के साथ मुक़ाबला करेंगे। तुम में हिम्मत है ! (*केवल कुछ कहने के लिये आतुर है*)

भवन—(*दृढ़ स्वर में*) मुझको अपने से कभी अलग मत समझो। आपही ने मुझको बचाया।

सलिल—उसका मूल्य नहीं चाहता। आपके निज के लिये भी वह सब बहुत अच्छा है। तुम क्या कहते हो केवल ?

केवल—(*खड़े होकर उत्साह के साथ*) बिलकुल तैयार हूं चाचाजी। अपने कुछ साथी भी तयार करूँगा। सारा गाँव चिमटा-नन्द के साथ नहीं है।

सेंतूचन्द—(*कुछ सकपका कर*) रामटहल भी काम करेगा।

सलिल—इनकी आँख जब जायगी तब नौकरों पर जायगी ! लो, सेठजी, यही मेरी,—हम लोगों की,—फ़ीस है, केवल अब हमारा होकर रहेगा।

सेंतूचन्द—(*निर्बल स्वर में*) मैंने इनकार कब किया ?

नीरा—मैं भी काम करूँगी।

नन्दिनी—मैं भी।

सलिल—अवश्य। डाक्टर, वे लड़कियां जो आपके यहां गाना सुनाने और पुरस्कार पाने के लिये आया करती थीं उनका क्या हाल है?

नीरा—उनमें से अधिकांश मेरे साथ हो जायंगी।

भवन—उनके माता पिता?

सेंतूचन्द—(*कुछ प्रबल स्वर में*) हां, उनके माता पिता?

नीरा—उनके माता पिता की बाधा को मैं हल कर लूँगी। केवल ने कहा न कि सब का सब गाँव मूर्ख नहीं है।

सलिल—यह प्रमाणित हो जाय तो मुझको आश्चर्य होगा।

केवल—जिनके माता पिता उनको डाक्टर साहब के यहां आने से मना नहीं करते थे, उनमें हिम्मत अवश्य होगी।

सलिल—तो डाक्टर, सबसे बड़े विघ्न, हमारे कार्य-क्रम में, अब आप हैं। (*भवन चकित होता है*) आप मेरे कमरे में एक बार तेज़ी से चलो और दूसरी बार दौड़ लगादो। मैं हर्ष के मारे उस स्वामी के विरुद्ध उठे हुये अपने रोष को कोप-भवन में से बाहर निकाल दूंगा।

भवन—(*हँसते हुये*) पर यह बिचारा भवन तो गिर पड़ेगा (*नीरा उत्सुक है*)

सलिल—उठो, खड़े होओ। नहीं तो मैं अपने इन तीनों स्व सेवकों को कोई बिकट आज्ञा दूंगा।

(*वे तीनों हँस पड़ते हैं। सेंतूचन्द अपनी पत्नी के कुछ इ प्रकार के इलाज का ध्यान करके चिन्तित हो जाता है*)

भवन—(*हँसते, सहमते और साहस करते हुये*) अ भाई। हठी हो और बड़े सनकी भी।

(भवन लंगड़ाते हुये तेज़ी के साथ चलता है और फिर थोड़ा सा दौड़कर हांफता हुआ कुर्सी पर आ बैठता है। सब प्रसन्न हैं)

भवन—(*हँसते हुये*) मार दिया जी !

सलिल—क्या हाल है ?

भवन—(*हाँफ को दबाते हुये*) सोचता हूँ शीघ्र ही दौड़ने योग्य हो जाऊँगा। (*कुछ रुक कर*) डाक्टर, सब प्रकार का गठिया तो इस तरह अच्छा हो नहीं सकता।

सलिल—कुछ प्रकार का तो अवश्य होसकता है, जैसे कुछ प्रकार का यक्ष्मा जैसा मेरा ठीक हो रहा है। (*सोचने लगता है*) सेठ जी, मैं अब आपकी पत्नी को देखूंगा। चलिये। चलोगे डाक्टर मेरे साथ ?

भवन—(*अलसाते हुये स्वर में*) चलिये।

सलिल—नहीं, आप घर जाइये। नीरा, इनको घर तेज़ी के साथ ले जाना।

(नीरा मुस्कराती हुई जाती है। भवन हँसता हुआ।)

सलिल—सेठ जी आप चलिये, मैं नन्दिनी से कुछ बात करके आता हूं।

(सेतूचन्द और केवल जाते हैं)

सलिल—तुम क्या अब भी समझती हो कि केवल खिलौने को चुरा लेगया था ? तुमको उस पर क्रोध भी था ?

नन्दिनी—अबतो नहीं समझती। और न अब क्रोध है।

सलिल—जब तक यहां से उठा न था, क्या तुम्हारा मन उस खिलौने के लिये ललचाया करता था ?

नन्दिनी—वह अच्छा लगता था, बस !

सलिल—वह खिलौना मैंने तुमको दिया। जैसे, और भी सब कुछ दूंगा। (*हँसकर*) तुमको सनद भी दूँगा। (*गंभीरता के साथ*) जानती हो तुमने केवल को चोर क्यों समझा था, तब भी, जब उसने खिलौना लौटा दिया? और क्रोध क्यों करती थीं? क्यों कि स्वयं तुम्हारा मन उस पर ललचाया हुआ था।

(*नन्दिनी सोचने लगती है*)

सलिल—अच्छा, एक बार उस खिलौने को देखलूँ। कुछ सनक ही है। फिर सेठ के घर जाऊँगा।

(*दोनों जाते हैं*)

दूसरा दृश्य

[स्थान—उसी गांव की एक सकरी गली जो बहुत गन्दी है और डाक्टरों के निवास से काफ़ी दूर है। समय—दिन। चिमटानन्द चिमटे को भूमि पर खड़काता हुआ आता है। मार्ग पर से कुछ पुरुष निकलते जाते हैं। वे डरे हुये हैं। डरकर चिमटानन्द को प्रणाम करते हुये शीघ्रता के साथ चले जाते हैं। कुछ छोटी लड़कियां उसको देखकर स्तम्भित खड़ी रह जाती हैं फिर चली जाती हैं]

चिमटानन्द—देखो जी, ए, क्या नाम है तुम्हारा?

(*एक पुरुष टोकने पर लौट पड़ता है*)

पुरुष—क्या आज्ञा है, महाराज?

चिमटानन्द—पूड़ी-मिठाई बनाने वाले बनिये से कह देना कि स्वामी जी ने आदेश दिया है पूड़ी-मिठाई मलाई-वलाई कुछ न बेचे।

पुरुष—कह दूँगा।

चिमटानन्द—उससे यह भी कह देना कि यदि मलाई रबड़ी बेचे ही तो एक रुपया सेर के भाव न बेचकर आठ आने सेर बेचे, आठ आने सेर।

पुरुष—बहुत अच्छा, कह दूँगा।

चिमटानन्द—और देखो वह सनीटरी इन्सपेक्टरा पुलिस को लेकर आने वाला है, कोई सबूत उसको न मिल पावे कि क्या हुआ था।

पुरुष—किससे कह दूँगा?

चिमटानन्द—कैसे लोगों से पाला पड़ा है! सबसे कह देना। मैंने कह दिया है। तुम अपने पड़ोसियों से कह देना।

(एक पुरुष और आता है। वह खड़ा हो जाता है। उसका भी चेहरा उदास है)

पहला पुरुष—कह दूँगा। मैं अब जाऊँ?

चिमटानन्द—*(दोनों से)* ठहरो। *(चिमटानन्द चिमटे के सहारे कमर को अड़ाये हुये खड़ा होकर)* देखो, ये जो दो परदेसी डाक्टर यहाँ आये हैं इनका बाईकाट किया जायगा। ये बहुत पाजी हैं। गाँव भर को गालियाँ देते रहते हैं। धर्म-कर्म की खिल्ली उड़ाते हैं, कुओं का पानी खराब करते हैं, अपना पैसा बनाने के लिये यहाँ आकर टिके हुये हैं—

दूसरा—वे तो बीमार होकर आये थे।

चिमटानन्द—चुप रहो। बीमार होकर आये थे, यहाँ का खाकर अच्छे होगये, अब पैसा बटोर कर यहाँ से जायँगे। यहाँ क्यों पड़े हुये हैं? कभी सोचा तुम लोगों ने?

पहला—जैसी आपकी आज्ञा हो।

चिमटानन्द—ये लोग बीमारियों को फैलायँगे, दुराचार बढ़ायँगे। विलायती भाषा, विलायती ढंग! ये कहाँ तक अपने होकर रहेंगे? इस तरह के पढ़े-लिखों और हम तुम सरीखे बेपढ़ों का (*जानता है कि वह बे पढ़ा नहीं है, परन्तु उन दोनों को प्रसन्न करने के लिये, अपनी विद्या का आतङ्क बिठलाने के लिये, अपढ़ होने का दम्भ मुस्कान के साथ करते हुये*) एकरस नहीं हो सकता। यह लुटेरा सेठ (*उसके मनमें आता है कि मैं भी लखपती होता*) उनके साथ जा मिला है। लखपती बन गया है और हम तुम कितने दरिद्र हैं!

दूसरा—भाग्य की बात है। मैं जाऊँ? कुछ काम है।

चिमटानन्द—और सब काम छोड़कर पहला काम है इन सबका बाईकाट करना, नहीं तो ये लोग सनीटरी इन्सपेक्टर और पुलिस की सहायता करके हम तुम—सब—को दो दो बरस का जेल करवायँगे। हम जेल से नहीं डरते। (*चिमटानन्द सीधा खड़ा होजाता है, चिमटा खिसक कर गिर जाता है, चिमटानन्द को मालूम नहीं पड़ पाता*) तुम्हारी सेवा करते करते जेल चले जायँ तो खुशी होगी, पर इस तरह के मामले में जेल जाना शोभा नहीं देता। ठीक है न?

दोनों—ठीक है स्वामी जी।

चिमटानन्द—अब जो समाज बनेगा उसमें इस तरह के पढ़े-लिखे, ये घमण्डी और तड़कीले भड़कीले लोग और लखपती एक तरफ़, और, हमारे तुम्हारे सरीखे अपढ़ (*फिर उसी दम्भ की मुस्कान के साथ*) और दरिद्र (*गंभीर होकर*) एक तरफ़ रहेंगे। (*दो पुरुष और आ जाते हैं। वे उसको प्रणाम करते हैं। वह साधारण सा उत्तर देकर उन लोगों को संकेत से रोक लेता है*) देखो, आगे के झगड़ों से बचना है तो इसी समय से इन लोगों का बाईकाट करो।

(*वे चारों एक दूसरे का मुँह देखने लगते हैं*)

चिमटानन्द—समझे ? क्या समझे ?

(वे फिर एक दूसरे का मुँह देखते हैं)

चिमटानन्द—नहीं समझे ! इन लोगों का, दोनों डाक्टरों और सेंतूचन्द का, बाईकाट करदो, और जो उनका साथ दे उसका भी। सामान, नौकर-चाकर, उठना-बैठना, पानी, सब, बन्द करदो।

उनमें से एक—पानी तो झील में ही बहुत है।

चिमटानन्द—झील से पानी लेने जाय तो रास्ते में लाठियाँ लेकर आजाओ, डरके मारे लौट जायंगे *(वे सब एक दूसरे का मुँह ताकते हैं)*

उनमें से एक—आप जैसा ठीक समझें। हमलोग तो आपकी छाया में चलते हैं। पर, गांव में दलबन्दी है। दूसरा दल साथ नहीं देगा।

चिमटानन्द—अपने डरके मारे वह दल सहमा हुआ बैठा रहेगा। भाई इसमें उनका भी तो लाभ है। करो, नहीं तो माई का प्रकोप होगा और सबका सब गांव आफ़त में डूब जायगा। ये लोग माई के निन्दक हैं और सेंतूचन्द उनकी सीटी पर चलने वाला।

एक—सेंतूचन्द का लड़का है भी बड़ा शैतान। कर डालें बाईकाट; आजकल कोई काम भी नहीं है—पूरा उकास है। कहो भाइयो।

वे तीनों—हाँ, हाँ, होने दो।

चिमटानन्द—शाबाश, बहुत अच्छा। मैंने पुत्तूलाल से कह दिया है। वह भी इन लोगों को ठिकाने लगाने के काम पर डट गये हैं। उनसे अभी अभी बात करके आरहा हूं। अब तुम जाओ। पहला काम यही करो। तुमको माई की सौगन्ध है करके ही दम लेना।

(वे चारों स्वीकृति का सिर हिलाते हुये जाते हैं। दूसरी ओर से कुछ छोटी छोटी लड़कियां और लड़के आते हैं। उनको अकेला खड़ा देखकर स्तम्भित हो जाते हैं)

चिमटानन्द—(*ऊपर की ओर सिर करके आंखें मूदकर*) शिवोहम्, शिवोहम्। (*वह चिमटे के सहारे कमर टेककर खड़ा होना चाहता है। उसको मालूम ही नहीं कि चिमटा कमर से पहले ही खिसक चुका है। जैसे ही बच्चों की ओर आतंक भरी हुई आंखों देखना चाहता है और चिमटे का सहारा लेकर आतङ्क और दम्भ को शब्दों में प्रकट करना चाहता है, तैसे ही पीछे की ओर घिसटता हुआ गिर पड़ता है। बच्चे बेतरह हँस पड़ते हैं। चिमटानन्द चिमटे को उठा लेता है—चिमटा पास ही पड़ा है। चिमटे के सहारे खड़ा हो जाता है। उसके खड़े होते होते बच्चे हँसते हुये भाग जाते हैं। चिमटानन्द इधर उधर देखता हुआ, कि और किसी ने तो नहीं देख लिया, कपड़े झाड़ता पोंछता हुआ चला जाता है*)

तीसरा दृश्य

[स्थान—सेंतूचन्द के मकान का एक कमरा। सरूपा पलंग पर पड़ी हुई है। पलंग के पास कुर्सियां रखी हैं। सरूपा चादर से मुँह ढके है। सेंतूचन्द, केवल और सलिल आते हैं। समय—दिन].

सेंतूचंद—डाक्टर साहब आये हैं।

(*सरूपा चादर को और भी समेटकर करवट ले लेती है*)

सेंतूचंद—आप इनका हाथ देख लीजिये। सब पता लग जायगा।

सलिल—मैं हाथ देखकर कुछ पता नहीं लगा सकता हूं; न तो नाड़ी देखना जानता हूं और न नाड़ी देखने का ढोंग ही करता हूँ। मुझको इनसे बातचीत करनी पड़ेगी।

केवल—आप बातचीत करिये डाक्टर साहब। पिता जी, आप जाइये।

(*सेंतूचन्द चला जाता है*)

केवल—माँ, डाक्टर साहब खड़े हैं।

सरूपा—बैठ जायँ।

(सलिल बैठ जाता है। केवल खड़ा रहता है)

सलिल—मैं आपसे कुछ सवाल करना चाहता हूं। पहला तो यह कि आप केवल को कितना प्यार करती हैं?

(सरूपा चुप रहती है)

केवल—प्यार करती हैं—वह क्या कहें।

सलिल—तुम मत बोलो। तुम अपनी माँ को बिलकुल स्वस्थ देखना चाहते हो?

केवल—जी हाँ, वह मुझे प्यार करने लगी हैं।

सरूपा—सदा करती थी?

केवल—पहले तो प्यार की जगह ठोक-पीट और गाली-गलौज किया करती थीं।

सरूपा—यह झूठ बोलता है—पर मेरी बीमारी से इन बातों से क्या सम्बन्ध है?

सलिल—केवल, मैं तुम्हारा चाचाजी हूं न? यदि हूं तो यहाँ से दूसरे कमरे में चले जाओ। मैं जब बुलाऊँ, तब चले आना।

(केवल मुँह बनाकर चला जाता है)

सलिल—वह चला गया। अब बतलाइये।

सरूपा—कह तो दिया। बीमारी की बात पूछिये।

सलिल—आप बैठ जाइये। इस प्रकार बात नहीं कर सकता।

(सरूपा कुड़मुड़ाकर तिरछी बैठ जाती है। मुँह पर थोड़ासा घूँघट डाले रहती है)

सरूपा—जल्दी पूछ लीजिये, मेरा सिर फटा जारहा है पीड़ा के मारे।

सलिल—आपने उस खिलौने को देखा था ?

(सरूपा धक्का सा खाती है। हड़बड़ा जाती है और मुँह को ज्यादा उघाड़कर उसके सामने हो जाती है। उसकी आंखें विस्फारित हैं)

सरूपा—देखा था—फिर ?

(सलिल एक क्षण के लिये ध्यान के साथ उसको देखता है)

सलिल—खिलौने को देखने के पहले आपकी जैसी अवस्था रहती थी उसकी अपेक्षा अब कैसी है ?

सरूपा—(*कुछ संभलकर*) कुछ अच्छी है, परन्तु फिर भी काफ़ी खराब है।

सलिल—यह अवस्था कब से खराब चली आरही है ?

सरूपा—जब से केवल गर्भ में आया। लगभग सत्रह साल हुये।

सलिल—आपने उसको जन्म से ही नहीं चाहा ? या कम चाहा ?

सरूपा—चाहा तो है, मेरी सन्तान है, पर कम चाहा है; अब बहुत चाहती हूं।

सलिल—परन्तु आप चाहती थीं कि सन्तान होवे ही नहीं—क्या यह बात ठीक है ?

सरूपा—आप कहते क्या हैं !!!

सलिल—बतलाइये, इसके बाद ही आपका इलाज शुरू हो जायगा; स्मरण करिये।

(सरूपा कुछ सोचने लगती है; सोचती रहती है)

सरूपा—(*कुछ क्षण उपरान्त*) मैं नहीं चाहती थी।

सलिल—अब सिर की पीड़ा कैसी है ?

सरूपा—(*माथे को टटोलती हुई*) कम है।

सलिल—आप थोड़ी देर में स्वस्थता के मार्ग पर आई जाती हैं—आप अपने पिता की कितनी सन्तान हैं ? आपको आपके माता पिता कैसा क्या चाहते थे ? स्मरण कीजिये।

सरूपा—(*अधिक सँभलकर*) हम पाँच बहिनें और दो भाई थे। मैं पाँचवीं थी। दोनों भाई मेरी पीठ पर हुये थे। पहले भाई के उत्पन्न होते ही माता-पिता का स्नेह कम होगया, फिर भी पिता चाहते रहे थे मुझको।

सलिल—आप पढ़ी लिखी हैं; आपका ब्याह आपके मन का नहीं हुआ ?

सरूपा—(*चिटककर*) मैं भारतीय नारी हूं अपने पति या विवाह के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहूँगी!!

सलिल—कहिये एक शब्द भी नहीं, परन्तु स्मरण हरएक बात को कर लीजिये। तब तक मैं सिगरिट मँगवा कर पीता हूं।

सरूपा—आपने तो छोड़ दिया है न ? उससे आपको लाभ भी हुआ, जैसा कि केवल के पिता से सुना है।

सलिल—(*हँसते हुये*) अच्छा नहीं पियूँगा। आप सलिलकुमार नाम के एक नटखट लड़के को जानती थीं जो दूसरों की नक़ल बहुत उतारा करता था, और, जिसने एक लड़की का खिलौना चुरा लिया था ?

सरूपा—(*सलिल को एक क्षण के लिये ध्यान के साथ देखकर, फिर नीचा सिर करके निश्वास के साथ*) जानती थी। यही तो वह खिलौना है।

सलिल—और वह सिड़ीकुमार जो अब डाक्टर सलिल होगया है, सामने बैठा है।

(सरूपा मुसकरा जाती है)

सरूपा—आपको यक्ष्मा कैसे होगया? आप तो डाक्टर हैं!

सलिल—उन्हीं दिनों आपका ब्याह होगया। आप चली आईं। मैं खिलौने को छिपाकर रखे रहा। फिर मनमें परिताप हुआ। लौटाने का संकल्प किया, परन्तु लोभ के मारे संकल्प को पूरा नहीं कर पाया। चोरी और परिताप की स्मृति का दमन कर दिया। ब्याह नहीं कराया। डाक्टरी पढ़कर फिर प्रेक्टिस की। एक दिन यकायक मनमें मर जाने की आई। सेना में भर्ती होगया। लड़ाई में न मर पाया। सेना से, छुटनी में, छुटकारा मिल गया तो यक्ष्मा ने दबा लिया।

(सरूपा ज़रा सा उसकी ओर देखकर रो पड़ती है)

सरूपा—आप बड़े वीर हैं।

सलिल—बिलकुल नहीं। जब तक खिलौना सामने रहा, सब भूला रहा। जब वह खोगया, सारी बातें याद आगईं। अच्छा होने लगा, परन्तु वास्तव में डाक्टर भवन को अच्छा करने की धुन में मैं स्वयं अच्छा हुआ हूँ। अब आपको अच्छा करके बिलकुल ही स्वस्थ हो जाऊँगा।

(सरूपा आंसू पोंछ डालती है और माथे को टटोलती है)

सरूपा—अब सिर में बिलकुल पीड़ा नहीं है।

सलिल—जिन पुरानी स्मृतियों को आपने बिलकुल दबा डाला है उनको अपनी चेतना में लाइये, आप शीघ्र स्वस्थ हो जायँगीं।

सरूपा—*(उसको थोड़ा सा देखकर, मुँह फेरते हुये)* कौनसी दबी हुई स्मृतियाँ?

सलिल—वह खिलौना कैसे और क्यों बना था?

सरूपा—मेरे पिता ने अपने स्नेह के कारण बनवाया था। बिलकुल मेरी छोटी सी मूर्ति बनवाई थी।

सलिल—उस नटखट सिड़ी कुमार ने खिलौने को क्यों लिया?

सरूपा—आप ही जानें—(*आँखें तानकर*) आप क्यों पूछते हैं अब? उन बातों को नहीं सुनना चाहती।

सलिल—वह नटखट लड़का आपका ब्याह किसी दूसरी जगह चाहता था, परन्तु आपके पिता ने धनाढ्य घराने को चुना। ठीक है न?

सरूपा—पिता ने नहीं माता ने। आपने अपना ब्याह क्यों नहीं किया? पर होगा, मुझको क्या। देखिये, अब मैं वह नहीं हूं।

सलिल—(*हँसकर*) क्यों कि सलिलकुमार वास्तव में सिड़ीकुमार था।

(*सरूपा आह लेती है*)

सरूपा—आपने बहुत कष्ट सहे होंगे।

सलिल—परन्तु अब सुखी हूं। आप भी सुखी रहें। लड़के को, अपने पति को प्यार करती रहें; कुछ काम और खेल भी हाथ में लें। दूसरों को भी सुखी बनाने का उपाय करें तो आप सुखी बन सकेंगी।

(*सरूपा उसको बारीकी के साथ देखती है। फिर उसकी दृष्टि अस्थिर हो जाती है*)

सरूपा—कैसे?

सलिल—मैंने एक योजना बनाई है। जिस प्रकार की समाज सेवा लोग अभी तक करते आये हैं वह उससे भिन्न है, परन्तु उसका आरम्भ चलती हुई परिपाटी के अनुसार ही किया जायगा। बतलाऊँगा एक बात और पूछना है। आपके ब्याह के चार पाँच वर्ष बाद केवल का जन्म हुआ था, उन वर्षों में आपका मन कैसा रहा?

सरूपा—यों ही सा कुछ रहा। अब उससे प्रयोजन भी क्या है? पर वे सब दिन अच्छे थे।

सलिल—सारी की सारी दबी या दबाई हुई कड़वी से कड़वी स्मृतियां अब स्मरण में उखाड़ लाने पर अलग खड़ी हुई, मुस्कराती सी, दिखलाई पड़ेंगीं। उखाड़ डालिये उनको।

सरूपा—देखूँगी। प्रयत्न मनोरञ्जक होगा। (*हँसकर*) आप जितने बातूनी छुटपन में थे, उतने ही अब भी हैं।

सलिल—मैं आपको सुखी देखकर सुखी हूँ। परन्तु आप दुर्बल बहुत हो गई हैं। आज सोचा था हृष्ट पुष्ट और हँसमुख पाऊँगा।

सरूपा—काम और खेल को हाथ में लूँगी, और फिर हँसूँगी। आप पहले का सब भूल जाइये।

सलिल—भुलाने के प्रयास में फिर बीमार पड़ जाऊँगा। उसकी कोई आवश्यकता ही नहीं। (*तुरन्त कुछ निश्चय करके*) अब केवल को बुलाऊँ। केवल! (*केवल आजाता है*) देखो, अब तुम्हारी मां स्वस्थता के मार्ग पर आ गई हैं।

केवल—(*सरूपा को देखकर*) जब ऐसी ही बनी रहें तब तो!

(*सरूपा तिनकती है*)

सलिल—समाज-सेवा के काम में यह भी हमारी सहायता करेंगीं।

केवल—पर चाचा जी, गांव वालों ने यानी उस स्वामी ने हम लोगों का बाईकाट करवा दिया है। अभी सुनकर आया हूं।

(*सरूपा कुछ विचलित हो जाती है*)

सलिल—(*अचल ढंग से*) और वह करे भी क्या? अहं की प्रेरणा से उसने साधूपन अंगीकार किया। उसमें श्रद्धा पूजा कम मिली तो राजनीति के अखाड़े में पिल पड़ा। वह सोचता है, जनता की नेतागिरी चली, इसलिये भभक उठा है। देखूँगा।

केवल—उसने नौकर चाकर, पानी, भोजन सामग्री सब बन्द करवा देने की रचना रची है।

सलिल—कोई चिन्ता नहीं। रामटहल क्या नौकरी छोड़ देगा?

केवल—उसी ने तो अभी अभी समाचार दिया। कहता था यदि आप लोगों ने छुटा दिया तो नौकरी छोड़ेगा, अन्यथा नहीं। वह हमारे सेवा दल में भी काम करने को तैयार हैं। बहुत अच्छा आदमी है।

सलिल—हम लोग उसको कदापि नही छोड़ेंगे।

सरूपा—अब आप क्या करेंगे?

सलिल—जो कुछ करता चला आया हूं। (*मुस्कराता है*) अब जाऊँगा। (*खड़ा हो जाता है*) केवल अपनी मां को चिढ़ाया मत कर, और मैंने तो सिगरेट छोड़ ही दिया है।

(*केवल मां की ओर देखकर हँसता है। वह सलिल की ओर देखने लगती है। सलिल चला जाता है। सरूपा उसकी ओर देखती रहती है। केवल भी*)

चौथा दृश्य

[स्थान—तालगांव की एक सकरी गली। कुछ लड़कियां और लड़के, जो छः से अधिक न होंगे, गाते हुये आते हैं। किसी के हाथ में झाड़ू है किसी के हाथ में फावड़ा और किसी के हाथ में टोकनी। समय—दिन]

(गीत)

ऊषा आई जागे सपने,
जीवन मधु है लगा पनपने।
पीते पीते प्यास बढ़ेगी,
कुछ करने की आस चढ़ेगी;
बिना कर्म का जीवन सूना,
इसी लिये निकले कुछ करने।
ऊषा आई जागे सपने।

(गीत की समाप्ति के होते ही चिमटानन्द आता है। इस समय साफ़ कुर्ता और धोती पहिने हैं। सब गेरुये रंग में। उसके साथ चार पुरुष हैं जो दूसरे रंग की टोपी, अद्धी कुर्ती और जांघिये पहिने हैं। वे चारों, दो दो की, क़तारों में आते हैं। चिमटानन्द आगे है। उन चारों के हाथ में लाठियां हैं, चिमटानन्द ख़ाली हाथ है। बालक इन को देखकर थोड़ा सा सहम जाते हैं)

चिमटानन्द—तुम लोग क्या करने जा रहे हो ?

एक लड़क.—सफ़ाई करने।

चिमटानन्द—देखो, उस नास्तिक डाक्टर के कहने में मत चलो। छोटी जाति के लोगों की सेवा तो करो, हम स्वयं अपने व्याख्यानों में, बराबर यही कहते रहते हैं, परन्तु अपनी जातपांत का ख्याल रखो।

एक लड़को—हम लोग इन गलियों की सफ़ाई करके अपनी ही तो सेवा कर रहे है और साथ में दूसरों की भी।

चिमटानन्द—कितना चटर पटर बकना आ गया है इन लोगों को ! तुम्हारे मां बाप पछतायेंगे किसी दिन !!

(गली की एक पास वाली दूसरी गली से सलिल आता है। पीछे पीछे रामटहल और केवल। वे तीनों फावड़े लिये हैं। ये लोग अद्धे कुर्ते और जांघिये पहिने हैं, परन्तु अलग अलग रंग के। इन लोगों को देख कर चिमटानन्द इत्यादि तन जाते हैं)

सलिल—आपको ज़्यादा पछताना पड़ेगा स्वामी जी, क्यों कि आगे आप नेता नहीं रहेंगे, नेता ये होंगे, ये। *(रामटहल और केवल से)* घरों के सामने दोनों कतारों में नालियां खोद डालो, तब तक मैं इनसे बातचीत करता हूं। *(बालकों से)* फावड़ों से एक ओर नालियां बनावें और लड़कियां गली का कूड़ा साफ़ करें। *(लड़के, लड़कियां रामटहल और केवल बतलाये हुये काम में लग जाते हैं। सलिल चिमटानन्द के सम्मुख होता है)*

चिमटानन्द—आप यह सब क्या कर रहे हैं ?

सलिल—आँखों से देखने का और अक़्ल से समझने का कष्ट कीजिये।

चिमटानन्द—हमलोग यह सब करना जानते हैं और करते रहे हैं, इन बालकों का ऐसा प्रयोग नहीं करने देना चाहते हैं। आपका मुँह नहीं चलने देंगे।

सलिल—आप लोग विरोधियों को न बोलने देने, बायकाट या बाईकाट करने, बच्चों और नरनारियों को कीड़ों-मकोड़ों की तरह मरने देने के सिवाय और जो कुछ जानते हैं उसको कहकर अपनी ज़बान ख़राब नहीं करना चाहता हूं।

चिमटानन्द—धोंस देते हो !

सलिल—लाठी चलादो। चिमटा कहाँ गया ?

चिमटानन्द—(*ताव को पीकर*) तुम्हारी विलायती दवाइयों और कार्यप्रणाली ने गाँव को मिटा दिया है।

सलिल—(*क्षोभ को नियन्त्रित करके व्यङ्ग भरी मुस्कान के साथ*) दो के विरुद्ध एक ! आप दो हम एक !! नगड़दादों के समय से चला आया हुआ अज्ञान और अन्धविश्वास—ये दो—आपके; और इनके मुक़ाबले में बिचारा विज्ञान एक—हम लोगों के साथ !

चिमटानन्द—(*क्षोभ के साथ*) तो इस गाँव में आपकी मनमानी नहीं चल सकती। और न आप चाहे जौनसी दवाई कुओं गलियों और घरों में फैला पायँगे। हमारे पास भी सेवादल है जो आपके सेवादल से बड़ा और प्रबल भी है। (*अपने साथियों की लाठियों की ओर सहसा देखता है*)

सलिल—(*क्षोभ को और भी नियन्त्रित करके*) आप भी तो हम लोगों की देखादेखी कुओं और मकानों के साथ कुछ खिलवाड़ करने लगे हैं !

चिमटानन्द—खिलवाड़ है वह ! हम तुलसी की पत्तियां को बाँट कर कुओं में डालते हैं जिससे वे सुगन्धिमय हो जाते हैं; हम घरों को लिपवाते-पुतवाते हैं और धूप-बत्ती जलवाते हैं—

सलिल—(*टोककर*) और बकरों तथा मुर्गे-मुर्गियों का देवताओं के नाम पर बलिदान करवाते रहते हैं जिसके प्रसाद से बीमारियाँ और भी ज़ोर पकड़ती हैं।

चिमटानन्द—(*नालियां कटने की ओर देखकर*) ये नालियाँ क्यों काटी जारही हैं ? (*क्षुब्ध स्वर में*) ये गलियाँ क्यों मिटाई जा रही हैं ?

सलिल—जिसमें कीचड़ न हो, जिसमें आगे आने वाली बीमारियाँ इन गलियों में होकर धावा न मार सकें।

चिमटानन्द—हम गलियों की सूरत को नहीं बिगाड़ने देंगे। (*अपने साथियों की ओर देखते हुये*) हमारे पास आपकी नादानी के रोकने का साधन भी है। (*वे चारों इधर उधर देखने लगते हैं*)

सलिल—(*अदम्य भाव से*) कूटे जाइए कूड़े कर्कट को बिचारे देहातियों के दिमाग़ में और बनाये जाइये अपने स्वार्थपालन की पक्की सड़क को; आप तो मानव को उल्लू या कुछ ऐसा ही समझते हैं !! बाईकाट से नहीं जीते तो लाठियों पर आगये !!!

(*चिमटानन्द अपने साथियों की ओर देखता है। वे मुँह फेर लेते हैं। चिमटानन्द निस्सहाय है*)

चिमटानन्द—मैं मनुष्य को मनुष्य ही समझता हूं, आप मनुष्यों को जानवर समझते हैं, विशेषकर बेपढ़ों को। (*साथियों की ओर देखता है वह उनको आक्रमण के लिये तैयार नहीं पाता है, एक क्षण सोचते हुये*) आपकी विलायती पुस्तक में ही लिखा है, समझ लीजिये—मनुष्य ने ईश्वर को अपने नमूने में ढाला है।

सलिल—(*हँसते हुये*) शाबाश स्वामी जी ! मनुष्य ने ईश्वर को ! खूब कहा !! आपने अपने को ईश्वर से कम नहीं समझ रखा है और मन के भीतर ईश्वर के साथ आपका द्वन्द चलता रहता है, इसीलिये विलायती पुस्तक को भी आपने बेतरह समझा !!!

(*लड़के लड़कियां काम छोड़ कर हँस पड़ते हैं। केवल और और रामटहल भी। चिमटानन्द के साथी मुस्कराते हैं। चिमटानन्द झेंप जाता है*)

चिमटानन्द—क्या आपसे गलती नहीं होती ?

सलिल—होती है; मैं उसको छिपाता नहीं। यही अन्तर है।

चिमटानन्द—(*धीरे से अपने साथियों से*) तुम लोग जाओ। मैं अकेले ही निबटूँगा।

(*वे लोग मुक्ति की सांस ले कर जाते हैं*)

सलिल—(*अपने साथियों से*) तुम लोग अपना काम करो। बहुत हँस चुके।

एक लड़की—आप ही ने तो कहा था कि बिना हँसी-ठठोली का स्वभाव मनहूसों का होता है।

सलिल—हाँ हाँ, कहा था—काम और खेल को एक दूसरे में पिरोकर करते रहो, यह भी तो कहा था। (*वे लोग काम में लग जाते हैं*) देखिये स्वामी जी।

केवल—(*एक दृष्टि चिमटानन्द पर डाल कर काम करते करते*) जो हँसना नहीं जानते मनहूस होते हैं।

चिमटानन्द—(*आक्रमण करने की इच्छा को बहस की लालसा में परिवर्तित करके*) आप जानते हैं जीवन की समस्या क्या है ? नालियाँ खोदना नहीं है।

सलिल—कुछ उत्तर आपने स्वयं दे लिया, कुछ मैं देता हूं—जीवन की समस्या है अहं की उत्कट वासना को, प्रहार वृत्ति को, जिसको मैं जनता की बोली में 'चढ़ बैठ' वृत्ति कहता हूं, संयत और संचालित करते रहना जो आपके मुँह से 'शिवोहं' के रूप में निकलती रहती है।

(चिमटानन्द कुछ सोचने लगता है)

केवल—स्वामी जी, आप सोचने विचारने लगे तो बस गये!

चिमटानन्द—यह लड़का बहुत पाजी हो गया है, *(दम्भ से दबकर)* पर लखपती का बेटा होते हुये भी फावड़ा चला रहा है इसलिये मुझको बुरा नहीं लगता। *(सलिल से)* आपका प्रयोग समाज के लिये सोलह आना तो ठीक नहीं है।

सलिल—हमारा समाज काफ़ी सड़ गल गया है। उसमें अब और सड़ांद मत उत्पन्न होने दीजिये। यह प्रयोग उसी को ठीक करने के लिये है।

चिमटानन्द—कुदाली फावड़ों से ठीक नहीं होगा समाज और न जनता के उत्सव और मेले बन्द करवाने से, जो आपने सरकार को लिख पढ़कर बन्द करवाये हैं। उसी दिन से बिचारा पुत्तूलाल महने खटिया से लग गया है, किसी देवता ने उसको बुरी तरह धर दबाया है।

सलिल—शिवोहं कहने वाला भूत प्रेत में भी विश्वास करता है! *(सब काम करने वाले हँस पड़ते हैं)* मैं पुत्तूलाल को देखूंगा। उसको अच्छा करूँगा। डरिये मत। न कोई दवा दूँगा और न फ़ीस लूँगा।

(नेपथ्य में शोर होता है 'यह था' 'इसको पकड़ो,' 'वह था' 'उसको पकड़ो' की आवाजें आती हैं। वे सब सुनने लगते हैं)

चिमटानन्द—*(उन आवाजों का अभिप्राय ताड़ कर)* देखूँ क्या है, गांव के लोगों को कोई सताने के लिए आया है। *(जाता है)*

सलिल—(*बालक बालिकाओं से*) तुम लोग कोई वर्दी रखना चाहते हो सेवा दल की ?

लड़कियाँ—नहीं।

लड़के—हां।

केवल—जैसा आप ठीक समझें।

रामटहल—होनी तो चाहिये कोई वर्दी।

सलिल—वर्दी और संयम—अनुशासन भीतर की पूरी प्रेरणा पर ही दल में ले आने चाहिये, वैसे उनसे उकताहट उत्पन्न हो जायगी।

(*एक ओर से सेनीटरी इन्सपैक्टर आता है। साथ में पुलिस*)

सेनीटरी इन्सपैक्टर—(*दूर से ही*) यही है वह स्वामी, बहु-रूपिया। इसी ने दंगा किया और करवाया था।

(*पुलिस आगे आजाती है इन्सपैक्टर उनके पीछे रह जाता है।*)

सलिल—(*मुस्कराते हुये आगे बढ़कर*) हाँ मैं ही हूँ। पकड़लो।

(*वे सब काम बन्द करके आश्चर्य के साथ देखने लगते हैं*)

पुलिस का अफ़सर—आपने सरकारी नौकर के काममें हस्ताक्षेप किया। हुल्लड़ और दंगा करवाया। इस अपराध में आपको गिरफ्तार किया जाता है।

सलिल—(*व्यङ्ग के साथ*) मेरा एक अपराध और है—सरकार की आलोचना करता रहता हूँ और सरकारी नौकरों के निकम्मेपन की भी। ये इन्सपैक्टर इतने दिनों के बाद अब आये इस गाँव में! और जब आये थे, यह रकान को काम में नहीं लाये। गाँव वालों के खेल कूद को बन्द नहीं करना चाहिये था। (*वह पकड़े जाने केलिये हाथ बढ़ा देता है। इन्सपैक्टर, पुलिस के पीछे से, रामटहल और केवल को देखता है*)

सेनीटरी इन्सपैक्टर—ये दोनों भी उस स्थान पर थे। इन्होंने दंगा नहीं किया था, ये गवाही देंगे।

(पुलिस अफ़सर सलिल के हाथ पर हथकड़ी डालता है। इन्सपैक्टर विजय की मुस्कराहट के साथ आगे आकर सलिल को ध्यानपूर्वक देखता है। सलिल के साथियों के मुँह से 'ऐं !' निकल पड़ता है। इन्सपैक्टर अपने भ्रम को समझ जाता है। झटका खाकर चौंक पड़ता है)

सेनीटरी इन्सपैक्ट—इनको छोड़िये ! इनको छोड़िये !! यह नहीं हैं वह !!!

सलिल—कोई सही—हथकड़ी के क़ानून के लिये कोई भी हाथ सही।

(पुलिस अफ़सर हथकड़ी हटा लेता है)

पुलिस अफ़सर—यह कौन है ?

केवल—*(अभिवादन के साथ)* देश के नामी डाक्टर श्री सलिल कुमार जी। मेरे चाचा।

(सै० इ० और पुलिस अफ़सर लज्जित होते हैं)

वे दोनों—माफ़ कीजियेगा डाक्टर साहब।

पुलिस अफ़सर—आपने भी तो ठठोली की !

सेनीटरी इन्सपैक्टर—*(पुलिस अफसर से)* चलिये, असली अपराधी को पकड़िये। *(वे सब चले जाते हैं)*

सलिल—*(अपने साथियों को उदास देखकर)* इस अवसर पर तुमको हँसना चाहिये था। तुम लोगों ने तो मुँह डाल लिया !

(वे सब एक दूसरे का मुँह देखते हुये मुस्कराते हैं)

रामटहल—आपने ग़ज़ब कर दिया डाक्टर साहब !

सलिल—(*कुछ सोचकर*) अभी नहीं किया। अब कुछ करूँगा। गाँव वालों के लिये कुछ करना पड़ेगा और उस स्वामी के लिये भी। यदि पकड़ा गया और जेल गया तो वह और भी बड़ा बेवकूफ़ हो जायगा। (*वे सब हँस पड़ते हैं*) मैं जाता हूं। तुम लोगों ने यह काम कर लिया। उस गली में घरों के भीतर जाकर सफ़ाई करो। सन्ध्या समय गाँव के बाहर मैदान में इकट्ठे हो जाना, खेल कूद करेंगे। कल से उस नाटक की तालीम है जिसकी चर्चा तुम लोगों से कर रखी है।

(*सलिल चला जाता है। उसके पीछे वेसब एक गली मे, दूसरी ओर से चले जाते हैं*)

पांचवां दृश्य

[*स्थान—उसी गांव में सलिल की बैठक। बैठक सजी हुई हैं। एक कोने में मेज़ है। इधर उधर कुर्सियां। नन्दिनी आकर बैठक के बाहरी दरवाजे की ओर देखती है फिर आहट लेती है जैसे किसी के आने की प्रतीक्षा में हो। समय—दिन। भवन आता है। साथ मे नीरा। भवन अब स्वस्थ है*]

भवन—(*घड़ी देखकर*) मैं बिलकुल ठीक समय पर आ गया हूं। क्या कर रहे हैं वह?

नन्दिनी—अभी आये हैं, हाथ मुँह धो रहे हैं। सेनीटरी इन्सपेक्टर और पुलिस के पास उस स्वामी को छुटाने के लिये चले गये थे। उस को छुटवा दिया! और उसके साथ के गाँव वालों को भी!!

नीरा—ऐं!

भवन—जिसने हम लोगों का बायकाट करवाकर इतना तङ्ग किया है! अजीब आदमी हैं डाक्टर साहब!!

नन्दिनी—जी...ई! (*तरतीब से रखे हुये सामान को फिर उटाने धरने लगती है*)

(सेंतूचन्द आता है। उसकी जेब पर एक फाउन्टेन पैन लगा है। वे परस्पर अभिवादन करते हैं)

सेंतूचन्द—*(आश्चर्य के साथ)* डाक्टर साहब ने इन सब शैतानों को छुटवा दिया !!! ऐसी भी सनक क्या ?

(नीरा ध्यान के साथ उसके फाउन्टैन पैन को देखती है)

भवन—उनकी बातें वही जाने।

सेंतूचन्द—*(सनकी कहकर मन के पछतावे के कारण ज़रा बल खा जाता है, फिर अपने को उसके मण्डल में कुछ पहुंचा हुआ अनुगत करके)* पर बहुत गहरे हैं ! बहुत गहरे !!

(सलिल आता है। वे सब परस्पर अभिवादन करते हैं)

सेंतूचन्द—*(सलिल से)* आपकी कृपा से केवल की माँ बिलकुल चंगी होगई है। आज कुछ भजन पूजन भी हो गया है। *(सबकी ओर बारी बारी से शीघ्रता पूर्वक देखते हुये)* मुझसे कोई फीस नहीं ली। *(फ़ाउन्टैनपैन निकालते हुये)* डॉक्टर साहब, स्मारक के तौर पर इस को स्वीकार कर लीजिये। *(फ़ाउन्टैनपैन डेढ़ रुपये से अधिक का नहीं हैं। नीरा के ओठों पर व्यङ्ग की मुस्कान, नन्दिनी के चेहरेपर ग्लानि। भवन क्षोभसे थर्रा जाता है। सलिल हँस पड़ता है)*

सेंतूचन्द—*(हड़बड़ा कर)* आप बहुत परोपकार करते रहते हैं डाक्टर साहब !

सलिल—परोपकार का अर्थ है—अपने बड़प्पन की डींग हाँकते हुये एक पैसे की भलाई के बदले में चौंसठ पैसों का चुकावरा चाहना। इसको जेब में रख लीजिये। यह तो छियानवे पैसे का है ! ह !! ह !!! ह !!!

(सेंतूचन्द झेंप जाता है और घबरा जाता है। उसका हाथ काँपने लगता है। सलिल को दया आजाती है)

सलिल—आपको बुरा लगेगा, दीजिये। (*फ़ाउन्टैनपैन को लेकर*) लो नन्दिनी इसको। वह खिलौना तुमको दिया और यह कलम भी (*फिर रुककर*) नहीं कलम को मैं ही रखूँगा। (*जेबपर लगा लेताहै*

(*नन्दिनी हँसती है*)

भवन—अब मैं बिलकुल ठीक हूं। मुझको भी सेवा दल में ले लीजिये।

नीरा—मैं भी उसमें काम करूँगी।

सेंतूचन्द—मैं भी। (*दृढ़ता के साथ*) अवश्य ही।

(*दृढ़ता निर्बल पड़ जाती है*)

सलिल—आज सेवा दल में काफ़ी भर्ती हो गई है। स्वामी चिमटानन्द भी शामिल हो गया है।

सब—एँ!

सलिल—हाँ—न तो उसने दूसरों को अभी तक समझने का प्रयत्न किया, और न दूसरों ने उसको। उसका अहं पिघलने लगा है। अब एक प्रश्न है। बीमारों की सेवा और बीमारियों का मुक़ाबला कर चुकने के बाद फिर हम लोग क्या करेंगे? यही न कि अपने अपने काम में लग जायँगे और बीमारियों के फिर से आने और लोगों के फिर बीमार पड़ जाने की आशा और प्रतीक्षा करेंगे!

(*सब लोग उत्सुकता के साथ उसकी ओर देखते हैं—भवन हँस पड़ता है*)

भवन—वही अटपटी बात! वही सनक!!

सलिल—(*मुस्कराकर*) सनक नहीं है। हम लोग जीवन की असली समस्याओं के सम्पर्क में अब आरहे हैं। बीमारों की सेवा, मेलों-ठेलों का प्रबन्ध इत्यादि—

भवन—शिक्षा, साक्षरता—

सलिल—(*अधीरता के साथ टोककर*) उहँ! अक्षरों के अभ्यास और पुस्तकों के रटने का नाम शिक्षा नहीं है। पहले जनता के भोजन और वस्त्र का प्रबन्ध होना चाहिये। इस तरह की शिक्षा जनता के साधनों और ज़रूरतों से बहुत सीमित है। शिक्षा अवश्य, पर इस प्रकार की शिक्षा नहीं। मैं जीवन की असली समस्या की बात कह रहा हूं। भोजन और वस्त्र के प्रबन्ध के साथ साथ आवश्यकता है प्रत्येक मनुष्य के मनमें इस बात के बिठलाने की कि वह अपने को समझता रहे, अपने अचेत या अर्द्ध सचेत मनकी क्रियाओं पर निरन्तर ध्यान लगाये रहे और दूसरों को भी उसी प्रकार समझते रहने की कोशिश करता रहे।

भवन—अहिंसा, धृति, क्षमा इत्यादि वही सब पुरानी बातें; ठीक हैं, पर हैं कठिन।

सलिल—इनमें से एक भी नहीं। ये सब अर्धचेत और अचेत मन पर तत्परता के साथ पहरा लगाते रहने के द्वारा अपने आप आजार्यगी अर्थात मानव को अपनी वर्तमान स्थिति में उनकी जितनी मात्रा में सच्ची ज़रूरत होगी, उतनी।

भवन—करो आरम्भ। हम सब तैयार हैं।

सलिल—इस काम के लिए किसी वर्दी की अटक नहीं और न बलिदान की।

सेंतूचन्द—मैं नहीं समझा।

सलिल—आपको तो सबसे पहले समझना चाहिये। किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कुछ साधन काम में लाने पड़ते हैं। उद्देश्य और साधनों के बीच में सम्बन्ध की जो कड़ियाँ हैं उनको कुशल व्यवसायी लोग यथावत् समझते हैं। हमारा उद्देश्य है अपने को और अपने पड़ोसियों को सुखी बनाना। साधन जो अब तक बतलाये

गये हैं वे अपूर्ण या भ्रमपूर्ण हैं। मैं जिन साधनों को बतलाता हूं उनको काम में लाइयें।

भवन और सेंतूचन्द—कौनसे ?

सलिल—प्रत्येक मनुष्य के भीतर के भीतर जो एक 'चढ़बैठ' वृत्ति है, जिसको अहं भी कहते हैं, वह काम और खेल से संचालित की जावे, खेल को काम और काम को खेल का अखण्ड रूप दिया जाय। रंगमंच पर नाटक खेले जायँ। नाटक मनुष्य को उसकी भीतरी वासनाओं और अन्तर्द्वन्द्वों के अभिनय का मौक़ा देता है—इस साधन से मनुष्य उन वासनाओं और अन्तर्द्वन्द्वों का साहस के साथ जाने-बूझे सामना कर सकता है। इस क्रिया से उसको अपनी समस्याओं के जानने की सूझबूझ मिलेगी—विवेक के साथ हँसते मुस्कराते हुए, लँगड़ाते लँगड़ाते नहीं। और, मनोरञ्जन भी होगा। इसीलिए मैं नाटकों के खिलवाने का घोर पक्षपाती हूं।

(नीरा और नन्दिनी प्रसन्न हैं। भवन सोचता है। सेंतूचन्द माथा टटोलता है)

भवन—मैं नाटक का उद्देश्य केवल मनोरञ्जन समझता था। है भी।

सलिल—दवा दारू के रूप मे, रोगों के इलाज के लिये भी, उस का अचूक उपयोग किया जा सकता है। परन्तु अधिकांश डाक्टर नादान जो हैं। *(सेंतूचन्द से)* सेठ जी, अभी केवल की मां बिलकुल अच्छी नहीं हुई हैं। आपके फाउन्टैन पैन की देन और आज की पूजा पत्री व्यर्थ जायगी नहीं तो उनको भी नाटक में अभिनय करने के लिये कहिये।

सेंतूचन्द—अभिनय !!! लोग क्या कहेंगे ?

सलिल—लोग बाईकाट नहीं करेंगे, इतना तो मैं कह सकता हूं। ज़्यादा से ज़्यादा यह कहेंगे कि आप मुझसे बड़े गधे हैं।

(नीरा और नन्दिनी हँस पड़ती है)

सेंतूचन्द—(*झेंपते हुये*) वह पढ़ी लिखी हैं, यदि पसन्द करें तो मुझको कोई इनकार नहीं। पर—क्या अभिनय करना होगा उनको ?

सलिल—मैंने नाटक लिख लिया है। कल सब को इकट्ठा करके पार्ट बाँट दूँगा। तालीम दी जायगी। फिर जनता के समने खेलने के पहले एक निजी प्रदर्शन। नीरा, नन्दिनी इत्यादि भी अभिनय करेंगी।

भवन—इत्यादि में कौन रह गया ?

सलिल—आप और सेठ जी।

सेंतूचन्द—(*झेंप की हँसी से*) राम राम ! मेरे बस का नहीं है।

सलिल—खैर आप अपने रुपये पैसे समेटते, गिनते रहिये। अब मैं थोड़ी देर के लिये गाँव के बाहर वाले मैदान में जाऊँगा। वहाँ बच्चे इकट्ठे हो रहे होंगे।

(वे सब उठ बैठते हैं और जाते हैं। पीछे पीछे नीरा और नन्दिनी हैं। वे दोनो हँसते हुये एक दूसरे पर मुक्के तानती हैं, मानो कहती हों, 'आने दो वह समय, मञ्चपर तुमको मार मार कर ठीक कर दूंगी')

छठवां दृश्य

[स्थान—उसी गांव के बाहर का मैदान। एक सिरे पर लड़के लड़कियां खेलते हुये आते हैं। लड़के कबड्डी खेलते आते हैं, लड़कियां कोई अपना खेल। वे एक सिरे पर खेलती रहती हैं। एक लड़के को चोट लग जाती है। वह गिर पड़ता है, दूसरे हँसने लगते हैं। वह क्रुद्ध होकर झपटता है, चोट पहुंचाने वाला लड़का

भाग जाता है। कुछ लड़के आपस में लड़ बैठने को तैयार होते हैं। एक लड़की को दूसरी का घूँसा लग जाता है। वह रोने लगती है, परन्तु उसकी आँखों में आंसू कम और क्रोध अधिक है। सलिल दूसरी दिशा से आता है। वह कन्धे पर कुदाली रखे हुए है। उसके आते ही खेलने वाले शान्त हो जाते हैं। जिस लड़के ने चोट पहुँचाई थी वह भी आ जाता है। सलिल को कन्धे पर कुदाली रखे हुये देखकर वे सब हँस पड़ते हैं। समय—सन्ध्या के पूर्व]

सलिल—अभी एक लड़की रो रही थी; एक लड़का चोट के मारे कराह रहा था; कुछ लड़के आपस में लड़ जाने को तैयार थे! कुछ हँस रहे थे!!

(उनकी हँसी बन्द हो जाती है और आँखें प्रश्नसूचक। वे उसके साफ़ सुथरे, यद्यपि साधारण, कपड़ों के साथ कुदाली के मेल को भी देखते रहते हैं)

सलिल—खेल में तो चोट लगती ही है। कबड्डी खेल चला ही इन चोटों और चोटों पर हँस डालने के लिये। भीतर की वासनाओं को ज़ोर के साथ प्रकट करने के लिये इससे बढ़िया और कोई खेल नहीं, परन्तु चोट खाने वाले को भी अपने ऊपर हँसना चाहिये। *(चोट खाया हुआ हँसने की कोशिश करता है और वह लड़की भी)* लोग हँस इसलिये देते हैं कि चोट पहुँचाने और युद्ध करने की उनकी भीतरी वासना संतुष्ट हो जाती है, चोट खाने वाले को हँसना इसलिये चाहिये कि अपने भीतर की शक्ति और भी बढ़े। और हरएक प्रतिकूल परिस्थिति पर सवार हो जाने के लिये तैयार होता रहे।

एक लड़का—*(हँसता हुआ)* आप कुदाली क्यों लाये हैं?

सलिल—यह हमारे देश का सच्चा हथियार है। आलसियों की अक्ल ठीक करने वाला और बहुत अधिक पढ़ते रहने वालों को खतर-

वह भी आ जाता है। सलिल को कन्धे पर कुदाली रखे हुये देखकर

को मिटाता है उसी तरह कुदाली ग़रीबी और पाजीपन से लड़ती है—

कुआँ खेती और तुपक हथियार, इनसे हारा करतार।

अच्छा अब तुम लोग खेलो। परन्तु देखो खेल के नियम होते हैं। एक यही कि चोट खाने पर बदला लेने के लिये झपट मत पड़ो। जो कुछ भी कसर निकालनी हो खूब जी लगाकर खेलते हुये निकालो।

(वे लोग थोड़ी देर क़ायदे से खेलते रहते हैं। गिरते हैं, चोट खाते हैं और हँसते रहते हैं)

सलिल—देखो, काम और खेल, जीवन का यही, क्रम है। खूब मन लगाकर काम करो। खेलो, और मन लगाकर सेवा करो।

सब—अवश्य।

सलिल—सब से बड़ी सेवा है, इस बात को खोजते रहो कि तुमसे कौन सी बात कैसे हुई। एक बात के कई कारण ढूँढ़ने की कोशिश करो। दूसरों के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार तत्परता के साथ सोचा करो। अब नाटक की अभिनय-शिक्षा में चलो। मैं खेत पर काम कर के आता हूँ।

(वे सब जाते हैं। उनके पीछे पीछे सलिल भी)

सातवां दृश्य

[स्थान—उसी गांव में सेंतूचन्द के मकान का एक बड़ा कमरा। उसमें एक छोटा सा रंगमञ्च सजाया गया है। कुर्सियाँ, तख्त, मोढ़े, पीढ़े इत्यादि रखे हुये हैं। एक कोने में एक मेज़ भी रखी हुई है। जिसके ऊपर पीतल का एक खिलौना रखा है। ऊपर मोटे काग़ज़ के एक बड़े पूठे पर खेले जाने वाले नाटक का नाम लिखा हुआ है,—'खोया हुआ खिलौना।' भवन, नीरा, नन्दिनी, सरूपा (वह अब स्वस्थ है, परन्तु कभी कभी अनायास ही नाक भौंह सिकोड़ती है)

केवल और रामटहल बैठे हुये है। इन सबके सामने एक ख़ाली कुर्सी रखी है, वह सलिल के लिये रक्षित है जो अभी तक नहीं आया है। ये सब उस नाटक के पात्रो का अभिनय करने वाले कपड़े पहिने हुये हैं। केवल जैसे कोई प्रोफ़ैसर हो, भवन किसी गांव का सयाना, सरूपा गांव की कोई सहज कोपी अधेड़ अवस्था वाली स्त्री, नीरा ऊँचे दर्जे की डॉक्टरनी, नन्दिनी किसी गृहस्थ की पढ़ी लिखी लड़की और रामटहल मानो ज़िले का मैजिस्ट्रेट हो—अद्धी कमीज, बढ़िया जूता, नंगा सिर, घुटा हुआ सा चेहरा और सही शिकन वाली पतलून जिसको वह यत्न के साथ यथावत रखने की चेष्टा पर चेष्टा कर रहा है। नन्दिनी आवश्यकता से अधिक गंभीर बनने की कोशिश कर रही है, नन्दिनी मोदमग्न रहने की और केवल विचार मय बनने की। भवन मूर्ख दिखलाई पड़ने का प्रयत्न करता है। समय—सन्ध्या के उपरान्त]

रामटहल—डाक्टर साहब वैसे तो बड़े समयनिष्ठ हैं, पर अभी तक नहीं आये!

नन्दिनी—वह एक खेत को बनाने की बात कह गये थे। कुदाली की कसरत कर रहें होंगे।

सरूपा—केवल! केवल!! तू अभी से क्या सोच रहा है।

केवल—मुझको अभिनय ही इसी प्रकार का करना है; और, तुम तो अभी से चिल्लाने लगीं!!!

नीरा—(*अपने थर्मामीटर, स्टाथस्कोप पर हाथ डालते हुये*) इनका इलाज मुझको करना है।

सरूपा—क्यों! मुझको अब कौनसा रोग रह गया है!

केवल—यह लीजिये! यह तो अपनी वास्तविकता पर आगईं! याद है तुमको गाँव की चिड़चिड़ी बुढ़िया का अभिनय करना है जिसको रोग ही रोग थे।

(सलिल आता है। कुदाली साथ में है जिसके फन पर खेत की मिट्टी लिपटी हुई है। कुदाली को कुर्सी से टिका देता है। अभिवादन के बाद वह खाली कुर्सी पर बैठ जाता है और सब पात्रों को एक एक क्षण के लिये ध्यान पूर्वक देखता है)

भवन—कुदाली यहां क्यों ले आये, महाशय जी ?

सलिल—खेत से सीधा आ रहा हूं तो भी थोड़ी सी देर हो ही गई। और, इसलिये भी कि आपलोगों का खेल देखने वाले अधिकतर कुदाली वाले किसान और हथौड़े वाले मज़दूर ही तो होंगे। *(इधर उधर देखकर)* वे बालक नहीं आये ! *(रामटहल के साफ़ सुथरे रहने की बनावट को लक्ष करके)* तुम ज़िला मैजिस्ट्रेट का अभिनय कर रहे हो, परन्तु कोई भी मैजिस्ट्रेट बार बार अपनी पतलून को इस प्रकार नहीं सँभालता। भीतर की पुकार को अनसुनी करके बाहरी ढोंगों पर अपने को बलिदान करते रहना फ़ैशन कहलाती है। अपने भीतर वाले पर ध्यान दो, बाहरी उपकरणों पर नहीं। *(रामटहल अकड़कर बैठ जाता है)*

(कुछ लड़के लड़कियां आकर इधर उधर बैठ जाते हैं। थोड़े से खड़े रहते हैं। इनमें से एक लड़की लड़के के वेश में है)

सलिल—अच्छा अब आरम्भ करते हैं। पार्ट तो आप सबको अपने अपने याद हैं, परन्तु नाटक की कहानी के मर्म और उद्देश्य को भी समझ लेना चाहिये, तभी सबका अभिनय खरा उतरेगा और उसका प्रभाव भी अच्छा पड़ेगा। *(एक काग़ज़ को हाथ में लेकर पढ़ता है)* नन्दिनी अर्थात जानकी, प्रोफ़ेसर सुजान—केवल—के साथ खेली और पढ़ी है। उन दोनों का परस्पर स्नेह है। उन दोनों का ब्याह नहीं हो पाता। वह अनन्त के साथ ब्याही जाती है। ***(सलिल एक लड़की की ओर उंगली उठाता है जो लड़के के वेश में आई है)*** जानकी ने अपनी आन्तरिक लालसा का दमन कर दिया।

और वह सुजान को भूलने लगी। ब्याह के पहले पीतल की एक छोटीसी सुन्दर मूर्ति सुजान ने जानकी को भेंट की थी। यह मूर्ति एक हृष्टपुष्ट सलोने जङ्गली मनुष्य की थी। जानकी ने ब्याह होने के बाद उसको लौटा दिया। सुजान ने उसको रख लिया। ब्याह नहीं किया। कुछ समय तक प्रोफ़ेसरी करने के बाद फ़ौज में भर्ती हो गया, क्योंकि वह मर जाना चाहता था। लड़ाई में वह मर तो नहीं पाया, परन्तु तोपों और बमों की प्रचण्ड आवाज़ों के मारे जिनको उसने बार बार भुलाने की कोशिश की थी, दिमाग़ ख़राब हो गया। फ़ौज से छुटकारा मिल गया। लौटने पर उसने जानकी खोज की, परन्तु पता नहीं लगा। वह मरने के लिये एक दूर गांव में चला आया। वहां उसकी भेंट डाक्टर मीरा से हो गई जो नये उपायों द्वारा रोगियों का इलाज किया करती थी। उस पीतल के खिलौने को वह सदा साथ रखता था, परन्तु दिमाग़ ख़राब हो जाने से उसको यह स्मरण नहीं था कि उस खिलौने का उसके जीवन से सम्बन्ध क्या है उसके मन में इतनी सी ही बात भरी हुई थी कि हृदय की किसी अज्ञात और अज्ञेय जलन का वह खिलौना पोषण करता रहता है जिस जलन से उसको एक तरह का विनोद मिलता था। डाक्टर मीरा ने उसको देखा और असली कारण जानने के उपाय किये। उस गांव में बीमारी पड़ी। भजन पूजन द्वारा बीमारी को हटाने का प्रयत्न किया गया। कुछ नहीं हुआ। गाँव का सयाना भोलाराम अपने ग़लत विश्वासों के कारण जनता को बहकाता फुसलाता रहा। मैजिस्ट्रेट ने खेल और मेले बन्द कर दिये। सयाने को ठेस लगी और वह पागल होगया। एक देहातिन, लकूटी, को (*सरूपा की ओर उंगली से संकेत करके*) जो बहुत चिड़चिड़े स्वभाव की पहले ही से थी, बहुत बुरा लगा और वह डाक्टर, मीरा तथा प्रोफेसर सुजान के सम्बन्ध में निन्दा वाले अपवाद फैलाने लगी। परन्तु मीरा को न तो बुरा लगा और न वह घबराई। उसने अपने इलाज से भोलानाथ सयाने, जानकी और लकूटी को अच्छा किया। फिर उसने एक सेवादल

बनाया। *(कागज़ को एक हाथ में लेकर जेब पर हाथ डालते हुये)* यह लिखना भूल गया कि सेवादल किस उद्देश्य से बनाया गया था। *(जेब में कलम को कहीं न पाकर)* कलम तो कहीं खो गया! *(सोचकर और फिर हँसकर)* मेरे अन्तर्मन ने उस कलम को लेने से रोका था, नन्दिनी को दे देने के लिये प्रेरणा हुई, फिर शिष्टाचारवश मैंने उसको रख लिया। उसको तो खोना ही था। नामालूम कहाँ गिर गया। सेवादल लोगों में समझदारी, एक दूसरे को समझते बूझते रहने की वृत्ति, उत्पन्न करने और परिश्रम का लगातार अभ्यास करने के लिये बनाया गया है। अच्छा, अब अभिनय शुरू करो।

(नन्दिनी जो जानकी है मेज़ के पास जाती है और खिलोने को हाथ में ले लेती है)

नन्दिनी—मैं इस खिलौने को अब अपने पास नहीं रखूँगी। सुजान को लौटा दूँगी।

(नीरा—डाक्टर मीरा—मेज़ के पास जाती है)

नीरा—तुम आज इतनी दुखी क्यों हो जानकी? ससुराल जाने के समय ऐसा चेहरा!

नन्दिनी—*(चेहरा बिगाड़कर)* कौन कहता है कि मैं दुखी हूं? *(मुलायम पड़कर)* पर मायका छोड़ने पर कौन दुखी नहीं होता? एक कृपा करोगी मेरे ऊपर? इस खिलौने को चाहती थी कि खोजाता। सोचा कहीं फेक दूँ, पर ऐसा न कर सकी। तुम इसको सुजान के पास भेज दोगी?

नीरा—भेज दूँगी। तुम इसको भूल जाना, बिलकुल भूल जाना इसके सम्बन्ध की बातों को भी। समझ लेना खोगया या कहीं फेक दिया। *(खिलौने को ले लेती है)*

नन्दिनी—अब मैं यहाँ से दूर जारही हूं। शायद ही कभी लौटूँ।

नीरा—मैं जानती हूं इसका कारण।

(वे दोनों बैठ जाती हैं। नन्दिनी खिलौने को केवल को दे देती है। वह उसको जेब में रख लेता है, केवल ज़रा आगे आता है)

केवल—लड़कों को पढ़ाते पढ़ाते थक गया। अब मूर्खों को ज़्यादा अक़्ल नहीं देना चाहता। फ़ौज में भर्ती होकर वीरतापूर्वक मरूँगा। वह खिलौना कहाँ गया? *(सोचता है)* हां, मनमें समा गया है। उसको लड़ाई में ख़तम करूँगा। *(पैर पटककर चलता है)* और अपने को भी समाप्त करूँगा। *(बैठ जाता है)*

(भवन और कुछ लड़के लड़कियाँ गाते हुये आगे आते हैं। भवन सिर हिला हिला कर हुँकारें भरता है जैसे कोई देवता सिर आया हो)

❀ गीत ❀

गई रात आया प्रभात।
हुआ झङ्कृत भू का कन कन,
बोल रहा है खननन झननन,
अब न होयेंगे कभी दास।
गई रात आया प्रभात।

एक लड़का भवन के पास आकर—महाराज, मैंने दो साल पहले जंगल साफ़ किया। पारसाल घटोरिया बाबा की दया से खूब अनाज पाया। इस साल फ़सल कैसी होगी?

भवन—पूजा चढ़ाओ, पूजा चढ़ाओ।

एक लड़का—मेरी भैंसें खो गई हैं कहाँ मिलेंगी?

भवन—पूजा चढ़ाओ, पूरब दिशा में मिलेंगी।

(नन्दिनी निकट आती है। चेहरा बिगड़ा हुआ है)

नन्दिनी—महाराज मेरा कुछ खो गया है, कहां मिलेगा ? कैसे मिलेगा ?

सरूपा—(*चिढ़ चिढ़ाकर*) हट यहां से ! आई कहीं की !! कहती है कुछ खो गया है !!! यह भी नहीं जानती क्या !!!! चल हट !!!!! वैसे ही देवता को झकाने केलिये आगई यहां। (*वह सोचने लगती है*)

सलिल—अभी सोचने की घड़ी नहीं आई है। चेहरे को वैसे ही बिगाड़े रहो।

(*नीरा और केवल पास आते हैं*)

केवल—यह क्या तमाशा है ! गाँव में बीमारी फैल रही है और यह हूं हूं कर रहा है !!

वही लड़का—यह बतला देंगे कि मेरे खेत में इस साल कैसा अन्न होगा। जंगल साफ़ किया तो घटोरिया की दया से बहुत अन्न पैदा हुआ था।

केवल—जंगल साफ़ करने से पहले अकेला घटोरिया जंगल का मालिक था, फिर तुम उसकी सांझ हो गये !! इस साल क्या घटोरिया ने सांझ छोड़ दी ?

(*भवन उसके प्रति आंखें तरेरता है*)

नीरा—यह महत्वाकांक्षा वाला देहाती है।

केवल—दूसरों के अधिकारों को बटोर समेट कर अपनी थैली में भरते रहना यही तो होती है महत्वाकांक्षा।

नीरा—(*दम्भ के साथ*) महत्वाकांक्षा अंग्रेज़ी शब्द एम्बीशन का हिन्दी अनुवाद है जो लेटिन शब्द एम्बीशियो से निकला है। तुम लोग जानते हो उसका मतलब ? नहीं जानते। उसका मतलब है वोटों के इकट्ठे करने के लिये दौड़ धूप करते रहना।

(वे सब चकित होकर इन दोनों की ओर देखते हैं। भवन सहम जाता है)

केवल—यह सबको ठगने के लिये यहाँ बैठा है।

नीरा—*(नन्दिनी की ओर देखकर)* यह अभी कुछ कह रही थी—इसका कुछ खो गया है। क्या खो गया है जी ?

(लड़के लड़कियाँ शोर गुल करते हैं)

सरूपा—*(चिढ़चिढ़ाकर)* इन्हें डस लेवे बाबा, ये चुप ही नहीं रह सकते !!!

केवल—*(मुँह बिगाड़कर)* बाबा ! बाबा क्या ?

नन्दिनी—यहाँ बाबा साँप को कहते हैं। साँप शब्द को मुँह से नहीं निकाल सकती, स्वयं तो डरती है इसलिये कम भयानक शब्द बाबा द्वारा दूसरों के बच्चों को डसवाने के लिये शाप दे रही है, इस के बाल बच्चे न होंगे।

(सरूपा केवल की ओर देखकर यकायक कह जाती हैं—'हाय राम !' सलिल निषेध करता है)

(केवल नन्दिनी की ओर देखकर चौंकता हुआ पीछे को उचटता है और भौंचक्का है। नन्दिनी घबराकर सिर पर हाथ रख लेती है)

नन्दिनी—यह कौन है ? यह कौन है ?

(रामटहल पास आता है)

रामटहल—ओह ! बीमारी के ज़माने में तुम लोगों ने यहां इतना जमाव कर रखा है ! हटो !! (भवन से) तुम इस मेले की जड़ में हो !!! मैंने हुकुम दिया था कि मेले न किये जावें। तुम लोगों ने क़ानून तोड़ा—

सलिल—*(प्रौम्टर की आवाज़ को सुनकर)* अजीब मूर्ख हो ! इस तरह प्रौम्टिंग किया जाता है ! *(रामटहल से)* पार्ट को और भी अच्छी तरह याद करना जी।

(वह स्वीकृति का सिर हिलाता है)

रामटहल—*(भवन से)* तुम्हारे ऊपर मुक़द्दमा चलाया जावेगा, तुमको जेल भेजा जायगा। *(नीरा और केवल से)* आप लोगों ने ठीक शिकायत की थी।

(वे सब अलग हट जाते हैं। मेज़ के पास नीरा जाती है और उसके पीछे पीछे नन्दिनी)

नन्दिनी—डाक्टर साहब, मेरे ब्याह को हुये बीस बाईस साल हो गये। मेरे दिमाग़ में बहुत गड़बड़ रहती है। इलाज कर दीजिये।

नीरा—तुम उस दिन उस सयाने से कह रहीं थीं कि तुम्हारा कुछ खो गया है। याद करो वह क्या था और कैसे खो गया। जैसे ही यह याद आया कि तुम स्वस्थ हो जाओगी।

नन्दिनी—*(सिर को टटोलकर)* एक खिलौना था जो खो गया और कुछ याद नहीं आता।

नीरा—इस तरह के खोये हुये खिलौने चाहे वे प्यारे हों चाहे कुप्यारे मन के भीतर की तह में जाकर बैठ जाते हैं। लोग उनके स्मरण को दबाकर भूल जाते हैं और बीमार पड़ने लगते है। जहाँ खिलौने को दबी हुई स्मृति में से निकाला कि बीमारी गई। खिलौने को खोज लिया कि स्वस्थता आई।

नन्दिनी—आपके साथ जो उस दिन सयाने के पास दिखलाई पड़े थे, वह कौन हैं ?

नीरा—याद करो। *(केवल पास आता है)* यहीं हैं वह !

केवल—(*जेब से खिलौने को निकालकर*) यह है तुम्हारा खिलौना। मैं इसको लिये फिरा और बहुत परेशान रहा। मैं इसको लौटाकर अपने को हलका करूँगा।

(*नन्दिनी कुछ क्षण सोचती रहती है। नीरा भी*)

नन्दिनी—याद आ गया, सब याद आ गया। मैंने अपनी स्मृति में से खोज लिया, परन्तु अब मैं खिलौने को नहीं लूँगी, मैं भारतीय नारी हूं!

नीरा—(*सोच विचार में से ऊपर उतराकर*) मैं भी भूल गई थी। अब मुझको भी याद आ गया। और यह भी याद आ गया कि तुम कौन हो। इन इतने वर्षों में तुम्हारा चेहरा बिलकुल बदल गया है—(*उसको देखती है*)

केवल—इसको मैं भी नहीं रखूँगा। मैंने भी अपनी स्मृति के भीतरी अन्तस्तल में गये हुये खिलौने को खोज लिया है। तुम लो डाक्टर मीरा इसको।

नीरा—मैं इसका क्या करूँगी? (*सोचकर*) अच्छा इसको सामने रखूँगी। यह दबाई हुई स्मृतियों को बाहर लाने में सहायता दिया करेगा। मैं भी आगे भूला बिसरा नहीं करूँगी। (*खिलौने को ले लेती है*)

सरूपा—(*झटका सा खाती हुई*) ऐं!

सलिल—क्यों? क्या बात है?

सरूपा—कुछ नहीं—हाँ—ठीक है—कुछ नहीं। मैं बिलकुल स्वस्थ हूं।

सलिल—(*हँसकर*) यह तुम्हारा पार्ट नहीं है। (*वे सब बैठ जाते हैं*)

(*सरूपा प्रसन्नता को दबाये हुये मुँह बिगाड़े मेज़ के पास आती है*)

सरूपा—डाक्टरनी साहब, ओ डाक्टरनी !

(नीरा मेज़ के पास आजाती है)

नीरा—तुम्हारा इलाज भी हो जायगा। सोचा तुमने कितने स्त्री पुरुषों का मन ही मन बुरा चाहा; दूसरों की बातों के समझने की कभी कोशिश नहीं की; आगे सब की बातों, घातों, कठिनाइयों और जीवन के पहलुओं के समझने की कोशिश किया करो। करोगी न ?

(भवन भड़भड़ाता हुआ आता है)

भवन—मुझको देवता ने खा लिया ! निगल लिया !! ओफ़ !!! टुकड़े टुकड़े कर दिया !!!!

नीरा—मेलों-तमाशों की खुलासी होगई है। तुम्हारे ऊपर मुक़द्दमा नहीं चलेगा। *(मुस्कराती है)*

भवन—*(माथा टटोल कर धीरे धीरे)* अब तो देवता और अधिक नहीं सतायगा। अब तो मेरा सिर ठीक होने लगा है !

(चला जाता है)

सरूपा—मैं सोचूँगी। गुनूँगी।

(बैठ जाती है)

(एक लड़का मेज़ के पास आता है)

लड़का—समाचारपत्र वाले हमारे गाँव की बहुत बुराई करते हैं। कहते हैं आधा गाँव बेवकूफ़ों से भरा हुआ है।

सरूपा—तुम छपवा दो कि बाक़ी आधे गाँव में बुद्धिमान ही बुद्धिमान भरे हैं।

(लड़का मुस्कराकर बैठ जाता है)

(नीरा ज़रा सा घूमकर उन सबके सामने होती है। वे सब खड़े हो जाते हैं)

नीरा—मैं अपने इलाज की रुपये पैसे में फ़ीस नहीं चाहती। चाहती हूं कि सब लोग एक दूसरे को, बुरे से बुरे को, समझते रहने की चेष्टा करें।

सब—करेंगे।

नीरा—सब लोग मन लगाकर काम करो और मन लगाकर खेलो।

सब—करेंगे।

नीरा—खेल-तमाशे करो, गाओ-बजाओ नाचो। परन्तु सबसे अच्छा है नाटकों का खेलना।

सब—करेंगे।

नीरा—नाटक स्वयं लिखो, जानकारों से सुधरवालो या लिखवाओ या लिखे लिखाये खेलो, कोई बाधा नहीं, परन्तु नाटक के बहाने किसी की निन्दा मत करो।

सब—ठीक है।

(नीरा बैठ जाती है)

सलिल—तुम लोगों के अभिनय में एक कसर है, जिसका अभिनय करते हो उस पात्र में अपने को सचाई के साथ नहीं बिठलाते। बिठलाना चाहिये, और उसपर भी अपने निजत्व को भूलना नहीं चाहिये। श्रीमती सरूपा अपना पार्ट भूल गईं और अपने निजत्व को ऊपर ले दौड़ीं!

सरूपा—बिलकुल स्वेस्थ हो गई हूं; मुँह से निकल गया!

केवल—मेरा खाब्त और सिड़ीपन भी अच्छा होने वाला है!!

(सरूपा उसको स्नेह की दृष्टि से देखती है)

भवन—एक सवाल है—लोग पसन्द भी करेंगे इस तरह के नाटकों को?

सलिल—करेंगे। जनता को जो लोग पहिचानते नहीं हैं वे ही उसकी बुद्धि पर सन्देह करते हैं। और फिर, समाचारपत्र वाले ने छापा कि आधा गांव मूर्ख है; तो, आधा गाँव तो फिर भी अक़्ल वाला है ही! (*सब हँसते हैं*) अब वह अन्त वाला गीत रह गया है जिसको नृत्य के साथ गाया जायगा—जो इस नये सेवादल के अभिप्राय को प्रकट करता है।

गीत (*नृत्य के साथ*)

मन का चेत न खोने दे तू,
जग का हित मत सोने दे तू,
तब हरियाली छायेगी,
फूलों से लद जायेगी,
लदी रहेगी, फली रहेगी, जगी रहेगी।

[यवनिका]

समाप्त